हज़रत आयशा

की तारीख़ी हैसियत

-फ़रोग काज़मी



हज़रत आयशा की तारीख़ी हैसियत

मोअल्लिफ
फरोग़ काज़मी

तर्जुमा
बाबर नदीम इलाहाबादी

: नाशिर :
इदारऐ तहज़ीबो अदब मैदान इलच खाँ
लखनऊ - 226003

नाम किताब	:	हज़रत आयशा की तारीख़ी हैसियत
नाम मोअल्लिफ़	:	फरोग़ काज़मीं
ताअदादे इशाअत	:	एक हज़ार
सने इशाअत	:	मई 1997
तर्जुमा	:	बाबर नदीम इलाहाबादी
कम्प्यूटर कम्पोज़िंग एण्ड टाइपिगं	:	हसन क्रिएशन्स, शीशमहल हुसैनाबाद लखनऊ ☎:253565
हदिया	:	45/=

: नाशिर :

इदारए तहज़ीबो अदब 392/60/8, ख़ुमैनी लेन,
मैदान इलच खां
लखनऊ – 226003

: मिलने का पता :

अब्बास बुक एजेन्सी
रूस्तम नगर, दरगाह हज़रत अब्बास,
लखनऊ –226003 ✆ : 260756

इन्तिसाब

उम्मुल मोमिनीन
मारिया ख़बतिया
के नाम जिनका
मासूम फ़रज़न्द
इब्राहीम उम्मुल
मोमिनीन आयशा
के रश्क व
हसद का
शिकार हो
गया।

—फरोग़ काज़मी

फ़ेहरिस्त–ए–मज़ामीन

: हर्फ़े आग़ाज़ :

हुज्जतुल इस्लाम मौलाना सैयद ज़ाहिद अहमद साहब क़िबला रिज़वी
सेक्रेट्री :– अमीरूल मोमिनीन ट्रस्ट : लखनऊ

उम्मुल मोमिनीन हज़रत आयशा की तारीख़ी शख़सियत बड़ी ही अजीब नज़र आती है। मुसलमानों की मां का किरदार इस्लामी मामलात में बड़ा ही मशकूक लगता है क्यों कि उल्माए अहले सुन्नत ने अपनी तारीख़ी और सीरत की किताबों में जो वाक़ियात रक़म किए हैं वह खुद मौसूफ़ा के तलव्वुन मिज़ाज होने का एलान कर रहे हैं।

हज़रत आयशा की अज़्दवाजी ज़िन्दगी के हालात भी मुख़तलिफ़ नज़र आते हैं। मिज़ाज का "चिड़चिड़ापन" "हासिदाना रवय्या" और अक़वालों अफ़आल का इख़तिलाफ़ बड़ी शद्दोमद से दिखाई देता है।

अक़वाल का इख़तिलाफ़ हज़रत उस्मान के क़त्ल के वाक़िए में यूं नज़र आता है कि जो मोहतरमा क़त्ल से पहले कह रहीं थीं कि इस "नअस्ल" को क़त्ल कर दो ये काफ़िर हो गया है। क़त्ल के बाद अपना अन्दाज़ यह कहकर बदल देती हैं कि उस्मान मज़लूम क़त्ल किए गये।

मोहम्मद बिन अबीबक्र को जब मुआविया की साज़िश से मिस्र में क़त्ल कर दिया गया और उनकी लाश को ख़च्चर की खाल में लपेट कर नज़्रे आतिश कर दिया गया तो इन बीबी ने मुआविया के लिए बद्दुआ शुरू कर दी। मगर जब इमाम हसन (अ) को मुआविया के भेजे गए ज़हर से शहीद किया गया तो इन्ही ख़ातून ने बनीउमय्या की मदद से इमामे हसन (अ) के जनाज़े को रसूल (स) के रौज़े में दफ़न न होने दिया और मरवान ने जनाज़े पर तीर बरसाये।

मुसलमानों की तलव्वुन मिज़ाज माँ जब अपने शौहरे नामदार हज़रत पैग़म्बर (स) से नाराज़ होती तो बरजस्ता कहतीं कि "क्या आप यह गुमान करते हैं कि मैं अल्लाह का रसूल हूं? इस क़ौल के बाद सीरत की किताबों में रसूले मक़बूल से मोहतरमा की मोहब्बत का बयान भी कुछ अजब अन्दाज़ का मिलता है।

हज़रत फ़ात्मा (स) के सिलसिले में मोहब्बत भरे अल्फाज़ भी तारीख़ में मिलते हैं। मगर अमलन फ़ात्मा (स) को अज़ीयत देना भी मिलता है। हज़रत ख़दीजा (स) के ज़िक्र पर चरागपा होना और हज़रत अली (अ) से अमलन बरसरे पैकार रहना भी किताबों में ख़ूब नज़र आता है।

हज़रत अली (अ) से आम मुसलमानों की बैअत के बाद इन ख़ातून का मक्कए मोअज़्ज़मा से तल्हा और ज़ुबैर के साथ लशकर जमा करके निकलना और फ़िर यह कहना कि मैं मुसलमानों के दो फ़िरक़ों में सुलह कराने के लिए निकली थी, यह अमल का तज़ाद नहीं तो और क्या है? अगर सुलह कराना थी तो मक्के की मुक़द्दस सरज़मीन सबसे बेहतर थी, वहीं मुसलमानों को जमा करके सुलह करा देतीं। या फ़िर मदीने जाकर क़बरे रसूल (स) के नज़दीक सबको इकट्ठा करके सुलह का हुक्म देतीं।

मिज़ाज के चिड़चिड़ेपन का यह आलम था कि जंगे जमल में जंग के ख़ात्मे के बाद जब हौदज के क़रीब जाकर अम्मारे यासिर ने अम्मा कहकर सलाम किया तो अम्मार से कहा कि मैं तुम्हारी मां नहीं हूं, जबकि अम्मार का क़ुसूर यह था कि वह अली (अ) के लशकर में शरीक थे, और अम्मां, अम्मार से इसलिए ख़फ़ा थीं कि उनकी वजह से अम्मां के लशकर को लड़ने में मुश्किल पेश आ रही थी कि कहीं अम्मार क़त्ल ना हो जाएं क्योंकि अम्मार के लिए रसूल (स) ने फ़रमाया था कि ऐ अम्मार, तुम्हे बाग़ी गिरोह क़त्ल करेगा।

यह वाक़ियात और बहुत से वाक़ियात तारीख़ की मुख़तलिफ़ किताबों में भरे पड़े हैं मगर उर्दू ज़बान में न होने के बराबर थे। मुहक्क़िक़े बसीर जनाब फ़रोग़ काज़मी ने उर्दू ज़बान में "उम्मुल मोमिनीन हज़रत आयशा की तारीख़ी हैसियत" लिखकर ये कमी पूरी कर दी। मौसूफ़ ने यह किताब लफ़्फाज़ी पर मबनी दास्तान के तौर पर नहीं लिखी बल्कि ठोस तारीख़ी हवालों और मज़बूत दलीलों के साथ बड़ी मेहनत से वाक़िआत को इकट्ठा किया है जिसकी वजह से किताब का मुतालिआ करने वाला कोई शख़्स भी यह शिकवा नहीं कर सकता

कि किताब में किसी की दिलआज़ारी की गयी है।

फ़ारोग़ साहब की शायरी में जानी पहचानी शख़्सियत तो बहुत पहले से थी मगर एक मुअल्लिफ़ की हैसियत से किताब "तफ़सीरे कर्बला" लिखने के बाद पहचाने गए। और किताब "अलमुर्तज़ा" के जवाब में "अलखुलफ़ा" की दो जिल्दें तालीफ़ कीं जिससे उनकी यह सलाहियत और भी आशकार हुई। "अलखुलफ़ा" ने दुशमनाने अहलेबैत (अ) को यह यक़ीन दिलाया कि शिओं में अभी मज़बूत क़लम के ऐसे बासलाहियत अफ़राद बाक़ी हैं।

फ़रोग़ साहब की चौथी किताब "हज़रत आयशा की तारीख़ी हैसियत" के नाम से मन्ज़रे आम पर आ रही है। जिसके पढ़ने के बाद ये अन्दाज़ा होगा कि इस किताब की तालीफ़ में मौसूफ़ को कितनी मुश्किलात का सामना करना पड़ा। क्योंकि यह किताब ऐसी जात के सिलसिले में लिखी गयी है जिन्हें ज़ौजियते रसूल (स) का शरफ़ भी हासिल है। लिहाज़ा इसका पास रखना भी इन्हीं मुश्किलात में से एक मुश्किल है। और फ़िर मुसलमानों की माँ हैं। इसका ख़्याल भी हर वक़्त रखना पड़ा। बहराल इस किताब में अम्मां के हालात रक़म करके फ़रोग़ साहब ने एक बहुत बड़ी ज़रूरत को पूरा कर दिया है।

यहां यह बात भी वाज़ह करना ज़रूरी है कि शायद कुछ लोग इस किताब के सिलसिले में यह कहें कि ऐसी किताब शाया करके "इत्तिहादे बैनुल मुसलिमीन" को नुक़सान पहुंचाया। यह ख़्याल उस वक़्त सही नज़र आता जब फ़रोग़ साहब ने मोहतरमा के सिलसिले में अपने ख़्यालात रक़म किए होते। मौसूफ़ ने तो मुसलमानों की मोतबर किताबों के हवाले से वाक़ेयात रक़म किए हैं। लिहाज़ा यह ख़्याल उन मोतबर किताबों के मुसन्नेफ़ीन को करना चाहिए था जिसमें ख़ुद इमाम बुख़ारी भी शामिल हैं। तारीख़ी हक़ाइक़ पेश करने से इत्तिहाद को नुक़सान नहीं पहुंचता बल्कि गलतफ़हमिया दूर होती हैं।

ये किताब बहुत पसन्द की जाएगी और इसका हर घर में होना बहुत ज़रूरी है ताकि हक़ाइक़ से वाक़फ़ियत हो सके।

किताब की तबाअत का काम बड़ा दुशवार गुज़ार मरहला होता है और क़दम क़दम पर ज़रेकसीर की ज़रूरत होती है और मुश्किलात का सामना, इस मरहले पर मौलाना अली अब्बास साहब तबातबाई के हौसले की दाद देना भी ज़रूरी है। जिन्होंने क़ौम के लिए बहुत नायाब किताबें शाए करके कारेनुमायां अन्जाम दिया है। अब अरबाबे क़ौम का फ़र्ज़ है कि वह मुअल्लिफ़ीन और नाशिरीन की हौसला अफ़ज़ाई फ़रमाएं और इस अज़ीम कारे ख़ैर में हिस्सा लेकर सावाबे अज़ीम हासिल करें। अफ़रादे क़ौम किताबें ख़रीदें, ख़ुद अपने लिए और दोस्तों को तोहफ़ा देने के लिए भी।

आख़िर में मेरी दुआ है कि ख़ुदा वन्देआलम फ़रोग़ काज़मी साहब के ज़ोरे क़लम में और इज़ाफ़ा करे और उनकी पांचवीं किताब "तफ़सीरे इस्लाम" बहुत जल्द तहरीर की मन्ज़िलों से गुज़रकर मन्ज़रे आम पर आ जाए। जिससे एक अहम ज़रूरत भी पूरी हो जाए।

: वस्सलाम :

ख़ाके पाए अहलेबैत (अ)

ज़ाहिद अहमद रिज़वी

सेक्रेट्री इदारए अमीरूल मोमिनीन (अ)

लखनऊ।

अर्ज़े मुअल्लिफ़

जो लोग पढ़ते रहते हैं हालात की किताब
उनको ये चाहिये कि किताबें लिखा करें

(डा० हुज़ूर नवाब)

बज़ाहिर यह एक सादा सा शेर है, लेकिन इसमें जो पैग़ाम है और पैग़ाम में जो वुसअतें है वो लामहदूद हैं । हालात इनफ़िरादी हों, इजतिमाई हो या तारीख़ी......बहरहाल हालात हैं।

इनफ़िरादी हालात अगर तक़दीर की गर्दिश से वाबस्ता हैं तो दोस्तों और अज़ीजों को मुतास्सिर करते हैं। इजतिमाई हालात अगर नासाज़गार हैं तो वह मुआशरे पर असर अन्दाज़ होते हैं, अलबत्ता तारीख़ी हालात ऐसे होते हैं जो मालूमात में इज़ाफ़े का सबब बनते हैं। मेरी यह किताब जो "हज़रत आयशा की तरीख़ी हैसियत" के नाम से आपके सामने आ रही है, उन मोतबर, सच्चे और मुसतनद तारीख़ी हालात का निचोड़ हैं जिन्हे सवादे आज़म के उल्मा ने अपनी किताबों में तहरीर किया है।

किताब की तालीफ़ के दौरान मेरा ज़िहन इस ख़्याल से ख़ाली नहीं रहा कि उम्मूलमोमिनीन कि शख़सियत आलमे इस्लाम में ऐसी चिंगारी है जो ज़रा सी लग़ज़िश में भड़कता हुआ शोला बन सकती है क्योंकि उनकी ख़ताकारियों को भी इजतिहाद से ताबीर किया जाता है इसलिए मैंने अपने क़लम को क़ाबू में रखते हुए बड़ी एहतियात से काम लिया है और इस बात की पूरी कोशिश की है कि उनके सिलसिले में वही हालात व वाक़यात बरादिराने अहले सुन्नत की किताबों से अख्ज़ किये जायं जो तरीख़ी एतेबार से मुसतहकम, मुसल्लम और ठोस हों।

ये बात भी वाज़ह कर दूं कि मेरी यह किताब सिर्फ़ तारीख़ी हक़ाइक़ का मुख़्तसर सा मजमुआ है। इसकी तालीफ़ का मक़सद मिल्लते इस्लामिया या उसके किसी फिरक़े की दिलआज़ारी हर्गिज़ नहीं है।

मैं अपने कारेईन का शुक्रगुजार हूं कि उन्होंने मेरी तालीफ़ "अलखुलफ़ा हिस्सा अव्वल", तफ़सीरे कर्बला और "अलखुलफ़ा हिस्सा दोम की कामयाबी पर मुझें खुतूत लिखकर मेरी हौसला अफज़ाई की।

मैं, क़िबला हुज्जतुल इस्लाम मौलाना सैयद ज़ाहिद अहमद साहब का इन्तिहाई मम्नूनों मश्कूर हूं कि मौसूफ़ ने मेरी दरख़्वास्त पर अपनी बेपायां मसरूफ़ियत के बावजूद अपनी क़ीमती राय और गेरांक़द्र मज़मून को इस किताब में बतौरे "पेश लफ़्ज़" शामिल फ़र्मा कर इसको ज़ीनत बख़्शी है और क़दम–क़दम पर मेरे मोइनों मददगार रहे, और मैं मुतशक्किर हूं आली जनाब आई० एच० रिज़वी साहब का जिन्होंने इस किताब की सेहत और अदमेसेहत पर ख़ुसूसी तवज्जो फ़रमाई।

खुदावन्दे आलम मेरी इस हक़ीर कोशिश को शरफ़े मक़बूलियत अता फ़रमाए।

ख़ाके पाए अहलेबैत (अ)
फ़रोग़ काज़मी
7, रबीउल अव्वल 1416 हिजरी (1995 ई०)
लखनऊ।

हज़रत आयशा

अहादीस, रवायत और तारीख़ के मजाज़ी परदों में लिपटी हुई उम्मुल मोमिनीन हज़रत आयशा की तहदार और पुरअसरार शख़्सियत आलमें इस्लाम में तअर्रूफ़ की मोहताज नहीं। हर शख़्स जानता है कि आप ख़लीफ़ए अव्वल (हज़रत अबूबक्र) की तलव्वुन मिज़ाज बेटी और पैग़म्बरे इस्लाम हज़रत मोहम्मदे मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहे व आलेही वसल्लम की गुस्ताख़ और नाफ़रमान बीवी थीं। आपकी निस्वानी सरिश्त में रश्क, हसद, जलन, नफ़रत, अदावत, ख़ुसूमत, शरारत, ग़ीबत, ऐबजुई, चुग़लख़ोरी, हठधर्मी, ख़ुदपरस्ती, कीनापरवरी और फ़ित्ना परदाज़ी का उन्सुर बदर्जए अतम कारफ़रमा था।

रसूल (स) की ज़ौजियत और ख़ुल्के अज़ीम की सोहबत से सरफ़राज़ होने के बावजूद आपका दिल इरफ़ाने नबूवत से ख़ाली और ना आशना था। आपकी निगाहों में नबी और नबूवत की क़द्रो मन्ज़िलत यह थी कि जब आप पैग़म्बर से किसी बात पर नाराज़ हो जातीं, और आपका पारा चढ़ जाता तो पैग़म्बरे अकरम (स) को नबी कहना छोड़ देतीं। बल्कि "इब्राहीम का बाप" कहकर मुख़ातिब किया करतीं थीं।[1] जसारतों और गुस्ताख़ियों का यह हाल था कि एक बार आपने झगड़े के दौरान पैग़म्बर (स) से यह भी कह दिया कि :–

"आप ये गुमान क्यों करते हैं कि मैं अल्लाह का नबी हूं?"[2]

(मआज़ अल्लाह)

नबी को नबी न समझने वाली–या–नबी की नुबूव्वत में शक करने वाली शख़्सियत क्या इस्लाम की नज़र में मुसलमान है? इसका फ़ैसला मोहतरम कारेईन ख़ुद फ़रमा लें, क्योंकि बात साफ़ और वाज़ेह है।

बहरहाल–हज़रत आयशा के बारे में तारीख़ हमें बताती है कि

1. बुख़ारी :– ज. 6 स. 158
2. अहयाउल उलूम ग़ेज़ाली :– ज. 2 स. 29

अज़वाज की सफ़ में क़दम–क़दम पर पैग़म्बर (स) के लिए कर्ब अज़ीयत और कशमकश की दीवारें खड़ी करना आपका मशग़ला और मामूल था। जिसमें हज़रत हफ़सा बिनते उमर आपकी मुईनो मददगार और साहिमों शरीक थीं। चुनाचें एक बार इन दोनों फ़रमाबरदार बीवियों ने आपस में साज़बाज़ करके आं हज़रत (स) के ख़िलाफ़ ऐसा बेहूदा मनसूबा तैयार किया जिससे तंग व परेशान होकर सरकारे दो आलम(स) ने अल्लाह के हलाल अम्र को अपने ऊंपर हराम कर लिया और यह कर्बनाक, सिलसिला एक मुअय्यना मुद्दत तक क़ायम रहा जैसा कि बुख़ारी में मरक़ूम है।

"रसूलल्लाह ने एक माह तक अज़वाज से कोई रब्तो ताल्लुक़ नहीं रखा और अलाहिदा चाटाई पर सोते रहे।[1]

यहां तक कि ख़ुदा को अपने हबीब (स) से पूछना पड़ा :–

"ऐ नबी! तुमने अपने ऊपर उस चीज़ का क्यों हराम कर लिया है जिसे तुम्हारे परवदिगार ने तुम पर जाएज़ रखा है। क्या तुम अपनी बीवियों की मर्ज़ी चाहते हो? (तहरीम–1)

इस वाक़िये से सहाबा में ये ख़बर मशहूर हो गयी कि हुज़ूर (स) ने अपनी अज़वाज का तलाक़ दे दी है।[2] हालांकि यह ख़बर ग़लत और बेबुनियाद थी सिर्फ़ आयशा और हफ़सा के बार में अल्लाह का यह इरशाद था :–

"ऐ रसूल! उन दोनों में से जिसे चाहें आप (अपनी ज़ौजियत से) अलाहिदा कर दें और जिसे चाहे अपनी पनाह में रखें।"(अहज़ाब – 50)

मगर उम्मुल मोमिनीन को मोमिनीन के परवर दिगार की यह बात सख़्त नागवार गुज़री। चुनांचे आप तड़प कर उठीं, पैग़म्बर की ख़िदमत में हाज़िर हुई और गुस्ताख़ आमेज़ लहजें में फ़रमाया :–

मैंने अल्लाह को आप ही की नफ़सानी ख़्वाहिशात के बारे में

---

1. बुख़ारी :– ज. 3 स. 105
2. मआलेमुत तनज़ील स. 909 तफ़सीरे दर मन्सूर मिस्र :– ज. 5 स. 194-95
2. शराअ इब्ने अबिल हदीद :– ज. 2 स. 159

ताजील (जल्दी) करते देखा है।[1]

आयशा की गुस्ताख़ी और बेअदबी पर कुदरत का अन्दाज़े गुफ़्तुगू बदला और आयत इन अल्फ़ाज़ में नाज़िल हुई :–

अगर तुम दोनों (आयशा, हफ़सा) मेरे रसूल (स) की मुख़ालिफ़त में एक दूसरे की एआनत करती भी रहो तो कुछ परवा नहीं ख़ुदा जिब्रील, मलाइक और सालेहुल मोमिनीन उसके मुईनो मददगार हैं।

(तहरीम–4)

और ये तम्बीह भी कर दी :–

तुम दोनों अपनी हरकतों से बाज़ आओ और तौबा करो क्यों कि तुम्हारे दिलों में कजी पैदा हो गयी है। (तहरीम)

फ़िर आख़िर में यह सख़्त वार्निंग भी दे दी :–

"अगर मेरा हबीब तुम्हे तलाक़ भी दे देगा तो मैं उसे तुमसे बेहतर बीवियां अता करूंगा जो ईमानदार, मुतीअ, इबादतगुज़ार और तौबा करने वालियां हो।" (तहरीम)

ख़लीफ़ए सानी उमर इब्ने ख़त्ताब का क़ौल है कि ये आयतें आयशा, हफ़सा के लिए नाज़िल हुई हैं।[2] और मेरा क़ौल है कि सूरए तहरीम आयशा, हफ़सा पर एताब बनकर नाज़िल हुआ है। नीज़ आखिरूज़्ज़िक्र आयत से यह सराहत भी होती है कि अरब के मुस्लिम मोआशरे में उस वक़्त आयशा, हफ़सा से बदरजहा बेहतर, हसीनो जमील और ख़ूबसूरत औरतें मौजूद थीं जो ईमादार, मुतीअ, फ़रमाबरदार, इबादतगुज़ार और तौबा करने वालियां भी थी।

जबकि अल्लाह की निगाह में आयशा, हफ़सा इन सिफ़ात से मुत्तसिफ़ नहीं थी।

सूरए तहरीम अक़ीदत मन्दाने आयशा के इस ख़्याल की भी तरदीद करता है जो इस ख़ुशफ़हमी में मुबतिला है कि वह हिसाब

---

1. बुख़ारी :– ज.6 स. 128
2. बुख़ारी :– ज. 6 स. 69-71

किताब के बग़ैर सीधी जन्नत में चली जाएगीं क्योंकि वो रसूल (स) की बीवी थीं।

इसी सूरे की दसवीं आयत में परवरदिगार ने नूह (अ) और लूत(अ) की बीवियों की मिसाल से यह सराहत फ़रमा दी कि आमाले सालेहा के बगैर महज़ ज़ौजियत का शरफ़ औरत को कोई फ़ैज़ नहीं पहुंचा सकता ख़्वाह उसका शौहर नबी या रसूल ही क्यों न हो। चुनाचें इरशाद हुआ :–

ये दोनों (नूह और लूत की बीवियां) हमारे (नेक) बन्दों के तसर्रूफ़ में थीं लेकिन इन्होंने अपने शौहरों से दग़ा की तो इनके शौहर (इताबे खुदा के सामने) इनके कुछ काम न आए। और इन दोनों को हुक्म हुआ कि जहन्नम में जाने वालों के साथ तुम भी दाख़िल हो जाओ।(तहरीम–10)

इस आयत से यह मसअला भी साफ़ हो जाता है कि नबी की बीवियां दग़ाबाज़ और फ़रेबकार भी हो सकती हैं। अलबत्ता वह औरतें जो मुतीअ, फ़रमाबरदार, मोमिना, इताअतगुज़ार और इबादतगुज़ार हैं या वह जो आमालए सालेहा की अमीन है। उनके लिए ख़ुदा वन्देआलम ने आसिया (फ़िरऔन की बीवी) की मिसाल के साथ उसका क़ौल भी नक़्ल किया है।[1] और दूसरी मिसाल मरियम बिन्ते इमरान की पेश करते हुए इरशाद फ़रमाया :–

"मरियम ने अपने नामूस को महफ़ूज़ रखा तो हमने उसमें अपनी रूह फूंक दी और उसने अपने परवरदिगार की बातों और उसकी किताबों की तसदीक़ की और वह फ़रमाबरदारों में थी।" (तहरीम–12)

सूरए तहरीम में....... अगर एक तरफ़ अल्लाह की जानिब से आयशा, हफ़सा पर एताब का तसलसुल है तो दूसरी तरफ़ मोमिना, सालिहा और फ़रमाबरदार औरतों की तसल्ली व तशफ़्फ़ी का सामान भी फ़राहम किया गया है। अगर एक तरफ़ क़समों के कफ़्फ़ारे तौबतुन नुसूह का तज़किरा है तो दूसरी तरफ़ कफ़्फ़ारे की तशबीह और जिहाद वग़ैरह का हुक्म भी है। लेकिन इन तमाम बातों के बावजूद ऐसा लगता

---

1. तहरीम :– आ. 11

है कि इस सूरे का पूरा पसमन्ज़र पैग़म्बरे इस्लाम की ख़ानगी और अज़्दवाज़ी ज़िन्दगी से वाबस्ता और मरबूत है।

ज़ाहिर है कि सरवरे काएनात सल्लल्लाहो अलैहे व आलेही वसल्लम की पहली शादी शहज़ादिए अरब हज़रत ख़दीजतुल कुबरा(स) से हुई और उनकी हयात में आपने काई दूसरा अक़्द नहीं फ़रमाया। पच्चीस साल के बाद....... जब आपकी उम्र पचास बरस की थी तो मौत के हाथों नें इस पुर अज़मतो बाविक़ार ख़ातून और वफ़ादारो फ़रमाबरदार बीवी को आपसे जुदा कर दिया। इस आलमनाक हादसे के बाद सिर्फ़ तेरह बरस और आप इस दुनिया में ज़िन्दा रहे। इसी तेरह बरस के अर्से में आपने यके बाद दीगरे पन्द्रह अज़वाज को अपने अयवाने ज़िन्दगी में दाख़िल किया। इन औरतों में कुछ कनीज़े कुछ मुतलका और बक़िया सारी औरतें बेवा थीं।

इन मुसलसल व मुतवातिर शादियों का मक़सद वह हरगिज़ नहीं था जा आमतौर पर किसी औरत के लिए किसी मर्द के दिल में होता है।

बल्कि हक़ीक़त यह है कि यह तमाम शादियां मसलिहते इलाही और बसीरते नब्वी का नतीजा थीं, क्यों कि आं हज़रत दीनी पेशवा और मज़हबी रहनुमा होने के अलावा एक उभरती हुई इस्लामी सलतनत के सरबराह व ताजदार भी थे। इसलिए इस्लाम के तबलीग़ी उमूर में आसानियों और सहूलियतों के पेशे नज़र आप अरब के मुख़तलिफ़ व बाअसर क़बीलों में अज़्दवाजी रिश्ते क़ायम करके उनकी काफ़िराना व मुश्रिकाना सरिश्त पर मुहरे हिदायत सब्त करना चाहते थे। दूसरे यह कि आप चूंकि इन्सानियत के अलमबरदार और हुक़ूके बशरी के मुहाफ़िज़ भी थे इसलिए मर्दो के हुक़ूक़ में इर्तिकाई जिद्दोजहद के साथ–साथ अपने ईसारो अमल के ज़रिए औरतों के हुक़ूक़ और निसावानी वक़ार को इतना सरबलन्द, मोहकम और पायदार कर देना चाहते थे कि आपके बाद आने वाला ज़माना औरतों को ज़लील, पस्त और कमतर समझने या उसके हुक़ूक़ पामाल करने की कोशिश न करे।

अगर आपको इलाही मसलेहतों के साथ–साथ मोहताज कनीजों,

लावारिस बेवाओं, और ग़रीबों नादार औरतों का ख़्याल या उनके हुकूक़ का पासो लिहाज़ न होता तो शहज़ादी ख़दीजा (स) के बाद आप हर्गिज़ दूसरा अक़्द न फ़रमाते। अपनी पुरआलाम और मशग़ूल तरीन ज़िन्दगी के आख़िरी तेरह साला दौर में आपने मुसलसल व पैदरपै शादियां करके औरत के लिए शरई व क़ानूनी हदबन्दी की। अज़्दवाजी रिश्ते के तक़द्दुस का एलान किया और आदलों मसावात का एक ऐसा निज़ाम दुनिया वालो के सामने पेश किया जिसके बाद क़यामत तक किसी क़ानून या किसी निज़ाम की ज़रूरत न महसूस हो। हुज़ूर (स) के फ़र्ज़े मनसबी का तक़ाज़ा भी यही था।

पैग़म्बरे इस्लाम (स) ने अपनी अज़वाज के लिए अलग–अलग हुजरे बनवा दिए थे और उनकी बारी के दिन भी मुक़र्रर फ़रमा दिए थे। ताकि हर एक के पास एक–एक रात बसर हो सके। और किसी की हक़तल्फ़ी न हो। लेकिन इन अज़वाज से आपको वह सुकून, वह इतमिनान, वह सुख, वह चैन, वह आराम, वह राहत, वह शादमानी और वह कामरानी न मिल सकी जो अपनी महरहूमा बीवी हज़रत ख़दीजा से मिली थी। यही वजह थी कि आप उठते बैठते और सोते जागते जनाबे ख़दीजा का ज़िक्र इस अन्दाज़ से करते कि आपकी आंखे नम हो जातीं।

खुल्के अज़ीम की ज़बाने मुबारक पर अपनी मरहूमा बीवी का तज़किरा इस बात की मुहकम दलील है कि उन्होंने अपने अज़ीम शौहर के दिल पर मकारमे अख़लाक़ व हुस्नो किरदार, सच्ची, पुरखुलूस और ग़ैरफ़ानी मोहब्बत ईसारो कुरबानी, अताअतों फ़रमाबरदारी और महबूबियत व इश्वहतराज़ी के जो नुकूश पच्चीस साल की ज़ौजियत व रिफ़ाक़त के दौरान मुरत्तबत किए वो मिटाए न मिट सके। और पन्द्रह बीवियों की "मजमूई ख़िदमतें" इन नुकूश के मुक़ाबले में एक नक़्श भी मुरत्तब न कर सकीं।

पैग़म्बरे इस्लाम (स) की ज़बान से ख़दीजा का ज़िक्र सुनकर दीगर अज़्वाज के दिलों पर क्या गुज़रती? तारीख़ चुप है, मगर आयशा व हफ़सा के बारे में तारीख़ का यह एलान है कि हज़रत ख़दीजा के

नाम से उन पर रश्को हसद की बिजलियां गिर पड़ती। जैसा कि बुख़ारी "किताबुन्निसा" में ख़ुद आयशा के बयान से ज़ाहिर है :–

"मैं रसूलल्लाह (स) की किसी बीवी से इतना नहीं जलती जितना ख़दीजा से, क्यों कि रसूलल्लाह उठते बैठते उनकी तारीफ़ किया करते थे।" और इसी बुख़ारी बाबे मनाक़िबे ख़दीजा में आयशा ही से ये रवायत भी है :–

"मैंने पैग़म्बर की अज़्वाज में किसी पर इतना रश्क नहीं किया जितना की ख़दीजा पर हालांकि मैंने ख़दीजा को देखा ही नहीं लेकिन पैग़म्बर हर वक़्त उनका तज़किरा करते और जब गोसफ़न्द ज़िबह करते तो गोश्त के हिस्से उनकी सहेलियों में तक़सीम करते।"[1]

बुख़ारी ही में हज़रत आयशा से ही यह रवायत भी है :–

"ख़दीजा की भांजी हाला☆ ने पैग़म्बर की ख़िदमत में बारयाबी की इजाज़त चाही। उनकी आवाज़ और लबो लहज़ा ख़दीजा से बेल्कुल मिलता था। सुनकर आप बेचैन हो गए। इस बेचैनी पर मुझे हद रश्क हुआ। मैंने कहा, आप कुरैश की बुढ़ियों में उस बुढ़िया को याद करते हैं? जिसकी बाछें सुर्ख़ थीं और जो मौत से हमकिनार हुई। ख़ुदा ने आपको इससे बेहतर बीवियां अता की हैं।"

काश बुख़ारी ज़िन्दा होते और मैं उनसे ये पूछता कि आपने "बाबे मनाक़िबे ख़दीजा" में उम्मुल मोमिनीन का यह क़ौल नक़्ल किया है कि मैंने ख़दीजा को नहीं देखा।" और रवायते बाला में आप ही आयशा का यह क़ौल भी नक़्ल फ़रमाते हैं कि "वह सुर्ख़ बाछों वाली थी".... आख़िर क्यों?

इन दोनो अक़वाल में कौन सा क़ौल सही है और कौन सा ग़लत अगर पहला सही है तो इसके मानी यह हैं कि दूसरा ग़लत? और अगर दूसरा सही है तो पहला ग़लत। इस ग़ल्ती और झूठ की ज़िम्मेदारी किसकी गर्दन पर है? आपकी या आयशा की।

---

1. बुख़ारी :– ज. 2 स. 210

☆ बाज़ मुअर्रख़ीन ने हाला को जनाबे ख़दीजा की बहना बताया है।

मसनद अहमद बिन हम्बल में भी लफ़्ज़ो की उलटफ़ेर से यह रवायत मरकूम हुई है और जहां इबारत तमाम हुई है वहां यह लफ़्ज़ें भी मज़कूर है :–

"ये सुनकर पैग़म्बर का चेहरा इस तरह मुतग़य्यर हो गया जिस तरह नुज़ूले वहई के वक़्त हो जाता था।"[1]

ये रवायात भी किताबो में मरकूम हैं कि आयशा की गुफ़्तगू सुनकर पैग़म्बर ने फ़रमाया "ख़ुदा ने मुझे हरगिज़ उनसे (ख़दीजा से) बेहतर बीवी अता नहीं की, वो उस वक़्त मुझ पर ईमान लायीं जब तमाम लोग मेरे मुनकिर थे। उस वक़्त उन्होने मेरी रिसालत की तसदीक़ की जब सब मुझे झुठला रहे थे। उस वक़्त उन्होंने मुझे मालोज़र से सहारा दिया जब सबने मुझे महरूम कर रखा था, और ख़ुदा ने मुझे उनके बत्न से औलाद अता की जब मैं किसी दूसरी बीवी की औलाद से महरूम था।"[2]

हज़रत ख़दीजा से आयशा के रश्को हसद पर मब्नी ये तमाम रवायतें ऐसी_किताबों से माख़ज़ हैं जो अक़ीदतमन्दाने आयशा के लिए हुज्जत हैं और इन रवायतों से साफ़ ज़ाहिर हैं कि रसूले अकरम की ज़बान पर ख़दीजा का तज़किरा और उनकी सहेलियों के साथ हुस्ने सुलूक आयशा की हासिदाना सरिश्त पर बहुत शाक गुज़रता था चुनाचें बाज़ रवायतों से यह भी पता चलता है कि हज़रत आयशा अक्सरो बेशतर आं हज़रत से गुस्ताख़ियों और तानाज़नी की मुर्तकिब भी हुई और पैग़म्बर ने उन पर दिल खोल कर लानत भी की।

पैग़म्बर (स) ख़दीजा (स) और आयशा के ज़ैल में मेरी ये गुफ़्तगू ज़िम्नी नहीं बल्कि "रब्तेकलाम" के तहत थी। अब मोहतरम कारेईन वो वाक़ियात भी मुलाहिज़ा फरमाएं जो नुज़ूले तहरीम का सबब बने।

---

1. मसनद अहमद :– ज. 6 स. 150-154 बरवायते मूसा बिन तल्हा
2. मसनद अहमद :– ज. 1 स. 117, तिर्मिज़ी :– स. 247, सुनन इब्ने माजा :– ज. 1 स. 315. बुख़ारी :– ज. 2 स. 177 व ज. 4 स. 36-195, इब्ने कसीर :– ज. 3 स. 138, कन्ज़ुल आमाल :– ज. 6 स. 224

पहला वाक़िआ :– जिसका इजमाल यह है कि रसूले अकरम की एक बीवी ज़ैनब बिनते हजश थीं जो आपके लिए शहद मुहैय्या किया करती थीं। चुनाचें आप उनके घर तशरीफ़ ले जाते और थोड़ी देर बैठकर शहद नोश फ़रमाते, यह मामूल था। और चूंकि ज़ैनब तमाम अज़वाज में सबसे ज़्यादा हसीनो जमील और सबसे ख़ूबसूरत थीं, इसलिए हज़रत आयशा को यह धड़का रहता कि कहीं ऐसा ना हो कि हुज़ूर की मुकम्मल तवज्जो ज़ैनब ही की तरफ़ मबज़ूल हो जाए। लेहाज़ा उन्होंने हफ़सा को एतिमाद में लिया और काफ़ी ग़ौरो फ़िक्र के बाद यह मनसूबा तैय्यार किया कि आं हज़रत के दिल को इस शहद की तरफ़ से फे़र दिया जाए ताकि रोज़–रोज़ आपका ज़ैनब के यहां जाना छूटे। इस्कीम के तहत आयशा और अफ़सा के दर्मियान यह तय हुआ कि शहदनोशी के बाद जब रसूलल्लाह ज़ैनब के घर से तशरीफ़ लाएं तो उनसे कहा जाए कि आपके मुंह से मुग़ाफ़ीर* की बू आ रही है।

गरज़ कि जब दूसरे दिन पैग़म्बरे इस्लाम शहद नोश फ़रमा कर ज़ैनब के घर से हफ़सा के घर तशरीफ़ लाए तो मोहतरमा नें दूर ही से नाक सिकोड़ी और मुंह पर हाथ रखते हुए फ़रमाया कि या रसूलल्लाह(स) आपके दहन से मुग़ाफ़ीर की बू आ रही है। पैग़म्बर ने मुस्कुराते हुए जवाब दिया :–

"मालूम होता है तुम शहद की ख़ुशबू और मुग़ाफ़ीर की बदबू से नाआशना हो!

फ़िर आप आयशा के यहां गए। उन्होंने इसी हरकत का मुज़ाहिरा किया। आपने इरशाद फ़रमाया कि मैंने तो सिर्फ़ शहद नोश किया है मुग़ाफ़ीर से उसका क्या ताअल्लुक़? उस पर आयशा तड़प कर बोलीं शहद की मक्खियों ने मुग़ाफ़िर के फूल चूसे होंगे।

मुख़तसर यह कि रसूले अकरम ने आयशा को बार–बार यक़ीन दिलाने की सई फ़रमाई कि मैंने सिर्फ़ शहद पिया है मुग़ाफ़ीर से उसका

---

*मुग़ाफ़ीर एक शीरीं और बदबूदार गोंद जिसे अकसर अरब इस्तेमाल करते थे।

कोई ताअल्लुक़ नहीं, मगर मोअज़्ज़मा ने अपने मन्सूबे के साथ आसम
सर पे उठा लिया इसलिए कि ख़ामोश क्यों कर रह सकती थीं जब त
कि मक़सद पूरा न होता।

आख़िरकार पैग़म्बर को यह वादा करना पड़ा कि आइन्दा मैं शहद नोश नहीं करूंगा मगर इस शर्त के साथ कि यह बात किसी ज़ाहिर न हो वरना ज़ैनब की ख़ातिर शिकनी होगी। मगर आयशा हाज़मा इस कुव्वत से महरूम था। जो किसी बात को हज़्म करने सलाहियत रखती है। पेट में मरोड़ पैदा हुई और मौक़ा मिलते ही हफ़ के सामने जाकर सब कुछ उगल दिया।

दूसरा वाक़िआ :— मारिया क़ब्तिया (मादरे इब्राहीम) का है। ए रात हफ़सा बिनते उमर अपनी बारी पर ग़ैर हाज़िर थीं। इसलिए कि अपने मैंके गयी थीं। घर अकेला था। पैग़म्बर ने वहीं आराम का इरा किया और हफ़सा की जगह मारिया को अपनी ख़िदमत में तलब फ़र लिया। हफ़सा जब वापस आयीं और उन्हें पैग़म्बर और मारिया व शबख़्वाबी का हाल मालूम हुआ तो उनके तनबदन में आग लग गई अंग—अंग से रशको हसद का ज्वालामुखी उबलने लगा। गुस्से से बेक़ होकर पैग़म्बर पर चढ़ दौड़ीं और गला फ़ाड़—फ़ाड़ कर कहने लगीं कि आपने मेरी इज़्ज़तो हुरमत का भी ख़्याल नहीं किया, मारिया को मुझ प तर्जीह दी, क़हां मैं? और कहां वो कनीज़? ये ज़ुल्म.....ये गज़ब..... अन्धेरे....कि मेरा ही घर, मेरी ही बारी, मेरा ही बिस्तर और वह लौंडी

रफ़्ता—रफ़्ता हफ़सा की इस हंगामा आरायी ने वह शक्ल इख़्तिय की कि नबी को पूछना पड़ा, कि तुम क्या चाहती हो? कहा, मारिया आपकी किनारा कशी और वह इस तरह कि जब तक आप उसे अप ऊपर हराम न कर लेगें मैं आपकी तरफ न देखूंगी। पैग़म्बर ने फ़रमा कि मैं तुम्हारी ख़ातिर मारिया को इस शर्त के साथ अपने ऊपर हरा करता हूं कि यह राज़ मेरे और तुम्हारे दर्मियान सरबस्ता रहे और इसक भनक तक न फूटे.......लेकिन हफ़सा अपनी हमराज़ आयशा से कहे बग़ै

1. दर मन्सूर :— ज. 6 स. 239

कैसे चैन लेतीं, दिल में ख़लबली पैदा हुई और मौक़ा पाकर उनसे जड़ दिया। उसके साथ ये मुज़दा भी सुनाया कि मारिया से पीछा छुटा। यही हफ़सा की वह हरकत थी जिस पर पैग़म्बर ने उन्हें तलाक़ दे दी।[1]

और यही वह वाक़िआ था जो नुजूले वहई का सबब बना और परवर दिगार का इरशाद हुआ कि :–

"और जब पैग़म्बर ने अपनी एक बीवी (हफ़सा) से कोई राज़ की बात कही और उसने चुग़ली खायी तो ख़ुदा ने उस अम्र को रसूल पर ज़ाहिर कर दिया तो रसूल ने बाज़ बातों को बताया और बाज़ को टाल दिया। बस इस (अफ़शाए राज़) की ख़बर (आयशा) को दी तो वो हैरत से बोल उठीं कि आपको किसने मुत्तला किया। रसूल ने कहा, मुझे अलीमों ख़बीर ख़ुदा ने बताया। अगर तुम दोनों ख़ुदा से तौबा करो तो कुछ फ़ायदा नहीं क्यों कि तुम दोनों के दिल टेढ़े हो गये हैं और अगर तुम दोनों (आयशा हफ़सा) रसूल की मुख़ालिफ़त में एक दूसरे की एआनत करती हो तो कुछ परवा भी नहीं क्योंकि ख़ुदा जिब्रील मलाइक और सालेहुलमोमिनीन (अली) उनके मददगार रहे हैं। (तहरीम)

इस इबरतनाक वाक़िए का इख़तिताम इस शक्ल में हुआ कि हुज़ूरे अकरम ने हफ़सा को तलाक़ देने के बाद हुक्मे इलाही के मुताबिक़ मारिया को फिर अपने ऊपर हलाल कर लिया। इब्ने अब्बास का बयान है कि मैंने मौक़ा पाकर एक दिन हज़रत उमर से पूछा कि वो औरतें कौन हैं? जिन्होंने रसूलल्लाह पर ग़ल्बा हासिल करना चाहा था और जिनके दिल टेढ़े हो गए थे। तो उन्होंने फ़रमाया कि वो आयशा और हफ़सा हैं।[2]

तारीख़ का बयान है कि हफ़सा की तलाक़ के बाद.......इब्ने ख़त्ताब उम्र भर रोते रहे और फ़रमाते रहे कि :–

"अगर आले ख़त्ताब में कोई ख़ैरो ख़ूबी होती तो रसूलल्लाह मेरी

---

1. तारीख़े ख़मीस :– ज. 2 स. 135, तफ़सीरे कबीर :– ज. 8 स. 231
2. बुख़ारी :– ज.3 स. 138, मुस्लिम :– ज. 1 स. 330, मिश्कात बाबे तलाक़:–285, मसनद अहमद :– ज.1 स. 230

बेटी हफ़सा को तलाक़ न देते।"[1]

उमर इब्ने ख़त्ताब से मरवी इस रवायत से भी अज़्वाजे रसूल की हंगामा आराइयों ख़ुसूसन हज़रत आयशा के गुरूरो घमण्ड का पता चलता है, वो बयान करते हैं कि :—

हम लोग जब मक्के में थे तो हमारी औरतें हमारे दबाव और क़ाबू में थीं, मगर जब मदीने में आये तो हमारी औरतें भी मदीने की औरतों की तरह हवा में उड़ने लगीं और चढ़—चढ़ के बोलने लगीं..... मेरी बीवी भी एक दिन मुझ पर चढ़ी और उसने कहा कि तुम ऐसे ऐसे करते तो अच्छा था। मैंने उसे डांटा और कहा, तुझसे क्या मतलब? जैसे मेरा जी चाहता है करता हूं। मेरी इस बात पर वो बिगड़ गयी और मुझसे कहने लगी, बस! तुम्हारा सारा ज़ोर और दबाव मुझ पर ही चलता है अपनी बेटी हफ़सा की ख़बर क्यों नहीं लेते जो रसूलल्लाह से आये दिन लड़ाई झगड़ा और तकरार किया करती है। मैंने हफ़सा से पूछा क्या ये सच है? उसने कहा, एक मैं क्या उनकी सब बीवियां उनसे लड़ाई झगड़ा किया करती हैं। हफ़सा की इस बात पर मुझे सख़्त गुस्सा आया चुनांचे उसे फ़टकारते हुए मैंने कहा, ख़ुदा के ग़ज़ब और रसूल के गज़ब से ख़ौफ खाया कर, आयशा बनने की कोशिश न कर जिसे अपने हुस्नों जमाल पर बड़ा गुरूरो घमण्ड है।"[2]

ये वो तारीख़ी और कुर्आनी शवाहिद है जिनसे हज़रत आयशा की "ज़ाहिरी और बातिनीसरिश्त" का अन्दाज़ा कुछ मुश्किल नहीं रह जाता.....लेकिन इस बदनसीबी को क्या किया जाए कि नावाकिफ़ मुसलमानों की अक्सरियत (बग़ैर समझे—बूझे) आपकी ज़ात से वालिहान अक़ीदत रखती है और आपके चाल चलन को अपने लिए नजात का रास्ता समझती है।

आपसे तक़रीबन दो हज़ार एक सौ दस हदीसें सहाहे सित्ता और दीगर किताबों में मरवी हैं और सवादे अज़ाम के शरई व फ़िक़ही

---

1. मसनद अहमद :— ज. 3 स. 487, मुआलेमुल तन्ज़ील :— स 165, तफ़सीरे कबीर :— ज. 1 स.163, 171, मदारिजुन नुबुव्वत :— ज. 2 स. 605
2. बुख़ारी बबुर राजुल :— स. 785

मसाइल व दीनी अहकाम का ज़्यादह तर हिस्सा आप ही की बयान करदह अहदीस की रौशनी में मुरत्तब हुआ है।

नसबी सिलसिला

हज़रत आयशा के वालिद अबूबकर बिन क़हाफा बिन उस्मान बिन आमिर बिन अमर बिन क़अब बिन सअद बिन तैम बिन मुर्रह थे... और....वालिदह.... उम्मेरूमान बिन्ते आमिर बिन उवैमर बिन अब्दुश्शम्स बिन उताब थीं। जो अबूबकर के अक़्द में आने से पहले अब्दुल्लाह बिन हारिस बिन सनजरह की ज़ौजियत में थीं और उनसे एक लड़का तुफ़ैल पैदा हुआ था। अब्दुल्लाह की वफ़ात के बाद उम्मे रूमान ने अबूबकर से अक़्द किया।[1] इनके नाम में भी इख़तिलाफ़ है, बअज़ का कहना है कि "ज़ैनब" था और बअज़ ने "वअहद"[2] बताया है। इनका ताल्लुक़ बनु कनाना से था और मां की तरफ़ से "कनानिया" थीं।[3] शोहरए आफ़ाक़ मुवर्रिख़ आलमानी का कहना है कि "आयशा की माँ उम्मे रूमान" असकंदरिया की रहने वाली यूनानी नज़ाद थी।[4]

पैदाइश

आप कब तक शिकमें मादर में रहीं और इस दुनिया में कब वारिद हुई? इसके जवाब में तारीख़ें ख़ामोश हैं शायद इस लिए कि मुवर्रिख़ीन को आपका तआरूफ़ उस वक़्त से हुआ जब आप रसूलल्लाह (स) की ज़ौजियत में दाख़िल हुई। लेकिन कुछ ज़मीर फ़रोश सीरत निगारों ने हुकूमते वक़्त की ख़ुशनूदी के लिए अक़्लो ख़िरद, फ़हमो इदराक, और होशो–हवास को बालाए ताक़ रखकर रसूल की दीगर

---

1. आयशा (अब्बास महमूद उक़ाद) :– स. 51
2. सीरते आयशा :– स. 7
3. आयशा (अबास महमूद उक़ाद) :– स. 51
4. आयशा बाद अज़ पैगम्बर आलमानी :– स. 14

अज़्वाज पर आपको फज़ीलत देने, नीज़ कम्सिन कुवांरी और दोशीजह साबित करने की ग़रज़ से क़यास की बिना पर आपके बारे में सिनो साल की जो मफ़रूज़ा इमारत खड़ी की है, उसके बेरूनी फ़ाटक पर महज़ ख़्याली साले विलादत "4, बेअसत और 5, बेअसत" तहरीर फ़रमाया है जिसे शुऊर मन्तिक़ और आक़िलाना इस्तेदलाल क़ुबूल करने से क़ासिर है।

ज़ाहिर है कि हज़रत आयशा की पैदाइश के वक़्त न तो तहरीरी रिकार्ड का कोई रवाज था और न ही "विलादत या मौत" के बारे में कोई सरकारी या ग़ैर सरकारी राजिस्टर मुरत्तब होता था जिससे आपकी विलादत का साल मालूम होता लिहाज़ा आप ही की ज़बानी रावियों को जो मालूम हुआ उसी को वह बयान करते गये और मसलेहत का क़लम उनके बयानात को काग़ज पर सब्त करता गया.......... ये ज़रूरी नहीं कि ख़ुद आयशा ने अपनी उम्र का तअय्युन सही किया हो क्योंकि औरत की फ़ितरी आदत है कि वह हमेशा अपनी उम्र को कम तसव्वुर करती है और आयशा इस निसवानी ख़ुसूसियत से बालातर हर्गिज़ नहीं हो सकती थीं।

इस सिलसिले में जब हम उम्वी दौर के मुवर्रेख़ीन की मुनतशिरो मुबहम बातों को अक़्लो इस्तेदलाल की कसौटी पर रखते हैं तो ये फ़िक्री नतीजा बरामद होता है कि हज़रत आयशा की विलादत बेअसत से एक साल क़ब्ल या एक साल बाद हुई। यही तहक़ीक़ मुम्ताज़ मिस्री मुवर्रिख़ अब्बास महमूद उक़ाद ने अपनी तसनीफ़ "आयशा" में पेश की है। उनका कहना है कि "ये अम्रमुतहक्क़िक़ नहीं हो सका कि हज़रत आयशा किस सन् में पैदा हुई ताहम अग़लब ख़्याल ये है कि उनकी विलादत हिजरत से ग्यारह साल क़ब्ल हुई[1]

कोर्ट फ्रेशलर आलमानी ने अपनी मायए नाज़ किताब "आयशा बाद अज़ पैगम्बर" में साबित बिन इर्ताह से जो बयान नक़ल किया है

1. आयशा उक़ाद :– स. 52

उससे भी पता चलता है कि हज़रत आयशा का सने विलादत एक बेअसत है।[1] इस तरह अब्बास महमूद उक़ाद की तहकीक़ दुरूस्त और क़रीने क़यास है।

शादी

रसूले अकरम सल्लल्लाहो अलैहे व आलेही वसल्लम के साथ आयशा की शादी.... इस्लामी तारीख़ का एक मुअम्मा है जो आज तक हल न हो सका।

इस पुरअसरार शादी से मुताल्लिक़ बुख़ारी, मुस्लिम मिशकात, मसनद अहमद बिन हम्बल, तबरी, तबक़ात इब्ने सअद, इस्तेयाब, इज़ालतुल ख़फ़ा और मदारिजिन नुबुव्वत वग़ैरह में जो हैरत अंगेज़ और मज़हका ख़ेज हिकायत मरकूम हुई है उसका निचोड़ ये है कि:–

हिजरत से तीन साल क़ब्ल 10 बेअसत में हुज़ूरे सरवरे क़ायनात की पाकबाज़ो ग़मगुसार बीवी, मोहसिनए इस्लाम हज़रत ख़दीजा ताहिरा दुनिया से रूख़सत हुई और उनकी वफ़ात के तीसरे दिन आपके मुशफ़िक़ मेहरबान और मुहाफ़िज़ चचा हज़रत अबूतालिब (अ) का इन्तिक़ाल भी हो गया तो आप अपनी बेयारी और तन्हाई पर हर वक़्त मग़मूमो महज़ून रहने लगे और आपने इस हुज़्नों मलाल के साल को "आमुल हुज़्न" से ताबीर किया।[2]

हज़रत अबूबकर से आपके हुज़्नों मलाल की ये कैफ़ियत देखी न गयी। चुनांचे वो अपनी पांच साला बच्ची आयशा को लेकर एक दिन आं हज़रत (स) की ख़िदमत में हाज़िर हुए और अर्ज़ किया, या रसूलल्लाह(स) ये बच्ची हाज़िर है आप इससे दिल बहलायें ताकि आपका ग़म ग़लत हो। इस बच्ची में ख़दीजा की सलाहियत पाई जाती है।[3] अबूबकर की इस हैरत अंग़ेज तजवीज़ पर पैग़म्बर ने सुकूत इख़तियार किया यहां तक कि बच्ची को उन्होंने गोद में उठाया और वापस चले गये। उसके बाद बक़ौले मुअर्रिख़ पैग़म्बर अबूबकर के घर में आने जाने लगे।[4]

1. आयशा बाद अज़ पैग़म्बर आलमानी :– 7 से 16 तक
2. तफ़सीरे कबीर :– ज. 3 स. 289, मदारिजुन्नुबूवत :– ज. 2 स. 74
3,4. इज़ालतुल ख़फ़ा मक़सद दोम :– स. 110

मगर फिर भी आं हज़रत (स) के कर्बो इज़तिराब में कोई तख़फ़ीक नहीं हुई और हुज़्नों मलाल अपनी जगह बरक़रार रहा तो उस्मान बिन मज़ऊन की ज़ौजा ख़ूला बिन्ते हकीम (जो सहाबिया में थीं) ने ये कहकर आपको अक़्द पर आमादह किया कि ख़दीजा के बाद तन्हाई व बेचारगी दूर करने के लिए यह ज़रूरी है कि आप निकाह कर लें। मेरी नज़र में बाकरा और बेवा दोनों तरह की औरतें हैं अगर हुज़ूर (स) इजाज़त मरहमत फरमायें तो मैं सिलसिला जुम्बानी करूं। मुझे उम्मीद है कि अक़्द के बाद "रन्जोअलम" का बोझ कुछ हल्का होगा। पैगम्बर ने पूछा... वो औरतें कौन है? ख़ूला ने कहा :—
बाकरा.... आयशा बिन्ते अबूबकर है..... और बेवा.....
सौदह बिन्ते जुम्आ!

आपने चन्द लम्हों तवक़्क़ुफ़ फ़रमाया और कहा :—

अगर तुम्हारी ख़्वाहिश यही है तो दोनों जगह पैग़ाम दे दो।

ऐसा लगता है कि अबूबकर और ख़ूला के दर्मियान मामला पहले ही से तय था इसलिए वो सीधी अबूबकर के घर गयीं। अंधा क्या चाहे दो आँखें? अबूबकर फ़ौरन राज़ी हो गए और आं हज़रत (स) नुबुव्वत के ग्यारवहें साल माहे शव्वाल में पांच सौ दिरहम[1] मेहर पर अबूबकर की छः साला बच्ची के शौहर बन गये। उसके बाद ख़ूला ने सौदह के घर वालों से राब्ता क़ायम किया वो भी तैय्यार हो गए और हज़रत (स) का निकाह सौदह से भी हो गया।[2]

हज़रत आयशा का यह बयान क़ाबिले तव्ज्जो है कि उन्होंने फ़रमाया :—

"मैं अपने अक़्द से बिल्कुल बेख़बर थी। अक़्द के बाद जब मेरी मां ने मेरे बाहर निकलने पर पाबन्दी आइद कर दी और मुझे समझाया तो मैं समझी कि मेरा निकाह हो गया है।"[3]

---

1. तबरी :— ज. 3 स. 176, मसनद अहमद स. 94 तबकात इब्ने सअद :— स. 43
2. तबरी :— ज. 3 स. 176
3. तबक़ात इब्ने सअद स. 40

बुख़ारी का कहना है कि आयशा निकाह के वक़्त इस अम्र की मुतहम्मिल नहीं थीं कि उनसे "ताल्लुक़ाते ज़ौजियत" क़ायम किए जा सकते इसलिए उन्हें दो साल तीन माह मक्के में और नौ माह मदीने में यानी तीन बरस तक शौहर से अलग रहना पड़ा।[1]

मुझे नहीं मालूम कि निकाह के बाद सिर्फ़ तीन बरस के अन्दर सिर्फ़ नौ साल की उम्र में निस्वानी फ़ितरत के ख़िलाफ़ हज़रत आयशा किन वुजूह की बिना पर जवान और बालिग़ हो गयीं, और वो इस तरद्दु में मुब्तिला हो गये कि रसूलल्लाह (स) उनकी बेटी की तरफ़ मुलतफ़ित क्यों नहीं होते? आख़िरकार एक दिन मौक़ा महल देखकर आप रसूले अकरम (स) से यह कह बैठे कि या रसूलल्लाह आप आयशा को अपने तसर्रुफ़ में क्यों नहीं लाते? हज़रत ने फ़रमाया मेरे पास मेहर नहीं है ये सुनकर अबूबकर ने साढ़े बारह अवक़िया पैग़म्बर की ख़िदमत में पेश किया और कहा ये महर हाज़िर है।[2]

बहरहाल इस सिलसिले की दूसरी मज़हका ख़ेज़ रवायत बुख़ारी और तबरी में यूं मरकूम है कि रसूलल्लाह (स) माहे शव्वाल में एक दिन अपने चन्द असहाब के साथ अबूबकर के घर गये। आयशा उस वक़्त अपनी हमजोलियों के साथ झूला झूलने में मशग़ूल थीं। उनकी मां (उम्मेरूमान) ने मौक़ा ग़नीमत जानकर उन्हें आवाज़ दी। वह हापती हुई आयीं। मां ने उनके हाथ मुँह धुलाए उन्हें सजाया, संवारा और उसके बाद आं हज़रत (स) की ख़िदमत में लेकर हाज़िर हुई और ये कहकर उनकी गोद में बिठा दिया कि ये आपकी ज़ौजा हैं। असहाब शरमा कर वहां से उठ गये। बुख़ारी का कहना है कि आयशा को ख़बर नहीं थी कि क्या होने वाला है।[3] और तबरी का कहना है कि जफ़ाफ के बाद उसी वक़्त से ज़ौजियत की इबतिदा हुई।[4]

---

1. बुखारी :– ज. 2 स. 229 (मिस्र)
2. इस्तेयाब :– स. 11, तबक़ात इब्ने सअद बाबुन्निसा:– स. 43, बुखारी बाबे तज़्वीजे आयशा
3. बुखारी :– ज. 2 स. 228
4. तबरी :– ज. 3 स. 176

इसी रवायत को शाह अब्दुल हक़ मुहद्दिदसे देहेल्वी ने हज़रत आयशा की ज़बानी यू नक़्ल फ़रमाया है :–

आयशा फ़रमाती हैं कि जब हम लोग मदीने में वारिद हुए तो मरे वालिद अबूबकर ने मोहल्लए सख़ में हबीब इब्ने रियान या ख़ारजा बिन ज़ैद के यहां रिहाइश इख़तियार की। एक रोज़ हज़रत रसूले ख़ुदा (स) तशरीफ़ लाए। हज़रत के साथ अनसार के मर्दो और औरतों का मजमा था उस वक़्त मेरी अम्मां जान ने मुझे पकड़ कर मेरे बालों में कंघी की मांग निकाली, मुह धुलाया और मुझे खींचती हुई उस जगह ले गयीं जहां रसूलल्लाह (स) फ़रोकश थे। चूंकि मेरा नफ़्स मुझ पर तंगी कर रहा था इसलिए मेरी मां ने थोड़ी देर तवक्कुफ़ किया और जब मेरी हालत पुर्सुकून हुई तो उन्होंने मुझे आं हज़रत की गोद में बिठा दिया और कहा ये आपकी बीवी हैं। इसके बाद सब लोग कमरे से बाहर चले गये और हज़रत ने मेरे साथ[1]......... और कोई ऊँट या बकरा ज़िब्ह नहीं किया गया शादी का खाना जिस वलीमा कहते हैं एक प्याला दूध था जो मअद इब्ने उब्बादह के घर से आया था। उस रोज़ मैं नौ बरस की थी।[2]

यही वह ताज्जुब ख़ेज़ हिकायत और यही वो हैरत अंगेज़ दास्तान है जिसके पेचोख़म और दामे फ़रेब में तेरह सौ बरस से सारी दुनिया उलझी हुई है। और यही वो इस्लामी तारीख़ की मुअम्मा है जिसे हल करने कोशिश में मुसबत और मनफ़ी दलीलें अकसरो बेशतर एक दूसरे से टकराती रहती हैं मगर "आयशा की तरीख़ी हैसियत" उम्वी हुकमरां, हक फ़रोश उलमा और ज़मीर फ़रोश मुवर्रेख़ीन की बदौलत आज भी ज़िन्दा हैं इसका पोस्टमार्टम होना चाहिए क्योंकि इस क़िस्म की मजहूल अहादीस व मोहमल रवायात से जो ज़्यादातर आयशा से ही मरवी हैं रसूल की रिसालत, इस्मत, फ़ज़ीलत और अज़मत मुतस्सिर होती है। इस्लाम दुशमन अनासिर को "लबकुशाई" और "दरीहद देहनी" का मौका फ़राहम होता है।

---

1. इजालतुल खुलफ़ा मक़सद दोम :– स. 11, इस्तेयाब :– ज. 2 स. 765, मुसतदरक़, हाकिम स. 5 ज. 4
2. मदारिजुन्नबुव्वत :– ज. 2 स. 89

इस जुर्अतमन्दाना इक़दाम के लिए मुझ ऐसे शाएर और अदीब का तन्हा क़लम काफ़ी नहीं हो सकता बल्कि उन उलमा की भी ज़िम्मेदारी है कि जो हिन्दुस्तान और बीरूनी मुमालिक में "रवादारी" के प्लेटफार्म से अपनी मुनाफ़िक़ाना तक़रीरों और फ़रेबकारियों के ज़रिए हुसूले दौलत में मसरूफ़ हैं।

बहराल अक़्द की इस पूरी कहानी में आयशा और रसूले अकरम(स) के दर्मियान ख़ूला बिन्ते हकीम की वेसात्त और उनकी ख़्वाहिश पर अक़्द के लिए आं हज़रत की आमादगी बईद अज़ क़यास है क्योंकि बाज़ अक़ीदतमन्द मुअर्रिरवीन के क़ौल के मुताबिक़ जब हिजरत से तीन बरस क़ब्ल सिर्फ छः साल की उम्र में मोअज़्ज़मा का निकाह हुआ और एक बेअसत में ज़फाफ़ हुआ तो तीन साल तक इस निकाह से रसूल (स) को क्या फ़ायदा पहुंचा? हज़रत का कोई फेअल अक़ल के ख़िलाफ़ और मसलिहत से ख़ाली नहीं होता और छः साल की बच्ची से शादी में कोई मसलिहत नज़र नहीं आती। अगर निकाह के बाद आप रूख़सती के क़ाबिल होतीं और रसूलल्लाह (स) अपने घर ले आते तो एतराज़ या तनक़ीद की गुंजाइश हर्गिज़ न होती क्योंकि उमूरे ख़ानादारी और मासूमए कौनेन (स) की दिल बसतगी वग़ैरह मसालह थे मगर मौसूफ़ा अक़्द के बाद भी आग़ोशे मादर में रहीं और आप पर बचपना इस क़दर ग़ालिब था कि रूख़सती के बाद भी शौहर के घर में गुड़ियों और गुड्डों के खेल से लुत्फ़ अन्दोज़ होती रहीं। इन वजूह से ये तसलीम करना पड़ता है कि सियासी उमूर को पेशेनज़र रखकर खुद अबूबकर ने ये शादी की होगी मगर रसूलल्लाह (स) से आपका यह फ़रमाना कि ये कुछ ग़म ग़लत करेगी क्योंकि इसमें ख़दीजा की सलाहियत पाई जाती है, इसका क्या मतलब होता है? क्या छः बरस की बच्ची पचास या बावन बरस के शैहर का ग़म बीवी की हैसियत से ग़लत कर सकती है। जबकि आयशा इतनी नादानो ना समझ थीं कि उनका खुद कहना है कि निकाह की मुझे ख़बर तक नहीं हुई जब मेरी मां ने बाहर निकलने पर पाबन्दी लगा दी तो मुझे पता चला कि निकाह हो चुका है और बाद में मेरी मां ने मुझे समझा भी दिया।[1]

1. तबक़ात इब्ने सअद ज. 2 स. 140

गरज़ कि तारीख़ और सीरत की किताबों में इसका जवाब किसी भी नौइयत से अस्बात में नहीं मिलता और उसूली हैसियत से भी इस उम्र मे लड़कियों की शादी किसी मुल्क किसी मज़हब और किसी समाज में पसन्द नहीं की जाती।

अरब के हालात, तारीख़, और अदब की किताबों में तफ़सील से है, लेकिन ये किताबें भी इस क़िस्म की मिसाल पेश करने से क़ासिर हैं।

अल्लामा इब्ने हज़र की किताब "असहाबा" सहाबा के हालात में एक मुफ़स्सल और जामेअ किताब है उसकी आख़िरी ज़िल्द, जिल्दे हफ़तुम सिर्फ़ औरतों के हालात पर मब्नी है। उसमें मुख़तलिफ़ मक़ामात मुख़तलिफ़ क़बाइल, मुख़तलिफ़ खानदान की तक़रीबन डेढ़ हज़ार औरतों के हालात मरक़ूम है। (जो सहांबिया भी थीं) मगर किसी के मुताल्लिक़ ये नहीं है कि उनका निकाह छः बरस की उम्र में हुआ हो जबकि इस किताब में मुतअदिद्द औरतों की उम्र और तारीख़े विलादत व वफ़ात का तज़ाकिरा है। ख़ुद अबूबकर की दूसरी साहबज़ादी अस्मा का निकाह इस उम्र या इससे साल दो साल आगे पीछे नहीं हुआ। अबूबकर के तीन बेटे भी थे मगर किसी बेटे की शादी ऐसी लड़की से नहीं हुई जिसकी उम्र छः साल रही हो। हज़रत उमर के भी कई बेटियां थीं उन्होंने भी अपनी किसी बेटी की शादी छः बरस की उम्र में नहीं की।

हज़रत उस्मान की सत्तरह औलादें थी मगर कोई मिसाल ऐसी नहीं मिलती। खानदाने बनी उमय्या और बनी अब्बास में किसी भी लड़की के बारे में ये पता नहीं चलता कि उसकी शादी छः साल की उम्र में हुई हो। इससे मालूम होता है कि अरबों में कम उम्री और कमसिनी की शदियों का कोई दस्तूर या रवाज़ नहीं था। लिहाज़ा ये मानना पड़ेगा कि हज़रत आयशा इस वस्फ़ में मुनफ़रिद हैं, और अबूबकर ने दस्तूर के ख़िलाफ़ वो काम कर दिखाया जिसकी नज़ीर क़यामत तक मुम्किन नहीं।

हज़रत आयशा की उम्र इज़्दिवाजी ज़िन्दगी के लिहाज़ से तीन हिस्सों पर तक़सीम हो सकती है।

(1) शादी से क़ब्ल का ज़माना, (2) शादी के बाद का दौर (3) बेवगी का ज़माना। लुत्फ़ की बात ये है कि हर दौर हर ज़माने में आप का कोई न काई हैरत अंगेज़ वाक़ेआ ऐसा मिलता है जो अक़्ल को हैरानो परेशान करता है।

शादी से क़ब्ल का वक़ेआ ये है कि जब आप सिर्फ़ छः बरस की थीं तब आपके वालिद आपको रसूले ख़ुदा (स) की ख़िदमत में लेकर हाज़िर हुए और कहा, "आप इस (बच्ची) से दिल बहलायें"..... यक़ीनन एक अनोखी निराली और अजूबा बात थी।

शादी के बाद का वाक़ेआ "अफ़क" जिसमें आप की ज़ात इत्तिहाम का निशाना बनी, जिससे ज़्यादा शर्मनाक बदनामी औरत के लिए मुम्किन नहीं यहां तक खुद पैग़म्बर (स) ने इस तोहमत को ग़लत नहीं समझा जब तक वहई का नुज़ूल नहीं हुआ।

बेवगी के अहद का वाक़ेआ अपनी नज़ीर नहीं रखता, और वो ये है कि जब आपकी उम्र पैंसठ साल की थी तो उन्नीस साला यज़ीद इब्ने मुआविया ने आप से अक़्द की ख़्वाहिश की, जिसके जवाब में आपने मुंह पीट लिया। शाह अबदुल हक़ मुहद्दिस ने भी इस वाक़िए को नक़्ल किया है।[1]

ये वो वाक़ेआत है जो बजाए खुद हज़रत आयशा की शख़्सियत पर तारीख़ी दस्तावेज़ है.......इसलिए मैं अपनी तरफ़ से उनके बारे में किसी तन्क़ीद का कोई हक़ नहीं रखता। मगर इस गुफ़्तुगू के ज़ेल में ये ज़रूर चाहूंगा कि तारीख़ ही की रौशनी में ये सराहत भी हो जाये कि रसूलल्लाह (स) से अक़्द के वक़्त मुअज़्ज़मा कुंआरी थीं या नहीं?

इस सिलसिले में खुद आयशा की ज़बानी जो रवायतें मुवर्रेख़ीन तक पहुंची हैं, उनसे यही पता चलता है कि शादी के वक़्त आप छः साल की नासमझ और नाबालिग़ बच्ची थीं। मगर तीन ही साल के अन्दर न जाने कि शोअबदह बाज़ी के तहत आप पर भरपूर जवानी आ गयी, यहां तक कि नौ साल की उम्र में जफ़ाफ़ की तमामतर सऊबतों

---

1. मदारिजुन्नुबुव्वत :– ज. 1, स. 266

को बआसानी झेलने के क़ाबिल हो गयीं लेकिन इस रिवायती हिकायत को मिस्र के नामवर और मुम्ताज़ मुवर्रिख़ "अब्बास महमूद उक़ाद" की तहक़ीक़ ने कुबूल नहीं किया चुनांचे वो अपनी किताब "आयशा" में तहरीर फ़रमाते हैं :–

"अग़लब ख़्याल ये है कि उनकी विलादत ज़िरत से ग्यारह साल क़ब्ल हुई इस एतिबार से रसूलल्लाह (स) के अक़्दे ज़ौजियत में आते वक़्त इनकी उम्र लगभग चौदह साल की बनती है।"[1]

हर होशमन्द इन्सान उसी बात को मानेगा जिसे अक़्ल भी कुबूल करे। फ़हमो इद्राक की दुनिया हैरान थी कि जिस सन् में रसूले अकरम(स) के दो अज़ीम गमगुसारों, मददगारों और चाहने वालों ने रेहलत की और जिस साल को आपने "आमुल हुज़्न" क़रार दिया, उसी साल कोई दूसरा अक़्द भी किया हो?

शुक्र का मक़ाम है कि किसी शिआ नहीं बल्कि एक सुन्नी मुहक्क़िक़ की तहक़ीक़ से यह हक़ीक़त वाज़ह हो रही है, कि सरकारे दो आलम (स) ने "10 नब्वी" यानी अय्यामे आमुल हुज़्न में कोई अक़्द नहीं फ़रमाया और न ही हज़रत आयशा छः साल की उम्र में रसूल (स) की ज़ौजियत से मुशर्रफ़ हुई।

अब्बास महमूद उक़ाद आयशा के "अफ़सान्वी अक़्द" का परदा फ़ाश करते हुए अपनी किताब के सफह '91' पर मजीद तहरीर फ़रमाते हैं :–

"अभी तक किसी शख़्स को पूरा यक़ीन नहीं था कि आयशा ज़रूर रसूलल्लाह (स) के अक़्द में आ जायेंगी, वजह ये थी कि वो पहले ही "जबीर बिन मुतअम बिन अदी से जो हुनूज़ हालते कुफ़्र पर क़ायम था मनसूब हो चुकी थीं।"[2]

फ़िर फ़रमाते हैं :–

"हमारे नज़दीक क़रीने क़ियास अम्र ये है कि रूख़सत के वक़्त

---

1. आयश (उक़ाद) :– स. 52
2. आयशा (उक़ाद) तरजमा :– मुहम्मद अहमद पानी पती, स. 91

आयशा की उम्र बारह से किसी तरह कम और पन्द्रह साल से ज़्यादा नहीं थी।[1]

क़रीन क़यास नहीं बल्कि ये यक़ीनी अम्र है कि रसूलल्लाह (स) से अक़्द के वक़्त हज़रत आयशा मुकम्मल तौर पर बालिग़ और भरपूर जवान थीं।

हम ज़िक्र कर चुके हैं कि पैग़म्बर (स) ने "10, नब्वी" में कोई अक़्द नहीं फ़रमाया क्योंकि ये साल हुज़ूर (स) के लिए इन्तिहाई रंगो मलाल, कर्बो इज़्तिराब और ग़मों अलम का साल था।

हक़ीक़त ये है कि वफ़ाते हज़रते ख़दीजा (स) के तीन बरस बाद "13,नब्वी" में हिजरत से कुछ पहले सरकारे दो आलम (स) ने आयशा से अक़्द किया जैसा कि अल्लामा शिबली नोमानी के शागिर्दे रशीद मौलवी सुलैमान नदवी ने बुख़ारी और मसनद के हवालों से अपनी किताब "सीरत आयशा" में तहरीर फ़रमाया है कि :–

"बुख़ारी और मसनद में ख़ुद उन (आयशा) से दो रवायते हैं, एक में है कि हज़रत ख़दीजा की वफ़ात के तीन बरस बाद निकाह हुआ।"

इस अक़्द के बाद 10 हिजरी में रूख़सती अमल में आयी। इस हिसाब से बवक़्ते रूख़सती मोहतर्मा की उम्र तक़रीबन बीस साल की बनती है।

अब्बास महमूद उक़ाद का ये कहना बजा है कि रसूलल्लाह (स) के अक़्द में आने से पहले आयशा ज़बीर इब्ने मुतअम से मनसूब हो चुकी थी। इस पूरे वाक़िए का निचोड़ हम क़दीम तरीन मुवर्रिख़ इब्ने सअदे वाक़िदी (अलमतूफी 230 हिजरी) की ज़बाने क़लम से सुनाते हैं। जिसके बारे में अल्लामा शिबली नोमानी का कहना है। कि मोहम्मद बिन सअद, कातिबे वाक़िदी निहायत सक़ह और मोतमिद मुवर्रिख़ हैं :–

आयशा के लिए हज़रत रसूले ख़ुदा (स) ने हज़रत अबूबकर को पैग़ाम दिया तो उन्होंने कहा या रसूलल्लाह (स) उसको तो मैं जबीर

---

1. आयशा (उक़ाद) तरज़मा :– मुहम्मद अहमद पानी पती, स. 92

इब्ने मुतअम के हवाल कर चुका हूं, मुझे ज़रा मोहलत दीजिए ताकि मैं उन लोगों से आयशा को दोबारह हासिल करूं। (चुनाचे) अबूबकर ख़ामोशी से आयशा को वहां से ले आये (फ़िर) ज़बीर ने तलाक़ दी और वो रसूलल्लाह (स) के साथ ब्याही गयीं।[1]

आयशा के लिए रसूल ने ख़ुद पैग़ाम दिया, किसी से दिलवाया या आयशा के वालिदैन ने ख़ुद उन्हें रसूलल्लाह (स) की गोद में डाल दिया, ये अलग मसअला है। बहरहाल..... वाक़िदी की इस रवायत से ये मुकम्मल तौर पर वाजह है कि हज़रत आयशा न ये कि सिर्फ़ जबीर इब्ने मुतअम से मनसूब थीं बल्कि मोहतर्मा अक़्द और रूख़सती की मन्ज़िलों से गुज़रकर "ज़फ़ाफ़" का सख़्त तरीन मरहला भी तय कर चुकी थीं।

हज़रत आयशा जबीर बिन मुतअम को कब ब्याही गयीं, और कितनी मुद्दत तक आप उसके पास रहीं? इसके जवाब में तारीख़ें ख़ामोश हैं, और तलाश के बावजूद मुझे कोई ऐसी रवायत नहीं मिली जिससे कुछ मालूम होता। लेकिन वाक़िदी के इस बयान की रौशनी में बिल एलान में ये कह सकता हूं कि हज़रत आयशा रसूल (स) के अक़्द में आते वक़्त हर्गिज़ कुआंरी नहीं थी बल्कि एक मुतलका की हैसियत से वो उम्महातुल मोमिनीन की सफ़ में शामिल हुई थी।

इस मौक़े पर ये वज़ाहत भी ज़रूरी है कि पैग़म्बर (स) के अक़्द में आने से पहले भी आप औलाद से महरूम रहीं और जबीर बिन मुतअम की "काफ़िराना कोशिश" आपके बांझपन को कोई सौग़ात न दे सकीं, और पैग़म्बर (स) के अक़्द में आने के बाद भी आपकी मुरादों, तमन्नाओं और आरज़ूओं का काशकोल नेअमते औलाद से खाली रहा। रसूले अकरम (स) से आपकी औलाद क्यों नहीं हुई, इसका क्या ससब था? अब्बास महमूद उक़ाद की ज़बानी सुनिये :–

इसका सबब जहां तक हमारी समझ में आ सका है वो यह है कि रसूलल्लाह (स) ने औलाद की ख़ातिर अपनी अज़्वाज से निकाह नहीं किया। हुज़ूर के निकाह बिल उमूम दो अग़राज के तहत होते थे।

1. तबक़ात इब्ने सअदे वाक़िदि :– ज. 8, स. 40

(1)बाज़ औरतें अपने ख़ावन्द की वफ़ात के बाद बिल्कुल बेसहारा हो जाती थीं, हुजूर उनकी बेबसी और बेकसी का मदावा करने के लिए उनसे निकाह कर लेते थे। (2) बाज़ अज़्वाज से निकाह करने में ये ग़रज़ पिन्हा थी कि हुजूर उनके क़बीलों को इस्लाम की तरफ़ माएल करने के लिए उनसे ताल्लुक़ क़ायम करना चाहते थे।[1]

हुस्नो जमाल

उम्वी दौर के हक़ फ़रोश उलमा, मुवर्रेख़ीन और मुहद्दिसीन की एक बड़ी जमाअत ने हुकूमते वक़्त की ख़ुशनूदी और अपने ज़ाती मफ़ाद की ख़ातिर हबीबे किर्दिगार की दीगर अज़्वाज पर आयशा को अफ़ज़लियत और फ़ौक़ियत देने के लिए ख़ुद उन्हीं की ज़बानी उनके हुस्नों जमाल, ख़ूबसूरती रअनायी और ज़ेबाई के जो शर्मनाम तज़किरे अपनी किताबों में किए हैं, उससे ग़ैर मुसलिमों को मज़ाक, इस्तेहज़ा और इस्तिहानत के साथ–साथ पैग़म्बर (स) की पाको पाकीज़ह शख़्सियत और मासूम सीरत पर इत्तिहाम एहानत और अंगुश्तनुमाई का भरपूर मौक़ा फ़राहम किया।

हज़रत आयशा के हुस्नों जमाल की हिकायों के तहरीरों और किताबों के ज़रिये अवाम में मुशतहिर करने का मक़सद इसके अलावह और क्या हो सकता है कि दुनिया वालों को ये बावर करने पर मजबूर किया जाये रसूल (स) की तमाम अज़्वाज में हज़रत आयशा ही सबसे ज्यादा हसीनो जमील और ख़ूबसूरत थीं। हुजूर (स) उन्हें सबसे ज़्यादा चाहते, दिलोजान से मुहब्बत फ़रमाते, और अपनी तमामतर तवज्जह हमावक़्त उन्हीं की तरफ़ मबजूल रख़ते।

ये ग़लत और अफ़सोसनाक बात मुशतहिर क्यों हुई? इसकी असल वजह ये है कि बअदे वफ़ाते रसूल (स) अहदे शेख़ैन में हज़रत आयशा को "हुकूमत की बेटी" होने का शरफ़ हासिल था, और इक़तिदार परस्तों को इलतिफ़ात पूरी तरह आपकी ज़ाते ख़ास से जिससे वाबस्ता

---

1. आयशा (उक़ाद) तरजमा मुहम्मद अहमद पांनी पती :– स. 118

था। इन्हें वो हुकूक़ हासिल थे जिससे रसूल (स) की दूसरी अज़्वाज महरूम थीं। वो अज़मत वो मन्ज़िलत मयस्सर थी जो किसी ज़ौजा को नसीब न थी। हालांकि पैग़म्बर (स) ने इन्तिक़ाल के वक़्त नौ बीवियां छोड़ी थीं। लेकिन अबूबकरो उमर ने किसी को इतनी अहमियत नहीं दी। जब कोई फ़तवा दर्याफ़्त करना होता, या कोई शरई मस्अला मालूम करना होता वो ये दोनों हज़रत आयशा की दो तरफ़ रजूअ करते थे, जैसे कि इब्ने सअद का बयान है :–

"हज़रत अबूबकरो, उमर और उस्मान के अहद में तन्हा हज़रत आयशा ही फ़तवा दिया करती थीं, और उनकी यही कैफ़ियत मरते दम तक रही।"[1]

ये वह सियासी इक़दाम था जिसने रफ़्ता–रफ़्ता हज़रत आयशा की "मरज़ेइयत" को उस दौर के मुसलमानों में मुस्तहकम कर दिया। इसके अलावा "वज़ाइफ़ो–अताया" में भी उन्हें दीगर अज़्वाज़ पर मुक़दद्म रखा गया। चुनांचे हज़रत उमर ने अज़्वाजे रसूल में हर एक का दस हज़ार और आपका बारह हज़ार वज़ीफ़ा मुक़र्रर किया था इन ख़ुसूसी तवज़्जुतो–मराआत ने आयशा की शख़्सियत को उरूज़ अता करके एहतिराम की उस मन्ज़िल से हम किनार कर दिया कि उन्होंने रसूल (स) की ज़ौजियत और अपनी मरज़ेइयत से खूब नाजाइज़ फ़ायदा उठाते हुए अपने बारे में जो कुछ भी "उल्टा सीधा" और "औलफ़ौल" आपीन ज़बान से बका वो अक़ीदत मन्दों के नज़दीक सच बनता गया। यहां तक कि उलमा, मुवर्रेख़ीन और मुहद्दिसीन भी उसे अपनी किताबों में जगह देते चले गये और किसी ने उसकी तरदीद में लब कुशाई की जसारत नहीं की।

ख़ुदा भला करे अहदे हाजिर के सुन्नी मुवर्रिख अब्बास महमूद उक़ाद का जिसकी जुस्तजू आमेज़ तहक़ीक़ ने हज़रत आयशा के खुद साख़्ता हुस्नों जमाल के चेहरे से मजाज के परदे आर उनकी ख़ूबसूरती के देरीना घिरौंदे को हमेशा के लिए मिस्मार कर दिया।

---

1. आयशा (उक़ाद) तरजमा मोहम्मद अहमद पानी पती :– स. 119

मौसूफ़ अपनी तहक़ीक़ी किताब "आयशा" में फरमाते हैं :–

"हज़रत आयशा का बचपन बीमारियों में गुज़रा, तारीख़ का मुतालिआ करने से मालूम होता है कि दस बरस की उम्र में उन्हें बुख़ार आया, जिससे उनके तमाम बाल झड़ गये। बाद में उनकी सेहत ठीक नहीं रही और वो अकसर बीमार हो जाया करती थी।[1]

इसी किताब में एक दूसरे मक़ाम पर तहरीर फ़रमाते हैं :–

हज़रत आयशा की ब्यान कर्दह बाज़ रवायत से ये भी मालूम होता है कि शदीद बुख़ार की वजह से उनके बाल झड़ गए थे। चुनांचे मिन जुमला दीगर रवायात के एक रवायत ये भी है कि एम मरतबा उन्होंने औरतों को नसीहत करते हुए फ़रमाया कि तुम में से जिस औरत के बाल दों वो उनहें संवार कर रखे।"[2]

इसके बाद......उकाद का ये इन्किशाफ़क़ारी को हैरत ज़दह कर देता है :–

"जमल के वाक़ेआत पढ़कर ये इल्म भी होता है कि हज़रत आयशा "जहरूस–सूरत" थीं।"[3]

इन इन्किशाफ़ात के बाद हज़रत आयशा के हुस्नो जमाल की हक़ीकत को अक़्लो ख़िरद की कसौटी पर परख लेना कोई दुशवार अम्र नहीं। अगर उक़ाद की मज़कूरह तहरीरों को मुशक्कल कर दिया जाये तो मोहतर्मा एक ऐसी मुहीब औरत की शक्ल में उभर कर सामने आती है कि जिसके सर पर बाल नहीं जो मुसलसल बीमार रहती है, और जिसकी आवाज़ मर्दाना और ग़रज़दार है।

अब मोहतरम कारेईन ख़ुद फैसला करें कि क्या एक गंजी, दाएमुल मरीज़ और जहरूस सूरत, औरत को दुनिया का कोई अक़लमन्द इन्सान हुस्नों जमाल का मुजस्समा करार दे सकता है? और क्या ऐसी औरत ख़ूबसूरत कही जा सकती है?

---

1. आयशा (उक़ाद) तरजमा :– मोहम्मद अहमद पानी पती :– स. 119
2. आयशा (उक़ाद) :– स. 54 - 55
3. आयशा (उक़ाद) :– स. 54-55

हरीर में आयशा

बुख़ारी में हज़रत आयशा का बयान है कि रसूलल्लाह (स) ने मुझसे फ़रमाया :–

"मैंने दो बार तुझको ख़्वाब में देखा कि एक शख़्स (जिब्रील) तुझको हरीर के एक टुकड़े में उठाये हुए है, और वो कहता है कि ये तुम्हारी बीवी है। मैंने वो कपड़ा खोला तो अन्दर तू निकली मैंने कहा, अगर ये ख़्वाब अल्लाह की तरफ़ से है तो वो ज़रूर पूरा करेगा।"[1]

चन्द लफ़्ज़ों की उलटफ़ेर से ये हदीस "मिशकात"[2] और "तिर्मिज़ी"[3] में भी बयान की गयी है। और बाज़ मुर्रिख़ीन का कहना है कि हज़रत आयशा की ये आसमानी तस्वीर सब्ज़ रंग के रेशमी कपड़ों में लपेट कर तीन बार आं हज़रत को ख़्वाब में पेश की गयी।"[4]

मसलिहत के स्टूडियों में पैग़म्बरी ख़्वाब के कैमरे से खींची गयी इस तस्वीर के बारे में, अल्लामा अब्दुल हक़ मुहद्दिसे देहेल्वी अपनी अक़ीदत का मुज़ाहिरह करते हुए रक़म तराज़ है :–

"इससे मुराद इज़्हारे शौक़ो रंगबत है और आयशा के लिए ये मनक़बते अज़ीम है कि अल्लाह के रसूल (स) के पास पहुंचने से पहले उन्होंने रसूल (स) को अपने जमाले पुरअनवार का मुश्ताक़ कर दिया, और क्यों न इश्तियाक़ होता कि, जुलैख़ा ने ख़्वाब में यूसुफ़ (अ) को एक मरतबा देखा था तो वो आशिक़ो फ़रेफ़्ता हो गयीं थीं। और यहां सरवरे क़ायनात ने आयशा की तस्वीर तीन बार देखी, फ़िर उन्से–मुहब्बत में

---

1. बुख़ारी :– ज. 3 स. 21, किताबुन निकाह स. 48, मतबूआ करांची, पाकिस्तान
2. मिशकात :– ज. 8, स. 141
3. तिर्मिज़ी बाबे मनाक़िबे आयशा
4. मदारिजुन्नुबूवत :– ज. 2 स. 60

ज़ियादती क्यों न होती।"[1]

बाज़ दूसरी अज़्वाज़ के बारे में अल्लामा मौसूफ़ फ़रमाते हैं :–

"उन्होंने रसूल की ज़ौजियत में आने से पहले ख़्वाब में देखा कि उनके घरों में आफ़ताब उतर आया है या आसमान से माहताब आ गया है। जैसा कि हज़रत ख़दीजा (स) और हज़रत सौदह के हालात में मरकूम है। मगर ये हज़रत आयशा के इन्तिहाई हुस्नो जमाल की कैफ़ियत थी वो रसूल के लिए ब–बन्ज़िलए–यूसुफ़ और रसूल उनके लिए ब–मन्ज़िलए जुलैखा थे।"[2]

वहशत में हर एक नक़्शा उल्टा नज़र आता है।
मजनू नज़र आती है लैला नज़र आता है।।

इस मोहमल और वज़ई हदीस ने अब्दुल हक़ मुहद्दिस ऐसे होशमन्द और जलीलुल क़द्र आलिम को भी चक्कर में उलझा कर उनकी अक्ल की बिसात उल्ट दी और वो ऐसी दहशत का शिकार हुए कि खुदा का रसूल (स) उन्हें "जुलैखा" दिखाई देने लगा और आयशा "युसूफ़" नज़र आने लगीं। जबकि इस हदीस पर ग़ौरोफ़िक्र करने और इसे तारीख़ की रौशनी में देखने से यह हक़ीक़त वाज़ेह हो जाती है कि हज़रत आयशा ने अपनी फ़ज़ीलत और खुदनुमाई की ज़रूरत के तहत बजाते खुद इसको जन्म दिया, या फ़िर इसकी इख़तिरा का सेहरा उम्बी दौर के ज़र ख़रीद मुअर्रेख़ीनो मुहद्दिसीन के सर है।

बुख़ारी ने अपनी "सहीह" में इन ग़लत अहदीस को आयशा की ज़बानी नक़्ल किया है और एबारत में एक शख़्स के आगे ब्रेकेट में जिब्रील का नाम तहरीर किया है, जिससे ये इश्तिबाह पैदा होता है कि ये नाम इज़ाफ़ी हैं।

अगर थोड़ी देर के लिए ये मान लिया जाये कि आयशा की तस्वीर लाने वाले जिब्रील ही थे तो सवाल यह पैदा होता है कि वो और किसी मौक़े पर पैग़म्बर (स) के ख़्वाब में क्यों नहीं आये? आख़िर हज़रत

1,2. मदरिजुननबूव्वत :– ज. 2 स. 60-61

आयशा में कौन सी ख़ूबी कौन सी इन्फ़िरादियत और कौन सा कमाल था कि उनकी वजह से उनहें बार–बार पैग़म्बर के ख़्वाब में आना पड़ा? ये एक मामूली सा काम था जो रसूलल्लाह की बेदारी की हालत में भी हो सकता था। और आयशा की यही तस्वीर कपड़े में लपेटकर, कागज़ के लिफ़ाफ़े में मोहर बन्द करके या फ्रेम मढ़वा कर उनकी ख़िदमत में पेश की जा सकती थी।

रसूले अकरम (स) का ये तर्जेअमल भी क़ाबिलेग़ौर है कि वो आयशा की तस्वीर बार–बार ख़्वाब में देखने के बावजूद हज़रत अबूबकर से उनकी ख़्वाहिश नहीं करते, बल्कि अक़्द का मसअला मशहूर सहाबी उस्मान बिन मसऊन की बीवी ख़ूला बिन्ते हकीम की बदौलत मन्ज़िले तकमील तक पहुंचता है।

इसके अलावा तारीख़ ये भी कहती हैं कि हज़रत ख़दीजा (स) की वफ़ात के बाद जब आयशा छः बरस की बच्ची थी तो अबूबकर खुद ही उन्हें लेकर पैग़म्बर (स) के पास पहुंचे और बच्ची को आं हज़रत की ख़िदमत में पेश करते हुए फ़रमाया कि :–

"या रसूलल्लाह (स) आप इससे दिल बहलायें।"

फ़िर जब मुवर्रेख़ीन की अक्सरियत इस बात पर अड़ी हुई है कि आयशा छः साल की उम्र में रसूल (स) के अक़्द में आयीं तो ये सराहत क्यों नहीं की गयी कि उस वक़्त मोहतर्मा की उम्र क्या थीं? आग़ोशे मादर में थीं या उम्र की दो चाल मन्ज़िले तय कर चुकी थीं? तीन चार बरस की बच्ची का जमाले पुरअनवर क्या होगा? इसे सिर्फ़ अल्लामा मुहद्दिसे देहेल्वी की अक़ीदत ही समझ सकती है।

इन तमाम अक़्ली दलीलों के बावजूद अक़ीदतमन्दाने आयशा इस हदीस को दुरूस्त समझे और अपनी हठधर्मी पर क़ायम रहें तो किसी को क्या एतराज़ हो सकता है। हम तो इतना जानते हैं कि किसी की तस्वीर सिर्फ़ उसकी ख़ूबियों और अच्छाईयों की आईनादार नहीं होती बल्कि बुरे लोगों और मुजरिमों की पहचान के लिए भी काम आती है।

हज़रत आयशा की मिज़ाजी कैफ़ियत

मनचली, रंगीन मिज़ाज और शैक़ीन औरतों की सिफ़त में हज़रत आयशासरे फेहरिस्त हैं। रसूले ऐसे शाइस्ता और मोहज्ज़ब शख़्स के घर में आने के बाद भी नाच, रंग गाना, बजाना और खेल कूद, आपका महबूब तरीन मशग़ला था। जैसा कि बुख़ारी मुस्लिम, मिशक़ात और तिर्मिजी वग़ैरह की रवायतों से साबित है।

अहलेबैत (अ) से दुशमनी और पैग़म्बर की दीगर अज़्वाज़ से रश्क़ो हसद और नफ़रतों कुदूरत आपकी तीनत में रवां–दवां थी। आपकी मुतहर्रिको मुज़तरिब तबीअत, शरफ़ो मन्ज़िलत और बुजुर्गी–व–बरतरीका आसमान छूने के लिए हर लम्हा बेचैन रहती थी। नख़वत, गुरूर और खुदपरस्ती का ये आलम था कि अपने आगे किसी की कोई अहमियत नहीं समझती थीं।

उनहें सिर्फ़ अपने मैके वाले और रिश्तेदारों का ख़्याल रहता था। और उन्हीं पर जान छिड़कती थीं। मिजाज़ में चिड़चिड़ापन भी था। जिसकी वजह से बात–बात पर पैग़म्बर और उनकी अज़्वाज़ से लड़ाई झगड़ा, तक़रार तू तू मैं मैं, और मारपीट हुआ करती थी, ग़ीतब और चुग़लख़ोरी की आदत से मजबूर थीं। फ़ितरत में नफ़ासत पसन्दी और खुदनुमाई थी। इसलिए अपने बनाव सिंघार और अराइशों ज़ेबाइश का ख़्याल रखती थीं और खुशबू में बसे हुये ज़र्दो सुर्ख़ कपड़े ज़्यादा पहनती थीं ताकि शौहर की तवज्जो आपकी भरपूर जवानी पर हमावक़्त मरकूज़ रहे।

पार्टी बन्दी

हज़रत आयशा के जज़बए हसद ने अज़्वाजे रसूल (स) में इफ़्तिराकों इख़तिलाफ़ पैदा करके उन्हें बाक़ायदह दो पार्टियों में तक़सीम कर दिया था। एक पार्टी की क़यादत मुअज़्ज़मा ख़ुद फ़रमाती थीं, जो रसूलल्लाह (स) की परेशानी और ईज़ारसानी का सामान मुहैय्या करतीं थी, और दूसरी पार्टी को नुमाइन्दह हज़रत उम्मे सलमा थीं जो पैगम्बर की हमदर्द ग़मगुसार, मोईनो मददगार दुख सुख की साथी और अहलेबैत(अ) की हामी व हमनवा थीं!

अल्लामा अब्दुल वहाब शेरानी ने अनस से रवायत की है कि रसूलल्लाह(स) की बीवियों में दो पार्टियां थी,एक पार्टी में आं हज़रत की और बीवियां थी।[1] मिस्री मुअर्रिख़ अब्बास महमूद उक़ाद फ़रमाते हैं :–

तमाम बीवियों में हज़रत उम्मे सलमा (र) ही हज़रत आयशा का ख़ुल्लम ख़ुल्ला मुक़ाबला किया करती थीं चूंकि रसूलल्लाह (स) उनकी तबीअत और सरिश्त से अच्छी तरह वाक़िफ़ थे इसलिए उनसे बहुत अच्छा सुलूक किया करते थे। हज़रत आयशा को ये देखकर बहुत तकलीफ़ हुआ करती थी। चुनांचे वो बयान करती है कि एक दिन रसूलल्लाह (स) मेरे पास तशरीफ़ लाये तो मैंने उनसे कहा :–

आप सारा दिन कहां रहते हैं?

आपने जवाब दिया :– हुमैरा, मै उम्मे सलमा के पास था।

मैंने कहा न मालूम उम्मे सलमा के पास आपको क्या मिलता है?

हुज़ूर (स) ये सुनकर मुस्कुराये और ज़बान से कुछ नहीं कहा, फिर मैंने कहा या रसूलल्लाह (स) ये तो बताइये कि अगर दो घाटियां हो, एक घाटी बंजर हो जिसमें का सब्ज़ह जानवरों से महफ़ूज़ भी वो तो आप किस घाटी में सैर करना पसन्द करेंगे? हुज़ूर (स) ने जवाब दिया। सरसब्जों शादाब घाटी में। तब मैंने कहा कि मेरा रूतबा तमाम

---

1. कशफुल ग़म्मा :– ज. 2 स. 73

बीवियों में सबसे बुलन्दतर है क्योंकि मेरे सिवा कोई कुंआरी औरत आपके अक़्द में नहीं आई ये सुनकर रसूलल्लाह (स) दोबारह मुस्कुरा दिये।[1]

आयशा कितनी ज़बरदस्त कुंआरी थी? इसकी तफ़सील "शादी" के उनवान से रक़म हो चुकी है। बहरहाल, इसी रवायत को बुख़ारी ने दूसरे अन्दराज़ से तहरीर फ़रमाया है। वो लिखते हैं :–

"आयशा ने आं हज़रत से कहा :–

"या रसूलल्लाह! आप एक जंगल में जाए और वहां एक दरख़्त देखें जिसको ऊँट चर गये हों। फिर एक (दूसरा) दरख़्त देखें जिसमें किसी ने न चरा हो तो आप अपने "ऊँट" को किस दरख़्त में चरायेंगे"? आपने फ़रमया, उस दरख़्त में जिसे किसी ने न चरा हो।[2]

इस लग़ो, मोहमल और मज़हका ख़ेज़ रवायत के रावियों को हज़रत आयशा की ग़ैरत ने शायद ये नहीं बताया कि उनकी इस बेहूदा और ग़ैर मुहज़्ज़ब गुफ़्तुगू का पैग़म्बर की मुहज़्ज़ब सरिश्त पर क्या रद्देअमल हुआ? यानी इस गुफ़्तुगू के बाद, सरकारे दो आलम आपकी सरसब्ज़ो शादाब घाटियों की सैर से लुत्फ़ अन्दाज़ हुए या नहीं? उनहोंने अपने ऊँट को आपकी "चराहगाह" में चराया या नहीं?

खुदा नख़्वास्ता, मुअज़्ज़मा कहीं इस अम्र की वजाहत फ़रमा देतीं तो बुख़ारी ऐसे न जाने कितने अक़ीदतमन्द मुद्दीसीनों मुवर्रेख़ीन अजूबा समझ कर उसे भी अपनी किताबों की जीनत बना लेते। और दुश्मनाने इस्लाम को पैग़म्बर (स) पर अंगुश्त नुमाई का एक मौक़ा और फ़राहम हो जाता।

मेरे नज़दीक इस रवायत की काई असलियत या अहमियत नहीं है क्योंकि इससे हज़रत आयशा की बेग़ैरती और बेहयाई का पता चलता है।

---

1. आयशा उक़ाद, तरजमा मुहम्मद अहमद, स. 39
2. बुख़ारी :– ज. 3, स. 21, किताबुन निकाह :– स. 68, 69

अहलेबैत(अ) से आयशा की अदावत

हज़रत आयशा और अहलेबैत के दर्मियान अदावत का सिलसिला मासूमए कौनेन हज़रत फ़ात्मा ज़हरा सलामुल्लाहे अलैहा से शुरू होता है। जिनकी हमागीर अज़्मतो तौक़ीर आयशा के दिल में कांटे की तरह खटकती थीं। चुनांचे अंग्रेज़ मुवर्रिख़ "कोर्ट फ़्रेशलर आलमानी" अपनी किताब "आयशा बांद अज़ पैग़म्बर (स) में लिखता है :–

"जब हज़रत आयशा का रिश्ता पैग़म्बरे इस्लाम से तय हो गया और ये ख़बर गर्म हुई कि वो रसूले ख़ुदा (स) की बीवी होने वाली है तोउन्हें हज़रत फ़ात्मा ज़हरा (स) से इसलिए रश्क़ पैदा हो गया कि हज़रत रसूले ख़ुदा उन्हें इस क़दर चाहते क्यों है? उनसे इतनी मुहब्बत क्यों करते हैं? रावी कहता है कि मुझे यक़ीन है कि रोज़े अव्वल ही से आयशा के दिल में अली (अ) और फ़ात्मा (स) की तरफ़ से अदावत पैदा हो गयी थी।"[1]

आलमानी की ये बात इसलिए क़ाबिले क़ुबूल और क़रीने क़यास है कि पैग़म्बरे इस्लाम (स) ने हज़रत ख़दीजा (र) के इनतिक़ाल के बाद आयशा से अक़्द किया और उन्हें अपने घर लाये हज़रत फ़ात्मा ज़हरा(स) बहरहाल हज़रत ख़दीजा (र) की इकलौती बेटी थी, और ये मुशाहिदा है कि जब किसी लड़की की माँ दुनिया से रूख़सत हो जाती है, और उस लड़की का बाप किसी दूसरी औरत से शादी करके उसे अपने घर में ले आता है तो उस लड़की और औरत के दर्मियान कशीदगी या तनाव का पैदा हो जाना एक फ़ितरी अम्र है क्योंकि बाप का रुजहानों मैलान उस औरत की तरफ़ होता है, और लड़की उस अजनबी औरत की तरफ़ अपने बाप के रुजहानों मैलान को उसी तरह ना पसन्द करती है जिस तरह वो अपनी माँ की सौतन को। लिहाज़ा

1. आयशा बाद अज़ पैगम्बर :– स. 49-54

इन हालात में आयशा की तरफ़ से हज़रत फ़ात्मा का दामन कश होना ताज्जुब खे़ज़ नहीं हो सकता, बल्कि ताज्जुब खे़ज हज़रत आयशा का वो तर्जे अमल है जो अपने अज़ीम शैहर की अज़ीम बेटी की क़दरो मन्ज़िलत से वाकि़फ़ होने के बावजूद उसकी दिल जुई कर सका न प्यार दे सका और न उसे अपना सका।

तारीखे़ शहिद है कि सरवरे क़ायनात ने अपनी मरहूम बीवी की इस वाहिद निशानी फ़ात्मा (स) की जो ताज़ीमो करीम की उसकी मिसाल नहीं मिलती। जब सैय्यदए (स) आलमिया आपकी खि़दमत में तशरीफ़ लाती तो आप उन्हें देखते ही ताज़ीम के लिए खड़े हो जाते और उन्हें अपनी मसनद पर जगह देते। शायद ही किसी बाप ने अपनी बेटी की ऐसी इज़्ज़तों तौक़ीर की हो जैसी की पैग़म्बर ने की। चुनांचे आपने एक मरतबा नहीं, बार–बार एक मक़ाम पर नहीं, मुख़तलिफ़ मक़ामात पर, हर ख़ासो आम के सामने बिल एलान ये फ़रमाया कि :–

फ़ात्मा (स) तमाम औरतों की सरदार हैं[1]

फ़ात्मा मरयम बिन्ते इमरान का जवाब है।[2]

फ़ात्मा जब मौकि़फे हिसाब से गुज़रेंगी तो एक मुनादी निदा देगा किऐ हिसाब वालों अपनी आंखें बन्द कर लो ताकि फ़ात्मा (स) बिन्ते मोहम्मद (स) गुज़र जायें।[3]

फ़ात्मा (स) मेरे जिस्म का टुकड़ा हैं, जिसने इन्हें अज़ीयत दी, उसने मुझे अज़ीयत दी।[4]

इस कि़स्म की बातें आयशा के कीना–व–एनाद में इज़ाफे का बाइस होती। सौतापे की जलन ये गवारा न कर सकती कि पैग़म्बर सौत की दुखतर को ये मरतबा दें इस तरह चाहें कि उसे देखते ही ताज़ीम के लिए खड़े हों। अपनी मसनद पर जगह दें और सैय्यदते

---

1. स. 6, स. 219
2. ज. 6, स. 221
3. मुसदतरक हाकिम :– ज. 3, स. 153-156
4. कन्जुल आमाल :– ज. 6, स. 240 असदुल ग़ाबा, तबक़ात, इस्तेयाब वग़ैरह

निसाईल आलमीनी कहकर तमाम दुनिया की औरतों पर उसकी फौक़ियत को ज़ाहिर करें।

तारीख़ से निशानदही भी हो जाती है कि हज़रत अबूबकर ने रसूलल्लाह से आयशा की शादी इस ग़रज़ इस ख़्वाहिश इस आरज़ू और इस तमन्ना के तहत की थी कि उनकी बेटी के बत्न से और पैग़म्बर के नुतफ़े से जो बच्चा होगा वो रसूल का जानशीन और वारिस होगा। खलीफ़तुल मुस्लिमीन बनेगा और तमाम बेलाहे इस्लामी पर उसकी हुकूमत होगी, और यक़ीन है कि ख़ुद आयशा भी यही ख़्वाब देख रही थी चुनांचे इब्तिदा में जब वो रसूल के घर में ब्याह कर आयीं तो अपने साथ उमंगों, आरज़ूओं, तमन्नाओं और ख़ुशियों का एक तूफ़ान लेकर आयीं, और आपका रवैया भी मियाना रहा। लेकिन कुछ अर्से के बाद जब मारिया क़ब्तिया के बत्नसे इब्राहीम (अ) की विलादत हुई और उनहें इस बात का एहसास हुआ कि वो अक़ीमा (बांझ) हैं तो उनका सारा ख़्वाब हवा में उड़ गया। उमंगो, आरज़ूओं और तमन्नाओं का आलीशान ख़्याली क़स्र एक ही झटके में जमीन दोज़ हो गया। अरमानों पर ख़ाक और ख़ुशियों पर ओस पड़ गयी। जज़्बात सर्द पड़ गए, ख़्यालात गुम हो गये, तसव्वुरात धुंवा होगये और जज़्बए रश्को हसद पर भरपूर जवानी आ गयी।

अल्लाम इब्ने सअदे वाक़िदि लिखते हैं कि :–

"अज़्वाजे रसूल पर इब्राहीम की ख़बर बार हुई और जब उन्हें इत्तिलाअ मिली कि इब्राहीम पैदा हुए हैं तो शदीद क़लक़ हुआ।[1]

अज़्वाजे रसूल में इस ख़बर से किस–किस पर बिजली गिरी होगी? इसका फ़ैसला हर वो शख़्स कर सकता है जिसकी नज़र इस्लाम की तारीख़ पर है। हम भी ये वज़ाहत कर चुके हैं कि हज़रत आयशा ने अज़्वाज को दो पार्टियों में तक़सीम कर दिया था और एक पार्टी की क़यादत ख़ुद फ़रमाती थीं जिसमें हफ़सा सौदह और सफ़ीया शामिल थीं। लिहाज़ा जो लोग अबूबकर और आयशा के मक़सद से

---

1. तबक़ात इब्ने सअद :– ज. 1, स. 86

बाख़बर हैं वो फौरन कह देंगे कि इस खबर से आयशा और उनकी पार्टी की बीवियों पर ही बिजली गिरी होगी।

हज़रत आयशा ख़ुद फ़रमाती हैं :–

"मारिया की तरफ़ से रश्क़ो हसद का जज़्बा मेरे दिल में था, वो किसी दूसरी औरत से नहीं था। क्योंकि मारिया बेहद ख़ूबसूरत और हसीन थी। चुनांचे जब हुज़ूर (स) मारिया के पास जाते तो हम पर बहुत शाक़ गुज़रता।"[1]

और ये बयान भी आयशा ही का है कि जब इब्राहीम पैदा हुए तो रसूलल्लाह (स) उन्हें मेरे घर लाये और मुझसे फ़रमाया कि देखो, ये बच्चा मुझसे कितना मुशाबह है मैंने जलकर कहा, मुझे तो कोई मुशाबेहत नज़र नहीं आती।

रसूलल्लाह (स) ने फ़रमाया :–

"क्या तुम ये नहीं देखती कि ये कितना तन्दरूस्त है और इसका रंग कितना गोरा है।"

"मैंने जवाब दिया कि जो बच्चा बकरी का दूध पीकर पलेगा वह ऐसा ही होगा।"[2]

औरत के लिए संगदिल होना उसके निसवानी वक़ार की पेशानीपर बदनुमा दाग है। आयशा ने रसूल (स) के जज़्बात का भी कुछ पासो लिहाज़ न किया और उल्टे जली कटी सुनाने लगीं, दिल ही दिल में इस अन्दाज़ से कोसा कि डेढ़ ही साल की उम्र में इब्राहीम इस दुनिया से उठ गये। और 10 हिजरी में आपका इन्तिक़ाल हो गया यानी आयशा की नज़र पैग़म्बर के इस नूरे नज़र को खा गयीं। शायद इब्राहीम का क़ुसूर ये था कि वो आयशा के बत्न से पैदा होने के बजाय मारिया के बत्न से क्यों पैदा हो गये?

---

1. तबक़ात :– ज. 8, स. 153
2. आयशा बाद अज़ पैग़म्बर स. 49-54

मुवर्रेख़ीन का कहना है कि जिस दिन इब्राहीम का इन्तिकाल हुआ, और रसूल अल्लाह (स) उन्हें सिपुर्दे ख़ाक कर चुके तो देर तक क़ब्र पर खड़े होकर आंसुओं से रोते रहे मगर आयशा पर इस हादसे का कोई असर नहीं हुआ।

जब मारिया और इब्राहीम से आयशा के रश्क़ो हसद और ख़ुसूमतो अदावत का ये हाल था तो रसूल (स) की उस बेटी को मोहब्बत की नज़र से क्यों कर देखतीं जिसका एहतराम हुज़ूर (स) ख़ुद करते हों, जिससे बेपनाह मोहब्बत रखते हों, जिसको मुबाहिला में नुबुव्वत का गवाह और रिसालत का शहिद बनाकर ले गये हों, जिसको ख़ातूने जन्नत, शफ़ी अए महशर और जिसे सैय्यदते निसाइल आलमीन कहा हो। जिसे उम्मे अबीहा का लक़ब मरहमत फ़रमाया हो और जो सूरए कौसर की तफ़सीर और कुफ़्फ़ारे मक्का के तानों का जवाब बनकर आई हो, और जिसकी गोद में आने वाले मासूम बच्चे इमामे हसन और इमामे हुसैन उम्मते मुस्लिमा के रहबर हों जिनके बारे में पैग़म्बर (स) ने फ़रमाया हो कि ये दोनों जवानाने जन्नत के सरदार हैं और जिन्हें रसूले अकरम अपना फ़रज़न्द कहें।

इसके बरअक्स आयशा की गोद औलाद से ख़ाली थी, और मां बन्ने की ख़्वाहिश ने अपने भान्जें के नाम पर अपनी कुन्नियत "उम्मे अब्दुल्लाह" रखकर दिल को समझा लिया था, लेकिन इस एहसास की आग में मुअज़्ज़मा का वजूद हर वक़्त सुलगता रहता था कि अगर ख़ुद उनके बत्न से कोई औलाद होती तो वो हस्नैन (अ) के बजाय रसूल अल्लाह की मोहब्बतो शफ़क़त का मरकज बनती। इस उधेड़बुन नें हज़रत फ़ात्मा ज़हरा (स) की तरफ़ से आयशा के दिल में वो नफ़रत पैदा कर दी थी कि उनका बस चलता तो मासूमा का गला ही घूंट देतीं। मगर वो मजबूर थीं। और सैय्यदह (स) के ख़िलाफ़ लगाई बुझाई किया करतीं लेकिन इसके बावजूद वो रसूल (स) की तवज्जोहात को फ़ात्मा (स) की तरफ़ हटाने में कामयाब न हो सकीं और कुदरत उनके मनसूबों को ख़ाक में मिलाती रही।

इस रन्जिश, कशीदगी और आदवत का तज़किरह हज़रत अबूबकर

के कानों में भी पहुंचता रहता था जिससे वो दिल ही दिल में पेचोताब खाया करते थे। मगर उनके बनाये भी कुछ न बनती। सेवा इसके कि उनकी जबानी हमदर्दियां अपनी बेटी के साथ होती थीं। यहां तक कि रसूल (स) इस दुनिया से रूख़सत हुए और हुकूमत की बागडोर उनके हाथों में आयी। अब मौक़ा था कि वो जिस तरह चाहते इन्तिक़ाम लेते जो तशद्दुद चाहते रवा रखते। चुनांचे उन्होंने पहला क़दम ये उठाया कि जनाबे फ़ात्मा ज़हरा (स) को विरासत से महरूम कर देने के लिए पैग़म्बरों के विर्से की नफ़ी कर दी। और ये फ़रमाया की....... अम्बियान क़िसी के वारिस होते हैं और न उनका कोई वारिस होता है। बल्कि उनका तरका हुकूमत की मिल्कियत होता है। इस हादसे से जनाबे सैय्यदा इतना मुतास्सिर हुई कि उन्हों ने अबूबकर से बोलना छोड़ दिया, और इन्ही तास्सुरात के साथ दुनिया से रूख़सत हो गयीं। इस मौक़े पर भी आयशा ने अपनी रविश न बदली और ये तक गवारा न किया कि उनके इन्तिक़ाले पुरमलाल पर अफ़सोस का इज़हार करतीं।

चुनांचे इब्ने अबिल हदीद ने तहरीर फ़रमाया है कि :–

"जब हज़रत फ़ात्मा ज़हरा (स) ने रेहलत फ़रमाइ तो तमाम अज़्वाजे पैग़म्बर (स) बनी हाशिम के यहां जमा हो गयीं और आयशा नहीं आयी और ये ज़ाहिर किया कि वो बीमार हैं। उनकी तरफ़ से हज़रत अली (अ) तक जो अल्फ़ाज़ पहुंचे हैं उनसे मसररतो शादमानी का पता चलता है।"[1]

अस्मा बिन्ते उमैस से एक रवायत ये भी है कि :–

जब फ़ात्मा ज़हरा (स) की वफ़ात हो गयी तो हज़रत आयशा तशरीफ़ लायीं मैंने उनको हुजरे में दाख़िल होने नहीं दिया तो उन्होंने ख़फ़ा होकर अपने वालिद अबूबकर से शिकायत की। अबूबकर आये और उन्होंने वज्ह दर्याफ़्त की कि आयशा को तुम बिन्ते रसूल (स) के पास क्यों नहीं जाने देतीं? मैंने कहा :–

---

1. शरह :– इब्ने आदिल हदीद :– ज. 2, स. 459

"ख़ुद बिन्ते नबी (स) ने इस अम्र की मुमानिअत फ़रमाई है कि मैं इन्हे, उनके जनाज़े पर न आने दूं।"[1]

अस्मा बिन्ते उमैस से वरवी ये रवायत पहली रवायत से ज़्यादा क़रीने क़यास और क़ाबिले क़ुबूल है, क्योंकि मुअज़्ज़मा उस वक़्त अबूबकर की बीवी और आयशा की सौतेली माँ थी। और फ़िर ये कि आप मौक़े पर मौजूद थीं।

इस रवायत से यह भी ज़ाहिर है कि मासूमए–कौनेन (स) से आयशा का एनाद इस हद तक था कि आपने अपने जनाज़े पर उन्हें आने से रोक दिया।

बहरहाल जब पैग़म्बर (स) की बेटी से आयशा का एनाद इस इन्तिहा पर था तो जिसका दामन मासूमा से वाबस्ता हो वो किस तरह उनकी दुशमनी से महफ़ूज़ रह सकता था। और जिसके बारे में आयशा पैग़म्बर के ये इरशाद बराबर सुनती रहती थी कि :–

अली (अ) का दोस्त मोमिन और इनका दुश्मन काफ़िर है।[2]
मैं इल्म का शहर हूं और मैं अली (अ) उसका दरवाज़ा।[3]
अली (अ) मुझसे है और अली से हूं।[4]
अली (अ) मेरे बाद जुमला मोमिनीन के वली हैं।[5]
अली (अ) की दोस्ती गुनाहों को खा जाती है।[6]
अली (अ) और मैं एक ही नूर के दो टुकड़े हैं।[7]
अली की तरफ नज़र करना इबादत है।[8]
अली (अ) का ख़ून मेरा ख़ून और अली (अ) का गोश्त मेरा गोश्त है।[9]

---

1. ज़खाएरूल उक़बा मुहिउद्दीन बुखारी :– स. 53, 1356 हिजरी, इसतेयाबा ज. 2, स. 772
कौकबे दुररी :
2. स. 178.
3. स. 196. 4. स. 155
5. स. 154. 6. स. 157
7. स. 152. 8. स. 161
9. स. 263

अली (अ) जन्नत और दोज़ख़ के तक़सीम करने वाले हैं।[1]

अली (अ) हक़ के साथ हैं और हक़ अली के साथ है।[2]

मेरे बाद जब फ़ित्ना पैदा हो तो उस वक़्त अली (अ) की इताअत वाजिब है।[3]

अमीरूल मोमिनीन के इन फ़ज़ाइलों मनाक़िब के साथ रसूले अकरम (स) ने यह भी फ़रमायाः–

अली (स) पर ख़ुरूज करने वाला काफ़िर है।[4]

जंगे जमल के बाद जब हज़रत आयशा से पूछा गया। कि इस हदीस की मौजूदगी में आपने अली (स) पर ख़ुरूज क्यों किया? तो आपने फ़रमाया कि उस वक़्त मुझे ये हदीस याद नहीं रही।

पैग़म्बरे इस्लाम (स) ने अली (स) ,फ़ात्मा (स), हसन (अ), हुसैन (अ) से कुदूरतों आदवत रखने वालों को "हरामी" भी क़रार दिया।[5] लेकिन चूंकि हज़रत आयशा को "उम्मुल मोमिनीन" का मरतबा हासिल है इसलिए मैं उनके बारे में कुछ कहने का हक़ नहीं रखता मगर ये कहे बग़ैर भी नहीं रह सकता कि हज़रत अली (अ) फ़ात्मा (स) इमामे हसन (अ) और इमामे हुसैन (अ) के खिलाफ़ आपका मुख़ालिफ़ाना रवैया तारीख़ की नज़रों से पोशीदह नहीं है। चुनांचे इस ज़ेल में बुख़ारी का कहना है कि :–

"उम्मुल मोमिनीन हज़रत आयशा को हज़रत अली से इस क़दर दुशमनी थी कि वो उनका नाम अपनी ज़बान पर लाना पसन्द नहीं करती थी।"[6]

मुवर्रिख़े इस्लाम अल्लामा एहसान उल्लाह गोरखपूरी ने इस हक़ीक़त को यूं बयान किया है :–

---

1. स. 167.
2. स. 166.
3. स. 168.
4. स. 186, मनक़बत :– स. 138
5. रियाजुन नज़रह :– ज. 2 स. 189
6. बुख़ारी :– ज. 1 स. 81, मिस्र

"आं हज़रत (स), हज़रत अली (अ) और हज़रत फ़ात्मा (स) पर अज़हद फ़रेफ़्ता थे आयशा को बइक़्तिज़ाए इनसानियत इसका रश्क़ था और ये रश्क मुख़्तलिफ़ वाकिआत से नफ़रत की हद तक पहुंच गया था।"[1]

अल्लामा मौसूफ़ के "बइक़तिजाए इनसानियत" से मुझे क़तई इत्तिफ़ाक़ नहीं है क्योंकि रश्को हसद हर इन्सान में नहीं होता बल्कि बाज़ लोगों की सरिश्त में फ़ितरतन हासिदाना उन्सूर पाया जाता है और रश्क़ उसी हासिदना उन्सूर का हिस्सा है। इसके अलावा अल्लामा को ये सराहत भी फ़रमाना चाहिए था कि "वो मुख़्तलिफ़ वाक़िआत" क्या थे जो आयशा की मुख़ालिफ़त को हवा देते रहे और उनके ज़ज्बए नफ़रत को उभारते रहे? जिसकी वज्ह से आप नफ़रत के समन्दर में ग़र्क हो गयीं।

तारीख़ बताती है कि इन वाक़िआत में सबसे अहम वाक़िआ "वाक़ेयए अफ़क़" है जिसके ज़ेल में पैग़म्बरे से हज़रत अली (अ) ने ये फ़रमाया कि "आयशा आपकी जूती का तसमा हैं" इस छोड़िये और तकाल देकर अलग कीजिए।

ज़ाहिर है कि हज़रत आयशा ने अपने बारे में जब हज़रत अली (स) के ये कल्मात सुने होंगे तो बेक़रारी के बिस्तर पर करवटें बदलने लगीं होंगी, और उनके दिल में अमीरूल मोमिनीन के ख़िलाफ़ नफ़रतों अदावत का जज्बा इन्तिहाई शिद्दत से उभरा होगा। इसके अलावा ऐसे भी वक़ेआत पेश आते रहे कि पैगम्बरे इस्लाम (स) ने बाज़ उमूर में उनके वालिद अबूबकर के मुक़ाबले में हज़रत अली को इम्तियाज़ी और खुसूसी मरतबा अता किया और उनके मदारिज़ को नुमाया और बलन्द किया जैसा सूरए बराअत की तबलीग के मौक़े पर अबूबकर को माजूल करके उन्हें वापस बुला लेना और हुक्में इलाही के तहत अज़ीम ख़िदमत हज़रत अली के सिपुर्द कर देना। या इसी तरह मस्जिदे नब्वी में खुलने वाले तमाम दरवाज़ों को (जिनमें अबूबकर का दरवाज़ा भी शमिल था) बन्द

---

1. तारीखे इस्लाम :– स. 285

कर देना और सिर्फ हज़रत अली के घर का दरवाज़ा खुला रहने देना।

आयशा को अपनेबाप के मुक़ाबले में हज़रत अली का तफ़व्वुक़ क्यों कर गवारह होता। चुनाचें जब भी कोई इम्तियाज़ी सूरत पैदा होती तो मुअज्ज़मा उसका डटकर मुक़ाबला करतीं और उसे मिटाने में काई कसर न उठा रखतीं।

चुनाचें उनकी इस जिद्दो जहेद का अन्दाज़ा उस वाक़ेए से होता है जब पैग़म्बर (स) ने वक़्ते आख़िर असामा का लशकर तरतीब दिया और तमाम अनसारों मुहाजिरीन के साथ अबूबकरो उमर को भी उस लशकर में शामिल होकर जाने का हुक्म दिया, और जब ये लशकर इन दोनों हज़रात के इन्तिज़ार में हुदूदे मदीना से बाहर निकल कर ख़ैमाज़न हुआ तो आयशा की तरफ़ से उन्हें ये पैग़ाम मिला कि आं हज़रत की हालत इन्तिहाई नाज़ुक है लिहाज़ा लशकर को पेशक़दमी करने के बजाय पलट आना चाहिए, शायद उनकी नज़रों ने ये भांप लिया था कि मदीने को मुहाजिरीन, अनसार और अकाबिरी ने सहाबा से ख़ाली कराने का मक़सद सिर्फ़ ये हो सकता है कि वफ़ाते रसूल (स) के बाद ख़िलाफ़त के मसअले में हज़रत अली से कोई शख़्स वज़ाओ मुज़ाहमत न कर सके और किसी शेरिश अंगेज़ी के बग़ैर ख़िलाफ़त के मनसब पर आसानी से फ़ाइज़ हो सके।

चुनांचे असमा का लशकर हज़रत आयशा के इस पैग़ाम पर अफ़्रा–तफ़्री का शिकार हुआ। जब पैग़म्बर ने ये देखा तो असामा को फ़िर लशकर ले जाने की ताक़ीदकी और ये तक फ़रमा दिया कि जो शख़्स असमा के लशकर से तख़ल्लुफ़ करेगा। उस पर ख़ुद की लानत होगी। आसमा लशकर के साथ रवाना हो गये मगर उन्हें फ़िर पलटाया गया जबकि आयशा को ये मालूम था कि ख़ुदा और रसूल की नाफ़रमानी कुफ़्र की दलील है। ग़रज़ कि हुज़ूरे अकरम (स) के मरज़ में शिद्दत पैदा हुई और लशकर का मामला आगे न बढ़ सका इस कार्रवाई के फ़ौरन बाद आयशा ने बिलाल के ज़रिये अपने वालिद अबूबकर को ये पैग़ाम भेजा कि नमाज़ में रसूल की जगह वो इमायत के फ़राइज़ अन्जाम दें ताकि उनके लिए ख़िलाफ़त का रास्ता हमवार हो सके। और

यही वो हर्बा था जिसने रसूल के बाद अबूबकर को ख़लीफा बना दिया। इसके बाद भी ख़िलाफत के मसअले में उम्मुल मोमिनीन की दर परदह कोशिश यही रही कि वो हज़रत अली (अ) के हाथों तक न पहुंच सके लेकिन क़त्ले उस्मान के बाद हालात ने इस तरह करवटें ली कि उम्मते मुस्लिमा हज़रत अली (अ) के हाथ पर बैअत के लिए मजबूर हो गयीं। आएशा उस मौक़े पर मक्के में थीं, जब उन्होंने हज़रत अली (अ) के हाथो पर मुसलमानों की बैअत का हाल मालूम हुआ तो आपे से बाहर हो गयीं। आंखों से शरारे बरसने लगे। ग़ैज़ो ग़जब ने मिज़ाज़ में बरहमी पैदा कर दी और नफ़रतों अदावत ने वो शिद्दत इख़्तियार की, कि जिस ख़ून के मुबाह होने का फ़तवा दे चुकी थीं उसी के क़िसास का सहारा लेकर उठ खड़ी हुई और खुल्लम खुल्ला हज़रत अली के साथ जंग का एलान कर दिया। जिसके नतीजे में ऐसा कुश्तो ख़ून हुआ कि बसरा की ज़मीन सुर्ख़ हो गयी और इफ़तिराक़ का दरवाज़ा हमेशा के लिए खुल गया। लेकिन इसके बाद भी हज़रत आयशा के दिल में अदावत की ये आग मुसलसल भड़कती रही, यहां तक कि जब हज़रत अली की शहादत वाक़े हुई तो आपने शुक्र का सजदह किया, मसर्रतो शादमानी का इज़हार फ़रमाया और तरबिया अशआर पढ़े जिस पर ज़ैनब बिन्ते सलमा ने आपको टोका और कहा, ये क्या ग़ज़ब कर रही है, तो आपने फ़रमाया कि मैं तो भूल गयी थी।

हज़रत की शहादत के मौक़े पर हज़रत आयशा की ये भूल हश्र के दिन उन्हें किस तरफ़ ले जायेगी, इसके बारे में कोई कुछ नहीं कह सकता, सिर्फ़ अन्दाज़ह मुम्किन है।

आयशा की यही नफ़रतों अदावत हज़रत अली (अ) और हज़रत फ़ात्मा (स) से एक क़दम आगे बढ़कर उनके फ़रज़न्दो इमामे हसन (अ) और इमामे हुसैन (अ) तक इस अंदाज़ से पहुंची कि आप उनसे परदह करने लगीं।[1] ग़ालिबन नवासों से "नानी जान" का परदह इस्लामी शरियत कावो पहला, आख़िरी और वाहिद परदह है जिसकी मिसाल ज़माना पेश करने से क़ासिर है।

---

1. दर मन्सूर सुयूती :– स. 215, तबक़ात इब्ने सअद

तारीख़ें गवाह है कि अपने इन नवासों से नानी जान की अदावत का ये हाल था कि जब इमामे हसन (अ) को मुआविया ने जअदह बिन्ते अशअस के जरिये ज़हर दिलवा दिया और आपकी शहादत वाके़ हो गयी तो मुअज़्ज़मा ने आपके जनाज़े को रसूल के रौज़े में दफ़्न नहीं होने दिया।[1] और हंगामा बरपा करने की गरज़ से मरवाज बिन हकम और सईद बिनआस वगैरह के साथ खच्चर पर सवार होकर खुद भी निकल पड़ी। चुनांचे आपकी क़याद में इमामे हसन (स) के जसदे ख़ाकी (पर्थिव शरीर) पर इतने तीर बरसाये गये कि सत्तर तीर जनाज़े में पेवस्त हो गए[2] और मजबूरन इमाम का जनाज़ह "जन्नतुल बक़ीअ" में दफ़्न कर दिया गया।

इसे वाके को शोअरा ने भी नज़्म किया है। किसी शाइर का एकशेर बहुत मशहूर है जिसका तर्जमा ये है :–

"ऐ आयशा! तुम कल ऊँट पर सवार थीं, और आज मैं देखता हूं कि खच्चर पर सवार होकर निकली हो।"

अहलेबैते अतहार से हज़रत आयशा की अदावतो खुसूमत निस्वानी तारीख़ का एक ऐसा अल्मिया हैं जिसकी मिसाल क़यामत तक ज़माना पेश करने से आजिज़ो क़ासिर रहेगा।[3]

---

1. अबुल फिदा :– ज. 2, स. 183
2. मक़ातिलुत तालिबीन :– स. 30, 1307 हिजरी
3. तारीख अबुल फिदा :– ज. 2, स. 183

आयशा की छलांग

रसूलल्लाह सल्लल्लाहो अलैहे व आलेही वसल्लम का ये दस्तूर था कि आप (स) जब किसी सफ़र या मुहिम से पलट कर वापस आते तो सबसे पहले मस्जिद में जाकर दो रकअत नमाज़ अदा करते थे, फ़िर उसके फ़ौरन बाद अपनी ग़मगुसार बेटी हज़रत फ़ात्मा ज़हरा सल्वा तुल्लाहे अलैहा के दौलत सरा पर तशरीफ़ ले जाते उनका हाल मालूम करते, ख़ैरियत दर्याफ़्त करते और उनसे अपने सफर की सरगुज़श्त बयान फ़रमाते। उसके बाद नवासों से दिल बहलाते, उन्हें प्यार करते और कुछ देर वहां आराम फ़रमाते। इन तमाम बातों से फ़रागत के बाद फिर आप (स) उम्महातुल मोमिनीन की तरफ़ मुतवज्जे होते और एक एक के घर जाकर उनकी ख़ैरियत से आगाह होते।

हज़रत आयशा के लिए सरकारे दोआलम सल्लल्लाहे अलैहे व आले ही वसल्लम का ये तौरो तरीक़ा इन्तेहाई तकलीफ़ हद, अज़ीअत, आमेज़ और क़र्बो इज़तिराब का बाइस होता चुनाचें आप (स) अकसरो–बेशतर इस नाक़ाबिले बर्दाश्त तौरो–तरीक़े के बारे में पैग़म्बर (स) से शिकवा शिकायत और "झक–झक बक–बक करती रहती थीं और कभी–कभी तक़रार की नौबत भी आ जाती थी।

ये भी इत्तेफ़ाक़ था कि शहज़ादिये कौनेन (स) और आयशा के घर एक दूसरेसे मुत्तसिल थे, दर्मियान में सिर्फ़ एक दीवार हायल थी, और उस दीवार में एक मुख़तसरसी खिड़की थी जिसका नाम "ख़ोफ़ा" था। आं हज़रत (स) कभी–कभी उसी खिड़की से आयश के घर से हज़रत फ़ात्मा ज़हरा के घर में चले जाते थे और कभी मासूमा के (स) घर से आयशा की तरफ़ आ जाते थे।

निस्फ़े शब से कुछ पहले, एक मरतबा पैग़म्बरे इस्लाम (स) कहीं से तशरीफ़ लाए और हस्बे दस्तूर अपनी बेटी के घर गये। जनाबे फ़ात्मा (स) से गुफ़्तुगू के दौरान हुज़ूर (स) की आवाज़ आयशा के कानों से टकराई। बस फिर क्या था? जवानी की उमंगे करवटें लेने लगी, बिस्तर से उठ कर बैठ गयीं.... ग़ालेबन वो शब आपकी बारी थी इसलिए कुछ

देर तक हुज़ूर (स) के आने का इन्तिज़ार करती रहीं फ़िर न जाने क्यों आप पर यक् बारगी ऐसी जुनूनी कैफ़ियत तारी हो गयी कि आप झपट कर उठीं और "दर्मियानी खिड़की" खोलकर आपने मासूमा (स) के घर में "छलांग" लगा दी और आस्तीने समेट समेट कर फ़ात्मा ज़हरा (स) और सूले अक़रम (स) से लड़ने लगीं।

आयशा की इस नाशइस्ता हरकत पर सैय्यद फ़ात्मा (स) बेहद रंजीदह–व–मुलूल हुई और पैग़म्बर के दिल को भी इन्तेहाई सदमा हुआ। शहज़ादी फ़ात्मा (स) की ख़्वाहिश पर दूसरे ही दिन आं हज़रत (स) ने वो खिड़की बन्द करा दी[1] ताकि आयशा की अचानक छलांग का ख़तरा आइन्दा न रहे।

रसूल (स) का तअक़्क़ुब

पैग़म्बर (स) का ये उसूल मुअय्यन था कि आप अपनी अज़्वाज़ में हर जौज़ा के यहां उसकी बारी की शब इस्तिराहत फ़रमाते थे, कभी–कभी ऐसा भी होता था कि किसी ज़रूरत के तहत या इबादत की ग़रज़ से आपको कुछ देर के लिए बाहर भी जाना पड़ता था, और किसी बीवी की ये मजाल न थी कि वो रसूल (स) के इस फ़ेल पर लबकुशाई कर सके। लेकिन आयशा की बारी में जब आप कहीं गये तो वो ये समझीं कि आं हज़रत (स) मुझे छोड़कर किसी दूसरी बीवी के पास चले गये हैं।

फ़िर आयशा ने क्या तर्जेअमल इख़्तिआर किया? इस ज़िम्न में खुद मौसूफ़ा ने मुख़तलिफ़ लोगों से जो मुख़तलिफ़ बातें की हैं उन्हें हम उन की ही ज़बान में नक़ल कर रहे हैं फ़रमाती है कि :–

"मैंने (अपने बिस्तर पर) एक मरतबा पैग़म्बर (स) को न पाया समझी कि आप किसी कनीज़ के यहां तशरीफ़ ले गये हैं में आपकी जुस्तुजू में निकल पड़ी। देखा कि आप मस्जिद में हैं और फ़रमा रहे हैं कि परवादिगार मुझे बख़्श दें।"[2]

---

1. जज़्बुल कुलूब :– स. 157, "कलकत्ता"
2. मसनद इमाम अहमद बिन हम्बल :– जि. 6 स. 147

ये आपने हेलाल बिन यसाफ़ से फ़रमाया। फ़िर आपने अबू मलीका से फ़रमाया कि :–

"एक रात मैंने पैग़म्बर को अपने बिस्तर पर न पाया, मैं समझी कि वो अपनी किसी बीवी के पास चले गये हैं तलाश में निकली तो देखा कि आप हालते रूकूअ में हैं।"[1]

अबू हुरैरह सेबयान फ़रमाया कि :–

"मैंने एक मरतबा पैग़म्बर को अपने बिस्तर पर न पाया तो इधर उधर ढूंढा मेरा हाथ आपकी तलवार पर पड़ा। आप सजदे में थे और इस्तिग़फ़ार फ़रमा रहे थे।"[2]

मज़कूरह तीनों बयानात में हर बयान की नौइयत मुखतलिफ है जिससे आयशा की सदाक़त का पता चलता है। अब आप मुअज्ज़मा की ज़बानी पूरी हिकायत समाअत फ़रमायें :–

"जब मेरी बारी की वो रात आई जिस रात पैग़म्बर (स) को मेरे पास होना चाहिए था आप तशरीफ़ ले आये रिदा उतारकर रखी जूतियां पैरों के पास ही उतारी, बिस्तर पर अपनी चादर डाली और लेट गये थोड़ी देर बाद आपको यक़ीन हो गया कि मैं सो रही हूं तो चुपके से उठे दोश पर रिदा डाली, नालैन पहनी आहिस्ता से दरवाज़ा खोला और बाहर निकल गये और मैं खामोश सब कुछ देखती रही। फिर मैं भी तेजी से उठी और चादर ओढ़कर पैग़म्बर (स) के तअक़्क़ुब में पीछे–पीछे चल पड़ी आं हज़रत (स) बक़ीअ के क़बरस्तान तक गये और कुछ देर वहां खड़े रहे फ़िर आपने तीन मरतबा अपने हाथ को बुलन्द किया और पलट पड़े। मैं भी वापस हुई पैग़म्बर (स) ने तेज क़दम उठाये ये भी तेज़ क़दमों से चलने लगीं। फिर आप दौड़ने लगे मैं भी दौड़ने लगी और इस क़दर तेज दौड़ी कि उनसे पहले पहुंच कर अपने बिस्तर पर चुपचाप लेट गयी।"

मेरे बाद जब आं हज़रत (स) तशरीफ़ लाये तो उन्होंने मुझसे

---

1. मसनद अहमद बिन हम्बल :– जि. 6 स. 151
2. मसनद अहमद बिन हम्बल जि. 6 स. 201

पूछाः– "ऐ आयशा तुम्हारी सांसे क्यों फूल रही हैं? मैंने कहा नहीं ऐसी तो कोई बात नहीं, उस पर आपने फ़रमाया कि तुम सच सच बताओगी, कि ख़ुदा को बताना पड़ेगा।"

फ़िर मैंने तअक़्क़ुब का सारा क़िस्सा पैग़म्बर (स) से बयान कर दिया तो आपने फ़रमाया है :–

"अच्छा मेरे आगे जो साया था वह तुम थीं।"

मैंने कहा, "हां" उस पर हुज़ूर (स) ने मेरी पीठ पर एक हाथ मारा और फ़रमाया कि :–

"क्या तुम्हें ये गुमान था कि ख़ुदा और उसका रसूल तुम्हारी हक़ तल्फ़ी करेंगे।"[1]

हज़रत आयशा के इन मुख़तलिफ़ बयानात पर ग़ौर करने से हस्बे ज़ेल उमूर का पता चलता है :–

(1) हेलाल बिन यसाफ़, अबूमली का और अबू हुरैरह से बयान क़र्दह रवायतों में रसूल का अमल तज़ाद की मन्ज़िल में हैं, आं हज़रत (स) रूकूअ में थे, सजदे में थे या इस्तिग़फ़ार फ़रमा रहे थे? वल्लाहों आलम, इसकी ज़िम्मेदारी आयशा पर आइद होती है।

(2) आयशा को पैग़म्बर पर भरोसा और इतमीनान नहीं था इसलिए आप आं हज़रत (स) की ख़ुफ़िया निगरानी किया करती थी।

(3) आयशा किसी उलझन का शिकार रहती थीं जिसकी वजह से आपको नींद नहीं आती थी।

(4) आयशा इस तअक़्क़ुब में रसूल के नज़दीक एक "सियाह साया" थी।

---

1. मसनद अहमद ज. 6 स. 221

आयशा पर शैतान

खुद आयशा का बयान है कि :–

"रसूलल्लाह (स) एक रात मेरे पास से उठकर कहीं चले गये तो मुझ पर जुनून तारी हो गया। थोड़ी देर बाद आप वापस आये और मेरे जुनून को देखा तो फ़रमाया।" ऐ आयशा! तुम्हे क्या हो गया है? ये बदगुमानी! मैंने कहा, मैं आप जैसे इन्सान की तलाश क्यों न करूं? रसूल ने फ़रमाया :–

क्या तुम पर शैतान सवार हो गया है?[1]

हज़रत आयशा पर तसकीने नफ़्स का भूत सवार था या किसी और बात का? इसकी सराहत नहीं है। लेकिन इस अम्र में कोई शको शुबहे नहीं है। कि जब उन पर शैतान होता था बल्कि उनके अन्दर हुलूल कर जाता था तो मोहतर्मा से अजीबो ग़रीब हरकते सरज़द होती थीं। जैसे बरतनों को तोड़ना, लिबास का फाड़ना वग़ैरह।

मेरा ख़्याल है कि बदगुमानी और हसद की वजह से शैतान ने आपके क़ल्ब का रास्ता देख लिया था।

तोड़ फोड़

हज़रत आयशा पर जब हसद का इब्लीस सवार होना था तो आप जुनून की हद से गुज़र कर तोड फोड़ पर भी उबर आती थीं। चुनांचे आपकी बारी के दिन अज़्वाजे रसूल (स) में किसी ने अगर कोई अच्छी चीज़ पकाई और रसूल (स) की ख़िदमत में भेजी तो आपने कभी उसके बरतन तोड़ दिये और कभी वो खाना रसूल के सामने से उठाकर फ़िकवा दिया। इमाम मुस्लिम ने आपनी "सहीह" में जनाबे उम्मे सलमा से रवायत की है कि :–

---

1. मसनद अहमद बिन हम्बल ज. 6 स. 115

"उम्मे सलमा पैग़म्बर (स) के पास एक प्याले में खाने की कोई चीज़ लेकर हाज़िर हुई। हज़रत आयशा की नज़र पड़ी उनके हाथ में पत्थर था उस पत्थर से उन्होंने उस प्याले को तोड़ दिया। "पैग़म्बर (स) ने आयशा का प्याला उम्मे सलमा के हवाले कर दिया।[1]

तोड़ फोड़ के बारे में खुद हज़रत आयशा का बयान है कि :–

"मेरी बारी थी, मैंने रसूलल्लाह (स) के लिए खाना पकाया और हफ़सा ने भी उनके लिए माहज़र का इन्तिज़ाम किया। मुझे जब ये मालूम हुआ कि हफ़सा ने भी खाना पकाया है तो मैं खौलने लगी कनीज़ को बुलाया और उससे कहा कि अगर हफ़सा ने रसूल (स) के सामने खाना लाकर रखा दिया है तो जाओ और उसे उठाकर फेंक दो। चुनाचें कनीज़ ने ऐसा ही किया और वो खाना उठाकर फेंका तो बरतन टूट गया। उस पर पैग़म्बर (स) ने हफ़सा से फ़रमाया कि तुम अपने बरतन के तावान में दूसरा बरतन अयाशा से वसूल कर लो।"[2]

ऐसा ही वाक़िआ उम्मुल मोमिनीन सफीया के साथ भी पेश आया। आयशा बयान फ़रमाती हैं कि :–

"रसूलल्लाह(स) मेरे यहां शबपाश थे कि सफ़ीया ने उनके लिए खाना भेजा। मैंने जब कनीज़ को लाते देखा तो मुझपर लर्ज़ा तारीहो गया। मैंने हाथ मारकर प्याला इस तरह उछला कि वो टूट गया और सारा खाना गिरकर बरबाद हो गया। रसूलल्लाह (स) ने मुझे घूरकर ग़ज़बनाक निगाहों से देखा तो मैंने खुशामद की और कहा कि मैं खुदा के रसूल से पनाह मांगती हूं कि आज आप मुझ पर लानत फ़रमायें। पैग़म्बर (स) खुशमगीं नज़रों से मेरी तरफ़ देखा और फ़रमाया कि इस (कुसूर) का तवान अदा कर दो। मैंने पूछा इसका कफ़्फ़ारा क्या होगा? आपने फ़रमाया :– वैसा ही खाना और वैसा ही बरतन।"?[3]

मजकूरह तीनों ख़्याले हज़रत आयशा के तख़रीबकार मिजाज़ की

---

1. सहीह मुस्लिम बाबुल ग़ैरत किताबुल इशरत
2. मसनद अहमद ज. 6 स. 111, कन्जुल आमाल ज. 3 स. 44
3. मसनद अहमद ज. 6 स. 277, सोन्न निसाई ज. 2 स. 148, हाशिया सिरते हलबीया स. 283-284

अक्कासी करती हैं और उनमे तख़रीबकारी का हर पहलू साफ़ और नुमायां है इसलिए मजीद किसी वज़ाहत की ज़रूरत नहीं है।

गालम गलौज

तारीख़ ये बताती है कि हज़रत आयशा वक़्ते ज़रूरत गालम गालौज पर भी उतर आती थी। तबकात इब्ने सअद में है कि :–

हज़रत आयशा और सफ़ीया में गालम गलौज हुई इसकी वजह ये थी कि आयशा ने सफ़ीया पर अपनी बरतरी जतायी थी और इस कदर उन्हें गालियां दी थीं कि वो बैठी रो रही थीं। इतने में हज़रत रसूल (स) तशरीफ़ लाये और आपने सफ़ीया से रोने की वजह दर्याफ़्त की तो सफ़ीया ने कहा कि आयशा और हफ़सा मुझे गालियां देती हैं और बुरा भला कहती हैं पैग़म्बर (स) ने फ़रमाया कि तुमने आयशा और हफ़सा के मुक़ाबले में ये क्यों नहीं कहा कि हारून (अ) मेरे बाप और जनाबे मूसा (अ) मरे चचा हैं।[1]

तिर्मिजी में हज़रत आयशा का बयान है कि मैंने रसूले ख़ुदा से कहा कि सफ़ीया ऐसी है सफ़ीया वैसी है वो पैग़म्बर (स) ने फ़रमाया कि तुमने ऐसी गंदी बात कही है कि अगर समन्दर के पानी में मिला दिया जाये तो सारा पानी गन्दा हो जायेगा।[2]

गुत्थम गुत्था

हज़रत आयशा ने हज़रत सौदह को एक बार ये गुनगुनाते हुए सुना :–

आयशा ने इसका मतलब ये समझा कि सौदह कह रही हैं कि आयशा क़बीलएतैम और हफ़सा कबीलए बनी अदी से है। चुनांचे आप,

---

1. तबक़ात ज. 8 स. 127, मुस्तरक हाकिम ज. 4 स. 29
2. तिर्मिज़ी बेनाबर रवायत ज़रकशी, इजाबा स. 73, मदारेजुन्नुबूवत ज. 2, स. 616

आपे से बाहर हो गयीं और हफ़सा को भी उभारा कि सौदह हम दोनों को ऐसा ऐसा कह रही थीं। हफ़सा ने पूछा.... फ़िर क्या होना चाहिए आयशा ने कहा चलो चले जब मैं सौदह का सर पकड़ूं तो मेरी मदद करना और तमाशा देखना। वो दोनो सौदह के पास आयीं, आयशा ने उनका सर पकड़ा हफ़सा ने मदद की इतने में उम्मे सलमा पहुंच गई उन्होंने सौदा की मदद की। बस फ़िर क्या था, बाज़ात्ता गुत्थम गुत्था शुरू हो गयी। किसी ने पैग़म्बर (स) को जाकर ख़बर की कि जल्दी जाइये और अज़्वाज़ की ख़बर लीजिए। जब पैग़म्बर (स) ने ये हाल देखा तो फरमाया :–

वाय हो तुम पर, ये सब क्या हो रहा है? आयशा ने कहा या रसूलल्लाह (स) क्या आपने इन्हें ये कहते नहीं सुना कि :–

आपने फ़रमाया, वाय हो तुम पर! इससे मुराद तुम्हारे अदी और तैम नहीं है बल्कि इनकी मुराद तमीम के अदी और तमीम के तैम से है।[1]

---

1. इजाबा :– ज़रकशी स. 18,

आयशा की पिटाई

आयशा और रसूले ख़ुदा सल्लल्लाहो अलैहे व आलेही वसल्लम में एक मरतबा किसी बात पर लड़ाई हो रही थी, और आप इस नोक झोंक से परेशान हो चुके थे कि इतने में अबूबकर वारिद हुए। हुज़ूर (स) ने अबूबकर से फ़रमाया कि मैं तंग आ चुका हूं, मुझे आयशा से बचाओ।

पैग़म्बर (स) की ये फ़रियाद सुनकर अबूबकर ग़ैज़ के आलम में आयशा की तरफ बेइख़तियार बढ़े और एक ऐसा हाथ रसीद किया कि वो लहू लोहान हो गयी।[1]

आयशा की इस पिटाई पर पैग़म्बरे इस्लाम (स) दिल ही दिल में यक़ीनन लुत्फ़ अन्दोज़ हुए होंगे। लेकिन चूंकि रहमतुलल्लिआलमीन थे और मोहिसने इनसानियत भी। अज़राहे इन्सानियत आयशा की दिलजूई की ख़ातिर अपने फ़रमाया कि मेरा मक़सद ये नहीं था कि तुम इन्हे इस तरहसे मारो।

बुख़ारी बाबुत्तमीम और मुस्लिम बाबुल क़सम बैनज़ ज़ौजात में है कि कई मरतबा अबूबकर ने उनकी तादीब की।

आयशा पर हज़रत उमर की लानत मलामत

जंगे ख़न्दक़ के मौक़े पर आयशा के दिल में मरदान्गी का जज़्बा बेदार हुआ और उन्हें ये शैक पैदा हुआ कि मैं भी लड़ाई देखूं। चुनांचे आप रसूल से इज़ाजत हासिल किए बग़ैर घर से निकल खड़ी हुई, और मैदाने जंग के क़रीब पहुंच गयीं। रास्ते में देखा कि असहाब आलाते

---

1. तबक़ात इबने सअद :– ज. 8 स. 56

जंग से आरास्ता जोशो ख़रोश में रज्ज़ पढ़ते हुए जा रहे हैं। इतने में आपकी नज़र एक बाग़ पर पड़ी और आप उसके अन्दर चली गयीं। वहां बहुत से असहाब खड़े थे जिनमें हज़रत उमर भी थे। उमर की नज़र जब आयशा पर पड़ी तो हवास बाख़ता हो गये और डांट कर कहने लगे, तुम यहां क्यों चली आयीं? अगर कोई बला नाज़िल हो गई तो (तुम्हे बचाने में) हम सब कट मर जाएंगे। आयशा फ़रमाती हैं कि उस वक़्त उमर ने मुझ पर इतनी लानत मलामत की कि मेरा जी चाहा कि ज़मीन फ़ट जाये और मैं उसमें समा जाऊं।[1]

बुख़ारी कहते हैं कि एक मरतबा और भी आं हज़रत (स) से जंग में शिरकत की इजाज़त चाही थी मगर हुज़ूर (स) ने ये कहकर उन्हें रोक दिया था कि औरतों का जिहाद सिर्फ़ हज है।[2]

ताज्जुब, बालाए ताज्जुब ये अम्र है कि जिस बेटी का बाप हमेशा मैदाने जंग से "फ़रार इख़तियार" रहा हो, उसमें ये हौंसला कहां से पैदा हो गया कि वो मैदाने जंग के ख़ूनी धमाकों से लुत्फ़ अन्दोज़ होने की ख़्वाहिश करें। और हैरत बालाए हैरत इस बात पर है कि जब रसूल (स) ने जो आयशा के शौहर भी थे इससे क़ब्ल मैदाने जंग में जाने से ये कहकर मना कर दिया था कि औरतों का जिहाद हज है तो पैग़म्बर (स) की इजाज़त के बग़ैर इस मौक़े पर उन्होंने घर से बाहर क़दम क्यों निकाला? कि अम्र को रसूल (स) की एक ज़ौजा पर लानत मलामत करनी पड़ी। फ़िर ये सवाल भी पैदा होता है कि हज़रत उमर जिन्हें मैदाने जंग में होना चाहिए, चन्द असहाब को लिए बाग़ में क्या कर रहे थे? इसका जवाब हर वो तारीख़ दे सकती है जिसमें मैदान जन्म से हज़रत उमर के फ़रार की दास्ताने मरक़ूम है।

---

1. मसनद अहमद :– स. 99-141
2. सहीह बुखारी :– बाबे हज्जुन निसा

पैग़म्बर (स) की दीगर अज़्वाज से आयशा का हसद

मोवर्रेख़ीन ने तहरीर किया है कि आयशा का रवय्या मारिया कब्तिया ज़ैनब बिन्ते हजश, सफीया बिन्ते हई और मलीका बिनते क़अब वग़ैरा से बेहद हासेदाना था। क्योंकि ये सब औरतें आयशा से कहीं ज़्यादा ख़ूबसूरत और हसीन थीं। जिन्होंने अपना नफ़्स पैग़म्बर (स) को हेबा कर दिया था। चुनांचे आप ख़ुद फ़रमाती हैं कि :–

"मैं उन औरतों से बहुत जलती थी जिन्होने पैग़म्बर को अपना नफ़्स हेबा कर दिया था और मैं कहा करती थी कि कहीं कोई शरीफ़ औरत अपना नफ़्स किसी को हेबा करती है?"[1]

इब्ने सअदे वाक़दी ने "तबक़ात"[2] में बसिलसिलए हालाते उम्मे शरीक इस रवायत को तफ़सील से बयान किया है और लिखा है कि वो मोअज़्ज़मा जिन्होंने अपना नफ़्स पैग़म्बर (स) को हेबा कर दिया था उनका नाम "ग़ज़ीया" था। और ये रवायत असाबा[3] में तफ़सील से बयान हुई है। लेकिन उन मोअज़्ज़मा के नामोनसब और कुन्नियत में उल्मा ने इख़्तेलाफ़ किया है। उसकी वज्ह ये मालूम होती है कि ऐसी कई औरतें थी जिन्होंने अपना नफ़्स पैग़म्बर (स) को हेबा कर दिया था। और जिनसे आयशा को बेज़ारी थी आयशा ने भी अपने बयान में "औरतों" कहकर जमा का सीग़ा इस्तेमाल किया है नीज़ मसनद अहमद में है कि आयशा उन औरतों को ताना दिया करती थीं जिन्होंने अपना नफ़्स पैग़म्बर (स) को हेबा किया था।[4]

---

1. बुखारी :– ज. ३ स. 118, मुस्लिम बाबे जवाज़े हिबा :– ज. 4 स. 374
2. तबक़ात :– ज. 8 स. 154
3. असाबा :– ज. 4 स. 362, 784
4. मसनद अहमद :– ज. 4 स. 198

सहीह मुस्लिम में हिशाम से रवायत है कि खूला बिन्ते हकीम भी उन औरतों में शामिल हैं जिन्होंने अपना नफ़्स हेबा किया था और आयशा उनें मुताल्लिफ़ फ़रमाती थीं कि इस औरत को शर्म नहीं आती कि इसने अपना नफ़्स हेबा कर दिया।[1]

आऊज़ो बिल्लाहे मिनक

तबक़ात इब्ने सअद में इब्ने अब्बास से मरवी है कि रसूलल्लाह सल्लल्लाहो अलैहे व आलेही वसल्लम ने असमा बिनते नोमान (जौनिया) से अक़्द फ़रमाया, ये अपने वक़्त की इन्तेहाई हसीनों जमील और ख़ूबसूरत ख़ातून थी पैग़म्बर की दिगर अज़्वाज़ ने जब असमा को देखा तो उन पर रश्क़ो हसदतारी हुआ आयशा इस मामले में सबसे आगे थीं लिहाज़ा उन्होंने फ़रेबकारी का एक मुनज़्ज़म मन्सूबा तैय्यार किया और असमा से ये कहा कि रसूलल्लाह उस औरत से बहुत ख़ुश होते हैं जो "दुख़ूल" के वक़्त उनसे "आऊज़ो बिल्लाहे मिनक" (यानी मैं आपसे ख़ुदा की पनाह चाहती हूं) कहे। आयशा की ये बात भोली भाली असमा पर असर अन्दाज़ हुई। चुनान्चे जब पैग़म्बर (स) तशरीफ़ लाये और उन्होंने असमा की तरफ़ हाथ बढ़ाना चाहा तो असमा ने कहा "आऊज़ो बिल्लाहे मिनक, पैग़म्बर ने उसकी तरफ़ से हाथ खींच लिया और फ़रमाया तुमने बहुत बड़ी पनाह मांगी है लिहाज़ा मैं तुम्हें आज़ाद करता हूं तुम अपने घर जा सकती हो।[2]

हमज़ा बिन सईदे सायदी ने अपने बाप से रवायत की है कि है वो फ़रमाते थे :–

पैग़म्बर (स) ने असमा बिन्ते नोमान (जौनिया) से अक़्द फ़रमाया और मुझसे लाने को कहा मैं उसे लेकर हाज़िरे ख़िदमत हुआ। हफ़सा ने आयशा से या आयशा ने हफ़सा से कहा कि तुम इसके हाथों में मेंहदी लगाओं मैं बालों में कंघी करती हूं। दोनों ने मिलकर मेंहदी लगाई और

---

1. सहीह मुस्लिम :– ज. 2 स. 164
2. तबक़ात इब्ने साद :– ज. 8 स. 145

बाल संवारे। उसके बाद उन दोनों में से किसी एक ने असमा से कहा कि पैग़म्बर उस औरत को बहुत महबूब रखते हैं जो "जमाअ" के वक़्त "आऊज़ो बिल्लाहे मिनक" कहती हैं। चुनांचे जब पैग़म्बर (स) उसके ख़लवत कदे में तशरीफ़ लाये और आपने उसकी तरफ़ हाथ बढ़ाना चाहा तो उसकी ज़बान से "आऊज़ो बिल्लाहे मिन्क'.... निकला! हुजूर (स) ने अपना हाथ समेट लिया और अपनी आस्तीनों से अपना चेहरा ढक लिया और तीन मरतबा इरशाद फ़रमाया कि तूने बड़ी पनाह मांगी है लिहाज़ा अपने घर चली जा।[1]

अबू सईद कहते हैं थोड़ी देर बाद हज़रत अली (अ) तशरीफ़ लाये और उन्होंने मुझसे कहा कि इसे इसके घर वालों के पास पहुंचा दो और दो जोड़े कपड़े दे दो।

इस वाक़िये के बाद असमा कहा करती थी कि मैं बदबख़्त हूं।[2]

तहज़ीबे इब्ने असाकर में है कि जब असमा को ग़ैरे मामूली तौर पर हसीनों जमील पाया गया तो अज़्वाज़ की तरफ़ से उसे धोखा दिया गया। जब रसूल को ये ख़बर हुई कि ये आयशा और हफ़सा की हरकत थी तो आपने फरमाया :–

ये सब यूसुफ वालियां हैं और उन्ही की तरफ़ मक्कारो फ़रेबकार भी।"[3]

मलीका पर आयशा का जादू

इब्ने सअद ने तबक़ात में और इब्ने क़सीर ने अपनी तारीख़ में ये वाक़ेआ नक़ल किया है कि रसूल (स) ने मलीका बिनते काब से अक़्द किया जो हुस्नो जमाल में यकता थीं। हज़रत आयशा को ये बात नागवार गुज़री क्यों कि मलीका का ग़ैरे मामूली हुस्न उनके लिए

---

1. तबरी :– ज. 3 स. 79, मुसतदरक :– ज. 4 स. 37, इस्तेयाब :– ज. 2 स. 73
2. असाबा :– ज. 3 स. 350
3. तहज़ीब :– इब्ने असाकर :– ज. 1 स. 309

नाक़ाबिले बर्दाश्त था।

मलीका का बाप फ़त्हे मक्का के मौक़े पर ख़ालिद बिन वलीद के हाथों क़त्ल हो चुका था चूंकि वो अपने बाप के क़ातिल के नाम से आशना थी इसलिए आयशा से जब उसका सामना हुआ तो मोहतर्मा ने उस पर अपना नफ़सियाती हर्बा इस्तेमाल किया और उससे कहा कि तुम्हें अपने बाप के क़ातिल से निकाह करते शंर्म नहीं आयी।[1]

मलीका ने आयशा से कहा :–

"अब क्या हो सकता है मुझे तो ये गुमान भी नहीं था कि रसूल (स) मेरे बाप के क़तिल हैं।" आयशा ने कहा, "ये सूरत हो सकती है कि जब आं हज़रत (स) तुम्हारे साथ ख़लवत नशीन हों तो उनसे कहना कि मैं आपसे ख़ुदा की पनाह मांगती हूं। मुम्किन है पनाह मिल जाये।" चुनांचे आयशा के भड़काने पर मलीका ने ऐसा ही किया और रसूलल्लाह (स) ने उसे तलाक़ दे दी। तलाक़ के बाद मलीका के खानदान वाले रसूल के पास आये और आप से कहा :–

"या रसूलल्लाह (स)! ये ना समझ और कमसिन है, बहकावे और बरग़लाने में आ गयी है आप उससे दोबारह रूजूअ फ़रमाले लेकिन रसूल(स) ने इन्कार कर दिया।[2]

ये रवायत इस बात पर दलालत करती है कि रसूलल्लाह (स) को कमसिन हसीन और ख़ूबसूरत लड़कियों से निकाह करने का कोई शौक़ नहीं था वरना वो मलीका बिन्ते काब को तलाक़ न देते क्यों कि वो कमसिन भी थीं और हुस्नो जमाल का मुजस्समा भी।

नीज़ असमा बिन्ते नोमान पर गुज़रने वाले और इस वाक़ेए की नौइयत भी तक़रीबन एक सी है जो ज़ाहिर करती है कि आयशा ने नेक और शरीफ़ औरतों को धोखे दिये और उन्हें नबी (स) की ज़ौजियत से महरूम कर दिया। चुनांचे उन्होंने असमा को फ़रेब दिया कि पैग़म्बर(स)

---

1. तबक़ात इबने सअद :– ज. 8 स. 148, तारीख इब्ने क़सीर :– ज. 5 स. 299
2. असाबा :– ज. 4 स. 392, तारीख इब्ने असाकर :– ज. 1 स. 309, जहबी :– ज 1 स. 325

उस औरत से बहुत खुश होते हैं जो "आऊज़ो बिल्लाहे मिनक" कहती हैं और मलीका को ये बावर कराया कि तुम्हारे बाप के क़ातिल रसूल (स) हैं ये वो जादू था कि जिसने उन दोनों सादा लौह औरतों का मुस्तक़बिल तबाहो बरबाद कर दिया जिसकी मुजरिम आयशा और सिर्फ़ आयशा हैं ये और बात है कि इस काम के लिए हफ़सा को भी इस्तेमाल किया।

मारिया क़ब्तिया की सरगुज़श्त

तबक़ात इब्ने साद की रवायत है कि असकन्दर्या के शाह ने सात हिजरी में मारिया क़ब्तिया और उनकी बहन "सीरीन" को एक हज़ार मिस्क़ाल सोना बीस उम्दा नफ़ीस और बेशकीमत कपड़े "अफ़ीर" या "बाफ़ूर" नामी गधे और "दुल्दुल" नामी खच्चर देकर हातिब बिन बल्क़ा के हमराह पैग़म्बरे इस्लाम की ख़िदमत में ख़ाना किया और उसके साथ ही मर्दे ख़सी जिसका नाम "माबूर"* था, को भी भेजा जो मारिया का भाई और एक सिन रसीदा शख़्स था। हातिब ने मारिया और सीरीन के सामने इस्लाम कुबूल किया और इन्हें भी रंगबत दिलायी। चुनांचे वो दोनों बहनें भी मुसलमान हो गयीं मगर वो मर्दे ख़सी अपने आबाई दीन पर क़ायम रहा और कुछ दिनों बाद पैग़म्बर (स) की ज़िन्दगी ही में मुसलमान हो गया।

रसूले खुदा (स) इन मारिया को जो आगे चलकर इब्राहीम की मां हुई बेहद चाहते थे। ये इन्तेहाई हसीनों ख़ूबसूरत भी थी और इनके बाल भी काफ़ी लम्बे और दिलकश थे। रसूल ने इन्हे परदे में रखा और मक़ामें "आलिया" में ठहराया। आप उनके पास बराबर आते जाते रहे यहां तक कि ये हाम्ला हुई और वहीं उनका वज़ैहम्ल हुआ। पैग़म्बर (स) की कनीज़ सलमा ने दाया की ख़िदमत अन्जाम दी और सलमा के शौहर अबूराफ़े ने पैग़म्बर (स) को इब्राहीम की विलाद की ख़ुशख़बरी सुनाई। आपने उन्हें एक गुलाम इनाम दिया। ये वाक़ेआ माहे ज़िल्हिज

---

* माबूर का नाम बाज़ मोवर्रेखीन ने "जरीह" तहरीर किया है।

आठ हिजरी का है।[1]

अल्लामा जलालउद्दीन सुयूती की तसनीफ "हुस्नुल मोहाज़ेरा" के मुतालिए से पता चलता है कि शाह मक़ूक़स ने पैग़म्बरे इस्लाम (स) की ख़िदमत में एक ख़त इरसाल किया था जिसका ख़ुलासा ये है कि

"जिन बातों की तरफ़ आपने मेरी तवज्जो मबज़ूल कराई है और जिस अम्र की दावत दी है उस पर मैंने सन्जीदगी और मतानत से ग़ौर किया। मुझे मालूम था कि एक नबी आने वाले हैं मगर मैं समझता था कि वो मुल्के शाम में मबऊस होंगे। बहरहाल मुख़तसर तहाएफ़ के साथ दो लड़कियां ऐसी आपकी ख़िदमत में रवाना कर रहा हूं, जो क़ब्तियों में बड़ी इज़्ज़तोशरफ़ और अज़मतों एहतराम की मालिक हैं।[2]

आयशा का बयान है कि :–

"जो हसद और जलन मुझे मारिया से थी वो किसी औरत से नहीं थी क्योंकि ये इन्तेहाई हसीनों जमील होने के साथ–साथ बड़े लम्बे और ख़ूबसूरत बालों वाली थी। पैग़म्बर ने उन्हें ख़ुद पसन्द किया था और जब उन्हें ले आये तो पहले हारिस बिन नोमान के घर में उतारा, फ़िर वो हमसे घबराई और परेशान हुईं तो आं हज़रत ने उन्हें मक़ामे आलिया में मुनतक़िल कर दिया। और आप बराबर वहां आते जाते रहे। पैग़म्बर(स) का मारिया के पास आना जाना मुझ पर शाक गुज़रता था और मैं हसद की आग में जलती रहती थी। यहां तक कि मारिया के बत्न से ख़ुदा ने उनहें फ़रज़न्द अता किया और मैं महरूम रही।"[3]

तबक़ात इब्ने सअद की रवायत हुस्नुल मोहाज़रा से माख़ूज़ ख़ुलासए मक़तूब और ख़ुद आयशा के बयान से उनके "हसदो जलन" की मुनदर्जा ज़ेल वुजूहात का पता चलता है:–

(1) मारिया क़ाब्तिया के हुस्नों जमाल के सामने आयशा एहसासे कमतरो का शिकार थीं।

---

1. तबक़ात :– ज. 8 स. 212 व ज. 1 स . 134, हालाते इब्राहीम फरज़न्दे नबी (स)
2. हुस्नुल मुहाज़रा :– ज. 1 स. 47 (मिस्र)
3. तबक़ात इब्नेसाद :– ज. 8 स. 150, 202

(2) मारिया, शहज़ादी और अज़मतों एहतराम की मालिक थी। नीज़ काफ़ी साज़ो समान के साथ बावेक़ार तौर पर रसूल (स) के घर आयीं थीं जबकि आयशा को अपने वाल्दैन की तरफ़ से कुछ भी न मिल सका था।

(3) पैग़म्बर ने मारिया को खुद पसन्द फ़रमाया था और वो उन्हें बेहद चाहते थे।

(4) मारिया के बाल लम्बे और ख़ूबसूरत थे जब्कि आयशा गंजी थी और आपके बाल बीमारी की नज़्र हो चुके थे।

(5) ख़ुदा ने पैग़म्बर को मारिया से औलाद अता की जबकि आयशा इस नेमत से महरूम थीं।

ये तमाम बातें ऐसी हैं जिनका तसव्वुर आयशा के लिए यकीनन अंगारों का बिस्तर था जिस पर आपका मजरूह "पिन्दारे ख़ुदी" करवटें लिया करता था। और आप दिल ही दिल में कुढ़ती और जलती रहती थीं। फिर इब्राहीम की विलादत ने आपके बुग्ज़ों एनाद में और इज़ाफा किया जैसा कि खुद आपका बयान है कि ख़ुदा ने मारिया के बत्न से रसूल को फ़रज़न्द अता किया और मैं यूंही रह गयी।

अब आप सोंचे समझें और खुद फ़ैसला करें कि पैग़म्बरे इस्लाम(स) ऐसी किसी बीवी को क्यों कर अज़ीज रख सकते थे जो आपकी दिगर अज़्वाज़ से बेपनाह रश्क़ो हसद रखती हों। उन्हे बुरा भला कहतीं हो, उनके बरतन तोड़ती हो, लड़ाई, झगड़ा और मारपीट करती हो, उन्हें बरग़लाती और बहकाती हों, फ़रेब देती हों, झूठ बोलती हो, ग़ीबत करती हो, और ऐब जूई उसका शआर हो। पैग़म्बर (स) ऐसी किसी बीवी को क्यों कर मुहब्बत दे सकते थे जो आपके मासूम बच्चे इब्राहीम से नफ़रत करती हो, आपकी कुदसी सिफ़ात बेटी फ़ात्मा (स) से अदावत रखती हो। अपने नवासों से परदा करती हों और आपके इब्ने अम (चचा के बेटे) हज़रत अली इब्ने अबी तालिब (अ) की ऐसी दुशमन हों कि उनका नाम लेना भी गवारा न करती हों। पैग़म्बर (स) ऐसी किसी बीवी को क्यों कर मुह लगा सकते थे जो आपकी दूसरी बीवी को ये बावर कर

दे कि उसके बाप के क़ातिल खुद रसूल हैं।

इन्ही वजूहात की बिना पर अक़्ल ये तस्लीम करने पर तैयार नहीं होती कि पैग़म्बर (स) आयशा को अपनी तमाम बीवियों से ज़्यादा चाहते रहे होंगे या उन्हें महबूब रखते होंगे। बल्कि अक़्ल का फ़ैसला ये है कि पैग़म्बर (स) आयशा से नफ़रत करते थे और आपने उम्मत को भी इन के शर से बचने की तलक़ीन फ़रमाई है।[1]

नीज़ बुख़ारी की ये रवायत भी इस अम्र पर दलालत करती है कि हुजूरे अकरम (स) आयशा से क़तई ख़ुश नहीं थे। तहरीर फ़रमाते हैं :–

मैंने क़ासिम इब्ने मोहम्मद से सुना कि उन्होंने कहा :–

"आयशा ने कहा हाय मेरा सर फटा तो रसूल (स) ने कहा अगर ऐसा होता तो मैं तुम्हारे लिए ख़ुदा से दुआ करता आयशा ने कहा, बामुसीबता ! ख़ुदा की क़सम आप चाहते हैं कि मैं मर जाऊं ताकि आप अपनी आख़िरी उम्र तक दूसरी अज़्वाज़ से लुत्फ़ उठाते रहे।"[2]

हज़रते आयशा और अज़मते रसूल (स)

तारीख़ पुकार पुकार कर कहती है कि आयशा ख़ानए रसूल (स) में एक आफ़त बनकर नाज़िल हुई थी। रसूले करीम से बात–बात पर तू तू मैं मैं, लड़ाई झगड़ा, बहसो मुबाहेसा और गुफ़्तारो तक़रार आपका मामूल था। आपकी नज़र में न तो मनसबे नुबूवत की कोई अहमियत थी और न ही रसूले पाक की अज़मतों का काई पासो लिहाज़ था। जिसकी वजह से पैग़म्बरे इस्लाम हमेशा आप पर नराज़ो गज़बनाक रहा करते थे। जैसा कि ख़ुद आपका बयान है। आप फ़रमाती हैं :–

"पैग़म्बर (स) अकसर मुझसे नाराज़ों गज़बनाक रहते थे.... एक

1. तबक़ात इबने साद :– ज. 2, स. 29
2. बुख़ारी :– ज. 7 स. 8

बार किसी मसअले पर मुझसे और हुज़ूर (स) से बहसो तकरार हो गयी। हुज़ूर ने फ़रमाया कि तुम इस पर राज़ी हो कि उमर बिन ख़त्ताब मेरे और तुम्हारे बीच फ़ैसला करे? मैंने कहा नहीं वो बद मिज़ाज और संगदिल इन्सान है। फ़रमाया, फ़िर किसको सालिस बनाना चाहती हो? मैंने कहा अपने वालिद अबूबकर को। चुनांचे उन्हें तलब किया गया और जब वो आये तो हुज़ूर ने सारा माजरा बयान किया। मैंने कहा ख़ुदा से डरिये और हक़ के ख़िलाफ़ कुछ न कहिये। मेरी ज़बान से ये कलमात सुनकर मेरे वालिद ने मेरे मुंह पर ऐसा थप्पड़ मारा कि मेरी नाक से खून जारी हो गया।[1]

मिस्री मोवर्रिख़ मोहक्क़िक़ अब्बास महमूद ओक़ाद अपनी किताब "आयशा" में रक़म तराज़ हैं कि :–

"अहादीस में हज़रत आयशा से एक रवायत मरवी है जिसमें वह कहती हैं कि एक मरतबा किसी बात पर मुझमें और रसूल में बहस हो रही थी। हुज़ूर (स) ने फ़रमाया यूं नहीं, किसी को सालिस मुक़र्रर कर लो। कहो" अबू उबैदए ज़र्राह को सालिस मुक़र्रर करने पर रज़ामन्द हो? मैंने कहा वो सादा मिज़ाज इन्सान है आपकी तरफ़दारी करेंगे। हुज़ूर ने फ़रमाया तो फिर अपने वालिद को मुक़र्रर कर लो। मैं राज़ी हो गयी हुज़ूर (स) ने अबूबकर को बुलवाया और मुझसे फ़रमाया कि तुम अपनी बात बयान करो। मैंने कहा पहले आप बयान करें चुनांचे हुज़ूर (स) ने वो बात जिसके मुतालिक़ बहस हो रही थी अबूबकर से बयान की और जब बात ख़त्म हो गयी तो मैंने अपने वालिद से कहा कि अब आप बताइये कि हम दोनों में किसकी बात सही है? ये सुनते ही मेरे बाप ने मेरे मुंह पर एक ज़ोरदार तमांचा मरा और कहा कि रसूल की मुख़ालेफ़त करती है। तमाचा ऐसा था कि मेरी नाक से ख़ून जारी हो गया।[2]

कुरान कहता है कि रसूल (स) की आवाज़ पर अपनी आवाज़ को बलन्द न करो लेकिन आयशा के नज़्दीक कुरानी आयात की भी कोई

---

1. कशफ़ुल ग़म्मा :– ज. 2 स. 76
2. आयशा (उक़ाद) :– स. 30

अहमियत नहीं थी। जैसा कि ओक़ाद की तहरीर से पता चलता है। चुनान्चे वो लिखते हैं :–

एक बार हज़रत अबूबकर आयशा के हुजरे के क़रीब से गुज़रे उन्होंने अपनी बेटी को रसूलल्लाह (स) से बुलन्द आवज़ से बातें करते हुए सुना, वह गुस्से की हालत में हुजरे में दाख़िल हुए और इस गुस्ताख़ी की सज़ा देने के लिए आयशा को थप्पड़ मारना चाहा लेकिन रसूलल्लाह (स) ने दर्मियान में खड़े होकर उन्हें ऐसा करने से रोक दिया।[1]

अल्लामा शेख़ अब्दुर रहमान शाफ़ेई भी इसी क़िस्म का एक वाक़ेआ तहरीर फ़रमाते हैं:–

किसी मौक़े पर रसूलल्लाह (स) और आयशा में बहसो तक़रार हो गयी। रसूलल्लाह (स) ने फ़रमाया क्या तुम अपने बाप को सालिस मुक़र्रर करने पर तैयार हों। आयशा ने कहा हां। चुनांचे अबूबकर सालसी के लिए तलब किये गए। उनसे रसूल ने फ़रमाया कि ये मसअला है और ऐसी ऐसी बातें है। आयशा ने कहा ख़ुदा से डरिये और हक़ बात कहिये। उस पर अबूबकर ने उन्हें ऐसा तमाचा मारा कि नाक से ख़ून जारी हो गया फिर डंडा उठाया और इस तरह ज़दोकोब किया कि आखिरकार वो (आयशा) भाग कर रसूल (स) की पुश्त से लिपट गई।[2] मज़कूरा वाक़ेआत से मुन्दर्जाज़ेल बातों का पता चलता है।

(1) आयशा रसूल (स) का अदबो एहतराम कतई नहीं करती थीं।

(2) आयशा रसूल (स) की मुख़ालेफ़त करती थीं।

(3) आयशा रसूल (स) की आवाज़ पर बलन्द करती थीं।

(4) आयशा रसूल(स) से बहसो मुबाहेसा और तक़रार करती थीं।

(5) आयशा हज़रते रसूले ख़ुदा पर बोहतान और इत्तेहाम की मुर्तकिब भी क़रार पाती हैं जैसा कि आपका बयान है :–

हम रसूलल्लाह के लिए एक मशकीज़ा "नबीज़"* तैयार करते थे जिसे सुब्ह उठकर आप पी जाते थे।[3] (मआज़ल्लाह)

---

1. आयशा (उक़ाद) :– स. 98

2. नुज़हतुल मजालिस :– ज. 1, स. 102

* एक तरह की शराब 3. तलखीसुस सहाह :– ज. 3, स. 112, मतबुआ लाहौर

शराब के लिए अरबी जबान में बहुत सी लफ़्ज़े इस्तेमाल हुई हैं जिनमें "ख़मर" और "नबीज" भी हैं। ख़मर उस शराब को कहते हैं जो अंगूर से बनायी जाय और नबीज वो शराब है जो खजूर से हासिल की जाय जिसे हम अपनी इस्तेलाह में "ताड़ी" कहते हैं।

अब्दुल्लाह इब्ने उमर का बयान है कि मेरे बाप उमर ने मिम्बर पर तक़रीर करते हुए कहा कि ये अम्र तहक़ीक शुदा है कि ख़मर, अंगूर, जौ, गेंहूँ और शहद से तैय्यार होती हैं और नबीज़ खजूर से और ये दोनों चीज़े हराम हैं।[1]

इमाम गेज़ाली अपनी किताब "मनखूल" में रक़म तराज़ है :–

इमामे अबू हनीफ़ा ने शरीअत को उलट पलट दिया और निज़ामे शर्अ को दरहम बरहम कर दिया। उनके मज़हब का तज़ाद उनकी नमाजों की तफ़सीलों में पोशीदा हैं। नमाज़ की क़द्र ज़रूरी जो अबूहनी फाने तज़वीज की है उसमें उनका ख़ब्त ज़ाहिर है। और ये ऐसी नमाज़ है जो किसी जाहिल और सुस्त आदमी के सामने भी पेश की जाय तो वो उसके इत्तेबा से बाज़ रहेगा। इसलिए कि जो शख़्स नबीज में गोता लगाये और कुत्ते की खाल पहन कर निकले और नीयत न करे।"

इमाम गेज़ाली ने इमाम अबू हनीफ़ा के इस फ़त्वे का मतलब ये अख्ज़ किया है कि अबूहनीफ़ा का ये कहना कि नबीज में गोता लगाकर नमाज़ पढ़ना जायज़ और दुरूस्त है। अगर इमाम गेज़ाली के मशरब में नबीज़ हलाल होती तो वो अबू हनीफ़ा के फ़त्वे पर एतराज क्यों करते?

किताब "रददुल मुख़तार" जिल्द 5 सफ़ा 301 के मुताले से ये भी मालूम होता है कि अबू हनीफ़ा हर क़िस्म की नबीज़ को दिल में हराम समझते थे मगर चूंकि साहबए केबार इसको बेधड़क पीते थे इस लिए वो इसके हलाल होने का फ़त्वा देने पर मजबूर थे। जैसा कि उनका ये क़ौल बहुत मशहूर है कि अगर तमाम दुनिया मेरे क़ब्ज़े में दे दी जाय तो भी मैं नबीज को हराम होने का फ़त्वा नहीं दे सकता। क्योंकि इससे बाज़ सहाबा को फ़ासिक़ होना साबित होगा इसलिए कि

1. मिशकात :– ज. 5, स. 42 मतबुआ लाहौर

ये हज़रात बे ताम्मुल उसे पिया करते थे लेकिन अगर मुझे कोई पूरी दुनिया देकर ये कहे कि इसे पिया करो तो मैं पियूंगा भी नहीं।

मौलाना शिबली नोमानी अपनी किताब "अलमामून" जिल्द दुव्वुम के सफ़ा 221 पर तहरीर फ़रमाते हैं कि :–

"उस वक़्त इस्लामी सोसाइटियां उमूमन इस रंग में डूबी हुई थीं। मुसलमानों को उस अहद में अम्न, फ़राग़, इत्मीनान, और ज़रोमाल सब कुछ मयस्सर था। कुछ चीज़े थी जो उनको ज़िन्दगी के पुरख़त मक़ासिद से रोक सकती थी? एक मज़हब अलबत्ता दरअन्दाज हो सकता था लेकिन जिद्दत पसन्द तबीअते उसे खींच तानकर अपने ढबका बना लेती थी। शराब की जगह नबीज़ (खजूर की ताड़ी) मौजूद थी जिसको उमूमी तौर पर एराक के मज़हबी पेशवाओं से हिल्लत की सनद मिल चुकी थी।"

नबीज़ क्या है? इसे क्यों हलाल करार दिया गया? हज़रत उमर के क़ौल, इब्ने असीर की तशरीह, इमाम ग़ेज़ाली की तन्क़ीद, इमाम अब हनीफ़ा के फ़तवे, रद्दुल मुख़्तार के इक़्तेबास और शिबली नोमानी की इबारत से ज़ाहिरा है। उनकी तसरीहात की रौशनी में हज़रत आयशा की बयान क़रदा हदीस का मतलब ये निकलता है कि मआज़ल्लाह पैग़म्बर (स) भी अपने को इससे महरूम नहीं रखते थे।

पैग़म्बर (स) पर आयशा का ये इत्तेहाम यक़ीनन एक ग़ौरतलब मसअला है।

दूसरा बोहतान

मुस्लिम, बुख़ारी और तिर्मिज़ी वग़ैरा में ये रवायत भी हज़रत आयशा की ज़बान से मरकूम हुई है जिसमें आपने ये फ़रमाया है कि :–

"पैग़म्बर (स) पर वहई का सिलसिला अच्छे ख़्वाबों से शुरू हुआ। आं हज़रत, शुरू ज़मानए नबुवत में जब कोई ख़्वाब देखते तो वह सुबह की रौशनी की तरह होता, यानी सच्चा ख़्वाब होता, जैसा देखते वैसा ही

बेदारी में ज़ाहिर होता। फिर आपको ख़लवत नशीनी, महबूब रहने लगी, चुनांचे ग़ारे हिरा में तन्हा जाकर बैठा करते थे। एक दिन फ़रिश्ता आपके पास आया, और कहा पढ़िये! आं हज़रत (स) ने फ़रमाया मैं पढ़ा नहीं हूं। फिर आं हज़रत (स) ने फ़रमाया कि इस जवाब पर जिब्रील ने मुझे पकड़कर इस तरह दबाया कि मैं कांपने लगा। फिर मुझे छोड़ दिया और कहा अब पढ़िये। मैंने फ़िर वही जवाब दिया, मैं पढ़ा नहीं हूं। उस पर फ़िर उसने मुझे दबोचा कि मेरी जान पर बन गई। फ़िर छोड़ा और कहा पढ़िये– "इक़रा बेइस्मे रब्बेका......

हज़रत आयशा फरमाती है कि :–

रसूलल्लाह (स) घर वापस आये, आप पर लर्ज़ा तारी था और दिल बुरी तरह धड़क रहा था। ख़दीजा (स) से फ़रमाया मुझे उढ़ा दो। आपको उढ़ा दिया गया थोड़ी देर आपने ख़दीजा (स) से सारा वाक़िया बयान किया और फ़रमाया उस वक़्त मुझ पर ख़ौफ़ो हेरास तारी था। ख़दीजा (स) ने क़हा, "ख़ुदा आपको बेसहारा न छोड़ता क्योंकि आप सिलए रहम करते है, दूसरों का बोझ अपने सर पर लेते हैं, नादारों, मोहताजों, और ग़रीबों की ख़बरगिरी करते हैं, मेहमानों की ज़ियाफत करते हैं, हक़ की हिमयात करते हैं, और हक़दारों को उनका हक़ दिलवाते हैं।"

हज़रत आयशा फिर बयान करती है :–

खदीजा, आं हज़रत को अपने इब्ने अम (चचा के बेटे) वरक़ा बिन नोफ़ल के पास ले गयी, जो नसरानी, नाबीना और बूढ़ा था, ख़दीजा ने वरक़ा से कहा :–

अपने भतीजे मुहम्मद का वक़िया सुनो, आं हज़रत ने सरगुज़श्त बयान की। वरक़ा ने कहा यह नामूस फ़रिश्ता था इसे ख़ुदा ने मूसा (अ) पर नाज़िल किया था। काश मैं उस वक़्त तक ज़िन्दा रहता जब तुम्हारी क़ौम के लोग तुम्हें मक्के से निकाल देंगे।[1]

---

1. बुख़ारी जुज़्वे अव्वल, बाबुल वहई, बसिलसिलए तफसीरे सूरए इक़रा, मुस्लिम तिर्मिज़ी वगैरह

आयशा की इस हदीस से ज़ाहिर होता है कि नबी हो जाने के बाद भी आं हज़रत (स) को अपनी नबूवत पर यक़ीन नहीं था, फ़रिश्ता आने के बाद भी आप इश्तेबाही कैफ़ियत में मुबतिला रहे, कुर्आन नाज़िल होने के बाद भी ये न समझ सके कि ये कलामे इलाही है या कुछ और है, फ़िर आप इस क़दर ख़ौफज़दा हुए कि ख़दीजा को ढारस बंधाना पड़ी। और आप वरक़ा बिन नौफ़िल के पास जाने को मजबूर हो गये जो ज़माने जिहालत का नसरानी और नाबीना शख़्स था। उसने आपको तसल्ली दी और पेशिनगोई भी की कि आपकी क़ौम आपको मक्के से निकाल देगी। ये तमाम बाते नामुम्किन और अक़्ल के ख़िलाफ़ हैं।

जब हम इस बात पर ग़ौर करते हैं कि जिब्रील ने पैग़म्बरे इस्लाम (स) को पकड़ा या जकड़ कर इस कुव्वत से दबाया कि आप हांपने या कांपने लगे, आपका दिल बुरी तरह धड़कने लगा, आप ख़ौफ़ ज़दा हो गए तो हमारी समझ में यह नहीं आता कि ये सब क्यों हुआ? जिब्रील ने किस ज़रूरत के तहत ये सब किया? ये बातें तो न ख़ुदा के लिए मुनासिब हो सकती हैं न रसूल के लिए और न मलायका के लिए और न अम्बियाओं मुर्सलीन के लिए। बुख़ारी के शारेहीन ने ये वजाहत भी की है कि किसी नबी के साथ इस क़िस्म का वाक़ेआ पेश नहीं आया तो फ़िर अल्लाह का अपने हबीब पर ये ख़ुसूसी और अज़ीयतनाक बरताव क्यों? जिब्रील कहते हैं "पढ़िये" हुज़ूर कहते हैं मैं पढ़ा नहीं हूं क्या आपकी समझ में ये नहीं आया कि फ़रिश्ते का मतलब क्या है? फ़रिशता कहता है "इक़रा" आप फ़रमाते हैं मैं पढ़ा नहीं हूं। इसका मतलब तो ये हुआ कि फ़रिशता कह रहा था कि मैं पढ़ रहा हूं आप दोहराते जायें लेकिन पैग़म्बर ये समझ रहे थे कि वो मुझसे कोई ख़त या कोई किताब पढ़वाना चाहता है। अक़्ल के नज़दीक ये तमाम बातें नामुम्किन और मुहाल है। और ये रवायत आयशा की तरफ़ से पैग़म्बर (स) पर सरीही तोहमत और बोहतान है।

ये रवायत मज़मून के लिहाज़ से भी बातिल है और अस्नाद के लिहाज़ से भी ग़लत और मोहमल। अस्नाद के लिहाज़ से मोहमल और ग़लत होने की ये दलील काफ़ी है कि आयशा ने इस वाक़िये को जिससे

सुना होगा उसका कोई ज़िक्र नहीं है और ये वाक़िआ आयशा की पैदाइश से पहले का है जब्कि उनका कोई वजूद भी नहीं था, और न वो नुज़ूले वहई की इब्तेहा कें वक़्त मौजूद थीं।

गुड़ियों में घोड़ा

रसूल (स) के घर में आने के बाद जहां और तमाम ख़ुराफ़ाती मशागेल हज़रत आयशा की ज़ाती सिफ़ात से वाबस्ता थे वहीं ये भी था कि उन्होंने अपने बचपन की आदतों को तर्क नहीं किया था बल्कि खेल कूद, नाचरंग, और सहेलियों की बज़्म आराइयों को बदस्तूर बाक़ी रखा था। चुनांचे मोवर्रेख़ीन का कहना है कि वो एक मरतबा अपनी कुछ सेहेलियों के साथ गुड़ियां खेल रही थीं उन गुड़ियों में एक घोड़ा भी था जिसके पर थे, रसूलल्लाह (स) की नज़र जो पड़ी तो आपने फरमायाः–

आयशा ! " ये बीच में क्या चीज़ है?"

कहा :– घोड़ा है!

फ़रमाया :– "घोड़ों के पर कहां होते हैं?"

आयशा ने कहा हज़रत सुलेमान के घोंड़ों के पर भी थे!

इस पर रसूलल्लाह हंस पड़े।[1]

आयशा का बयान है कि हज़रत भी इस खेल को देखते थे तो खुश होते थे और खामोश रहते थे।[2]

गुड़ियां गुड्डों (गुलाबों, सताबो) का यह खेल मआज़ल्लाह रसूल भी देखकर महज़ूज होते थे, हज़रत आयशा का कम्सिनी और ख़ुर्द साली का नतीजा नहीं कहा जा सकता क्योंकि परदार घोड़े का वक़िआ ग़ज़वए हुनैन या तबूक की वापसी का हैं अगर आम ख़्याल के मुताबिक़ हम थोड़ी देर के लिए फ़र्ज भी कर लें कि ब–वक्ते रूख़सती हज़रत

1. मिशकातुल मुसाबीह :– स. 282,
2. मदारे जुन नुबूवत :– ज. 2, स. 602, सहीह मुस्लिम बाबे मनाक़िबे आयशा, अबू दाउद किताबुल अदब, रफउल एजाबा, तरजुमा इब्ने माजा ज. 2 स. 53 सतर 19 सिद्दीक़ी प्रेस लाहौर, अलमुअल्लेम तर्जुमा सहीह मुस्लिम ज. 2 स. 19-24

आयशा की उम्र नौ बरस की थी तो इस वाक़िये के वक़्त उनकी उम्र तक़रीबन सत्तरह, अट्ठारह साल की क़रार पाती है। क्या ये उम्र गुड़ियां खेलने की है? और क्या रसूल (स) के घर की तहज़ीब आयशा को इस बात की इजाज़त दे सकती है।

हज़रत आयशा की मुज़ख़रफ़ हदीसें

"सहाह" और "मसानीद" में हज़रत आयशा की बयान करदह हदीसें मरकूम हैं। उनकी मजमूई तादाद दो हज़ार एक सौ दस बताई जाती है। बाज़ मुहद्देसीन दो हज़ार एक सौ दस बताते हैं यक़ीनन ये एक बहुत बड़ी तादाद है और वज़ए अहादीस में अबू हुरैरह के बाद आप ही का नम्बर है। अबूहुरैरह के अलावा इतनी अहादीस किसी ने नहीं बयान कीं। यहां तक कि खुल्फ़ए अर्बा (चारों ख़लीफ़ा) औंर उम्महातुल मोमनीन की जुमला हदीसें एक जगह इकट्ठा कर ली जायें और आयशा की हदीसें एक तरफ़ तो तादाद के लिहाज़ से आयशा की हदीसों का पल्ला भारी होगा।

हालात और कैफ़ियात के मुताबिक जो तरीक़ा आपने हदीस बयान करने का इख़तियार किया था वो हर दौर और हर अहद की खुसूसियातों जुरूरियात को मद्देनज़र रखते हुए, जिस तरह आपने रंग बिरंगी हदीसें बयान की हैं वो दुनिया की निगाहों से पोशीदह नहीं है।

मोअज्ज़मा की बयान हुई चन्द मुज़ख़रफ़ और कराहत आमेज़ हदीसों को हम बतौरे नमूना ज़ेल में पेश करेंगे जिनका ज़िक्र अरबाबे सहाह व मसानीद ने बड़े एहतेमाम से किया है। लेकिन उन हदीसों से इस्लाम और पैग़म्बरे इस्लाम (स) से मुताल्लिक़ कोई अच्छा तास्सुर पैदा नहीं होता, बल्कि ये हदीसें इस्लाम के दुशमनों को तमसख़ुर और इस्तेहज़ा का मौक़ा फ़रहम करती हैं।

ये भी हो सकता है कि ये हदीसें आयशा ने बयान ही न की हों,

उमवी दौर के राविायों ने इन्हें उनके नाम से मन्सूब कर दिया हो जैसा कि उस दौर में ऐसा हुआ है। और हज़ारों की तादाद में हदीसे गढ़ी गयीं है। बहरहाल हक़ीक़त कुछ सही अहादीस की किताबों में ये हदीसें आयशा से ही मरवी हैं। लिहाज़ा जिस तरह अबू हुरैरह अजीबो ग़रीब हदीसें बयान करने के मुआम्ले में मतऊन हैं उसी तरह ये हदीसें भी आयशा के दामन पर बदनुमा धब्बा है।

वो रसूल (स) जिसका नूर अल्लाह का नूर है जो तमाम अम्बियाओं मुर्सलीन का सरदार है जिसकी बदौलत ज़मीनों आसमान की ख़िल्क़त हुई जो मासूम है, जिसकी चौखट पर मलाएका की जबीने झुकती हैं और जिसका किरदार ऐने कुर्आन है वही रसूल (स) (ख़ाकम–ब–दहन) आयशा की हदीसों की रौशनी में एक मामूली इन्सान से भी पस्त नज़र आता है....... ये कितनी अजीब बात है?

ये अम्र भी क़ाबिले ग़ौर है कि हज़रत आयशा ने रसूले अकरम (स) से इतनी हदीसें क्यों कर सुनलीं कि उनकी तादाद दो हज़ार से ज़्यादा हो गयी। क्या पैग़म्बर शबोरोज़ सिर्फ़ आयशा ही के पास बैठे रहते थे और हदीसें बयान किया करते थे? जब्कि आपके "दिन" मस्जिदे नब्वी में मुसलमानों की तालीमों तर्बियत और मुल्की व क़ौमी उमूर पर सर्फ होते थे और "रातें" अज़्वाज में तक़सीम थीं। हज़रत आयशा के हिस्से में ज़्यादा से ज़्यादा महीने की सिर्फ़ तीन रातें आती थीं और उन रातों को भी दो तिहाई हिस्सा पैग़म्बरे इस्लाम ख़ुदा की इबादत में गुज़ार देते थे। हदीसें बयान करने का वक़्त कहां था?

इससे ज़्यादा अहम बात ये है कि आयशा ही की बारी में आं हज़रत महवे तकल्लुम होते और हदीसों पे हदीसें इरशाद फ़रमाते? आख़िर आपकी और बीवियां भी तो थीं उनकी बारी में आप ख़ामोश क्यों रहते थे? क्या वो आपसे हदीसें सुनने की मुस्तहक़ नहीं थी? आयशा ही में कौन सी खुसूसियत थी कि आप सिर्फ़ उन्हीं से हदीसें बयान फ़रमाते थे? फिर ऐसी मुबतज़ल हदीसें जो इन्सान को बदहवास कर दें।

इन तमाम बातों के पेशे नज़र ये नतीजा अख़्ज़ करना पड़ता है कि ये हदीसें फ़र्ज़ी हैं और इस्लाम व पैग़म्बरे इस्लाम को बदनाम करने

के ख़्याल से दुशमनों ने इन हदीसों को वज़अ करके आयशा के सर मंढ दिया है। अगर हज़राते अहले सुन्नत वाक़ई इन हदीसों को आयशा ही का कारनामा समझते हैं तो ये इन्तिहाई क़ाबिले अफ़सोस बात है क्योंकि इन आहदीस से उम्मुल मोम्नीन के क़लबी रूजहानात और नफ़सानी ख़्वाहिशात की ताईद भी होती है।

जिसके चन्द नमूने गुज़श्ता सफ़हात में हम पेश कर चुके हैं। चन्द मज़ीद नमूने ज़ैल में मुलाहेज़ह फरमाएं

आयशा का जनाज़ह

सहीह बुख़ारी में इब्ने शहाब से रवायत है कि मुझसे उर्वहने और उनसे आयशा ने बयान किया कि :–

अब रसूले ख़ुदा (स) नमाज़ पढ़ते तो मैं उनके और कि क़िबला के दर्मियान फ़र्श पर इस तरह पड़ी रहती जैसे कोई जनाज़ह रखा हो। और जब पैग़म्बर (स) सजदे में जाते तो वो मुझे दबाते थे उस पर मैं अपनी दोनों टांगे उठा लेती थी, और जब आप सजदे से सर उठाते तो फिर फैला दिया करती थी।[1]

अल्लामा इब्ने हजरे असक़लानी रक़म तराज हैं :–

हज़रत आयशा इस तरह लेटी रहती थीं जिस तरह सामने जनाज़ह रखा जाता है, और मुराद ये है कि हज़रत आयशा इस तरह आं हज़रत (स) के सामने होतीं कि उनका सर पैग़म्बर (स) के दायें हाथ की तरफ़ होता और पावं बाये हाथ की तरफ़ जिस तरह जनाज़ह पढ़ने वाले शख़्स के सामने जनाज़ह होता है।[2]

बुख़ारी ही ने हज़रत आयशा का ये बयान भी कलम बन्द किया है :–

मैं हज़रत रसूले ख़ुदा के सामने सोती रहती थी और मेरे दोनों

---

1. बुखारी :– प. 2 स. 245, उमदतुलक़ारी शरह बुखारी :– ज. 2 स. 502
2. फतहुल बारी :– स. 245

पावं क़िबले की तरफ़ दराज़ रहते थे। चुनाचे जब हज़रत सजदह में जाते और मेरे पैरों में चुटकियां लेते तो मैं उन्हें समेट लेती थी और जब खड़े होते तो फिर पैर फ़ैला देती थी।[1]

इस आखिरी रवायत से पता चलता है कि आयशा का बयान ग़लत है। पैग़म्बर (स) की नमाज़ के वक्त वो सोई हुई नहीं होती थीं बल्कि जागती रहती थीं। और आंख खोले हुए हुज़ूर (स) की नक़्लों रहकत को देखा करती थीं। क्योंकि सोने वाला शख़्स तक़रीब मुर्दा होता है और उसे ये अन्दाज़ा नहीं हो सकता कि कौन नमाज़ पढ़ रहा है, कौन कब सजदे में गया, और कौन कब खड़ा हुआ, या कौन घर में दाख़िल हुआ और कौन चला गया?

चेजाइकि आयशा का ये बयान कि आं हज़रत (स) हालते नमाज़ में मेरे पैरों में जब चुटकियां लेते तो मैं उन्हें समेट लेती और जब सजदे के बाद क़याम फ़रमाते वो फिर फ़ैला देती, किस क़द्र मज़हका खेज़, इबरतनाक और बेअदबी का मज़हर है।

ये सवाल भी पैदा होता है कि हज़रत रसूले ख़ुदा (स) इस तरह नमाज़ ही क्यों पढ़ते थे कि आयशा एक मैय्यत की तरह आपके सामने होतीं? आख़िर इसमें कौन सी मसलेहत और कौन सा राज़ पिन्हा था जो मुसलमानों या खुद आयशा के लिए नमूनए अमल बन सकता था? और अगर ये कहा जाये कि हज़रत आयशा का हुज़रह तंग था इसलिए रसूल (स) को मजबूरन इस तरह नमाज़ अदा करनी पड़ती थी, तो इसका खुला हुआ जवाब ये है कि आयशा का हुजरह मस्जिद से मुलहको मुत्तसिल था, हुजूर (स) वहां, यानी मस्जिद में नमाज़ अदा कर सकते थे, क्या ज़रूरी था कि आयशा की इस गुस्ताख़ी और बेअदबी के सामने बेचारी नमाज़ की हुर्मत पामाल होती।

दूसरी रवायत जिसमें आयशा फ़रमाती हैं कि मैं पैग़म्बर (स) के सामने इस तरह लेटी होती कि मेरे पांव हुजूर (स) के बायें हाथ की तरफ़ और सरो–धड़ दाहिने हाथ की तरफ होता, अजीब तरद्दद पैदा

---

1. बुख़ारी :– ज. 1 स. 51, बाबुस सलात मसनद ज. 6 स. 125

करती है। इसका मतलब तो ये हुआ कि रसूले अकरम सल्लल्लाहो अलैहे व आलेही वसल्लम का सरे अक्दस हज़रत आयशा की कमर के "आस पास" होता था। (लाहौला बाला कुव्वत)

हज़रत आयशा का एतिराफ़

"हाय उस ज़ूद पशेमां का पशेमां होना"

हज़रत आयशा फ़रमाती हैं कि तुमने बुरा किया जो हम लोगों को कुत्ते और गधे के बराबर कर दिया, बेशक मैंने अपने को देखा कि रसूले खुदा (स) नमाज़ पढ़ते होते थे और मैं आपके और क़िबले के दर्मियान लेटी होती[1]

ये हदीस इस लिहोज़ से भी नाक़िस है कि इसमें ये सराहत नहीं है कि आयशा का तख़ातुब किन लोगों से है, जिन्होंने उनके हक़ में बुरा किया, और इस गुस्ताख़ी के मुर्तकिब हुए कि उन्हें कुत्ते और गधे के बराबर कर दिया। इस मन्ज़ेलत और फ़ज़ीलत में सहाबा का हाथ था या किसी और का? बुख़ारी के मुतर्जिम (जिन्होंने ये रवायत नक़ल की है) मिर्ज़ा हैरत ने भी कोई तसरीह नहीं फ़रमाई जिससे कुछ पता चलता, फ़िर आयशा ने "हम लोगों" का जुमला इस्तेमाल किया है जिससे ये इश्तेबाह पैदा होता है।

इस फ़ज़ीलत में मौसूफ़ा के अलावह उनके ग्रुप की कोई और औरत भी शामिल है।

आयशा की हड्डी

आयशा का बयान है कि :–

दसतरख़्वान पर जब आं हज़रत (स) मेरे साथ खाना खाते तो उसी हड्डी को आप भी चूसते, जिसे मैं चूसती थी, और उसी प्याले में

---

1. तर्जमा :– सहीह बुखारी, मिर्जा हैरत देहल्वी

उसी जगह आप भी मुंह लगाकर पीते जिस प्याले में जहां पर मैं मुंह लगाती थी, हालांकि मैं हैज़ की हालत में होती थी।[1]

इस बयान के ज़रिये हज़रत आयशा का मक़सद सिर्फ़ ये ज़ाहिर करना है कि रसूले ख़ुदा (स) आपको इस क़द्र चाहते थे कि उन्हें आपके थूक या हैज़ से कोई गुरेज़ नहीं था लेकिन ये बात समझ में नहीं आती कि आख़िर आं हज़रत उसी हड्डी को क्यों चूसते थे जिसे आप चूसतीं थी? क्या आधी हड्डी आपके और आधी हड्डी पैग़म्बर (स) के मुंह में होती थी क्या उस हड्डी में दोनों तरफ़ छेद होता था कि आधा गुदा आपके हिस्से में और आधा गूदा पैग़म्बर के हिस्से में आता था? या फ़िर चूसने का कोई और तरीक़ा था कि जब आप उस हड्डी को चूस लेती थी, तो पैग़म्बर चूसते थे? मगर आपके चूसने के बाद उसमें गोश्त, गूदा या शोर्बा वग़ैरह तो रहता न होगा, फिर पैग़म्बर क्या चूसते थे?

बयान में ये सराहत भी नहीं की गयी कि जिस प्याले में आयशा और पैग़म्बर एक ही जगह मुंह लगाकर पीते थे उसमें क्या चीज़ होती थी? पानी......... या कुछ और!

फ़िर ये बयान करती हैं कि मैं हैज़ की हालत में होती थी कौन सी ख़ुसूसियत पिन्हा हैं? इससे तो आयशा की बेग़ैरती और बेशर्मी का पता चलता है।

शैतानी काम

एक मरतबा ईद के मौक़े पर अबूबकर अपनी बेटी आयशा से मिलने आये तो उन्होंने देखा कि उनके साथ कुछ लड़कियां गाना गा रही है, और रसूलल्लाह (स) क़रीब ही कपड़ा होढ़े लेटे हुए हैं। अबूबकर को ये देखकर कुछ गुस्सा आया और वो बेटी पर चींख पड़े। रसूलल्लाह के घर में ये शैतानी काम! रसूलल्लाह (स) ने अपने चेहरे से कपड़ा हटाया और फ़रमाया :–

---

1. अहमद बिन हम्बल :– ज. 6 स. 64

अबूबकर! इन्हें कुछ न कहो, ईद का दिन है, लड़कियां अपना दिल बहला रही हैं।[1]

ताज्जुब की बात तो ये है कि अबूबकर इस फ़ेल को शैतानी काम से ताबीर करते हैं और रसूलल्लाह (स) कहते हैं, "कुछ न कहो" इसका मतलब तो ये हुआ कि आयशा के इस शग़ले ग़िना को पैग़म्बर रहमानी फ़ेल पर महमूल करते हैं। (अयाज़न बिल्लाह) ख़ुदा समझे उन रावियों से जो अल्लाह के हबीब पर इस बोहतान के मुर्तकिब हैं।

हब्शियों का नाच

आयशा फरमाती हैं कि ईद का दिन था, मस्जिद में हब्शियों की एक टोली अपना नाच और कर्तब दिखा रही थी। रसूलल्लाह ने मुझसे फ़रमाया, क्या तुम भी नाच देखोगी? मैंने रज़ामन्दी ज़ाहिर की तो आं हज़रत (स) मुझे ले गये और इस तरह अपनी पुश्त पर मुझे खड़ा किया कि मेरे रूख़सार आपके रूख़सारों पर थे। नाचने वालों को आं हज़रत लल्कार–लल्कार कर झूम–झूम कर नाचने की तरग़ीब दे रहे थे और मैं लुत्फ़ अन्दोज़ हो रही थी। यहां तक कि मैं थक गयी तो तो आपने फ़रमाया, अच्छा अब घर चलो।[2]

ये वाक़िया मुसलमानों की ग़ैरत इस्लामी के लिए इबरत का एक ताज़ियाना है। सिर्फ़ ये ज़ाहिर करने के लिए कि रसूले करीम (स) आयशा को कितना चाहते थे, उम्मते मुस्लिमा ने दुशमनाने इस्लाम की गढ़ी हुई रवायतों को बख़ुशी क़ुबूल कर लिया। और ये न सोचा कि मुर्सलेआज़म को इन ख़ुराफ़ात, लग्वियान और मुज़रवफ़रात से क्या सरोकार? अज़मत, विक़ार और मनसब के लिहाज़ से क्या इस अम्र की तवक्क़ो की तवक्क़ो की जा सकती है कि रसूलल्लाह (स) हब्शियों का नाच और तमाशा देखते? वो भी मस्जिद में..........! क्या एक शौक़ीन

---

1. बुख़ारी :– ज. 1 स. 108, किताबुल ईदैन
2. बुख़ारी :– ज. 4 स. 30, 5118 नसरूल बारी (तरजमा) सहीह बुखारी :– ज. 1 स.178 मसनद अहमद बिन हम्बल :– स. 499, मुस्लिम व तिर्मिज़ी वग़ैरह

मिज़ाज औरत के लिए हुजूर (स) मस्जिद के एहतिराम को अपने हाथों दफ़्न कर सकते थे? गैर......... मुम्किन है।

कहानियों का शौक़

अक़ीदत मन्दाने आयशा बड़े फ़ख्र से बयान करते हैं कि उम्मुल मोमिनीन को कहानियां सुनने और सुनाने का बेहद शौक़ था। चुनांचे कभी आप आं हज़रत (स) को क़िस्से, कहानियां सुनाया करती थीं और कभी आं हज़रत (स) आपको कहानी सुनाया करते थे।[1]

ये अम्र ग़ौर तलब है कि क़ससों हिकायात की खुराफ़ात और दास्तानों अफ़साना गोई की लग्वियात से रसूल (स) की परहेज़गारी का एलान परवरदिगार रिसालत से पहले करता है, मगर मबऊस बरिसालत होने के बाद आप तबलीग़ के मैदान में उतरे तो ख़ुदा की तरफ़ से ये हुक्म हो गया कि आप रात–रात भर बीवियों का दिल बहलायें क़िस्सा सुनायें कहानियां और दास्तानें बयान करें और उनसे खुद भी सुनें। गानें सुनिये और हब्शियों का नाच दिखाईये और देखिये।

लम्बी दौड़

हज़रत आयशा का बयान है :–

"एक सफ़र में रसूलल्लाह (स) के साथ मैं भी थी। अचानक आपने असहाब को हुक्म दिया कि तुम सब लोग आगे बढ़ जाओ। जब लोग कुछ दूर आगे चले गये तो आं हज़रत ने मुझसे फ़रमाया, ऐ आयशा! आओ हम दोनों दौड़े तो मैं आगे निकल गयी और आं हज़रत पीछे रह गये। उन्हें शर्मिन्दगी हुई और वो इस बात को दिल में लिए रहे। फ़िर ऐसा ही एक दूसरा मौक़ा आया, और हम दोनों की दौड़ हुई। अब चूंकि मैं मोटी हो चुकी थी इसलिए हार गयी। रसूलअल्लाह ने

1. मिशकात :– स. 281 रफाउल अजाज़ा तर्जमा सुन्ने इब्ने माजा ज. 2 स. 52

फ़रमाया "ये उस दिन का बदला है।"[1]

अगर ये वाक़िया सहीह है तो पहली बार आयशा की सुर्अते रफ़्तार, और दूसरी बार मोटापे की दौड़ को देखकर मलाएका भी खिलखिला कर हंस पड़ें होंगे, इसके अलावा इस लम्बी दौड़ का मक़सद क्या था? खुदा जानें!

छुली छुलय्या

आयशा का बयान है कि आं हज़रत (स) मेरे साथ "छुली छुलय्या" खेला करते थे। चुनांचे जब मैं भागती तो वो मेरे पीछे दौड़ते, और जब मैं छुप जाती तो वो मुझे ढूंड निकालते।[2]

काश..... मैं उम्मुल मोमिनीन के दौर में पैदा हुआ होता तो इन्तिाई अदबों एहतिराम से उनसे पूछता कि ऐ मादरेगिरामी! रसूलल्लाह (स) की नमाज़ के वक़्त उनके सामने मैय्यत की तरह आपका पड़ी रहना ये ज़ाहिर करता है कि आपका हुज़रा इतना तंग था कि उसमें "छुली छुलय्या" खेलने की गुन्जाइश नहीं थी, आख़िर ये "छुली छुलय्या खेली कहां जाती थी? किसी और के घर में? या.........

आऊज़ो बिल्लाहे मिन हाज़ल खुराफ़ात

आयशा फ़रमाती हैं कि मैं आं हज़रत (स) के कपड़ों से "मनी" ख़ुरच कर साफ़ कर देती थी और आप उसी को पहन कर नमाज़ पढ़ते थे।[3]

---

1. मसनद अहमद बिन हम्बल :– ज. 6 स. 157 बुख़ारी बाब हसुनुल मुआशिरत स. 780

2. अल मुअल्लिम तरज़मा मुस्लिम : ज० 2 स० 536, मज़ाहिरे हक़ :– ज० 3, स० 162

3. अल मुअल्लिम तरजमा सहीह मुस्लिम :– ज. 1 स. 468

आयशा फ़रमाती हैं कि हालते हैज़ में आं हज़रत (स) मेरे साथ मुबाशिरत फ़रमाते थे।[1]

आयशा फ़रमाती हैं कि हालते हैज़ में आं हज़रत (स) अपनी अज़वाज के साथ कपड़ों के ऊपर से मुबाशिरत करते थे।[2]

आयशा फ़रमाती हैं कि हालते मैं हैज़ से होती थी और आं हज़रत (स) मेरी गोद में सर रखकर कुर्आन की तिलवात किया करते थे।[3]

आयशा फ़रमाती हैं कि लड़कियों को आं हज़रत (स) अपने कंधों पर बिठाकर नमाज़ पढ़ाते थे।[4]

आयशा फ़रमाती हैं कि हालते सौम में आं हज़रत मेरा मुंह चूमते थे और कभी–कभी मेरी ज़बान अपने दहन में लेकर चूसा करते थे।[5]

अब मुसलमान खुद फैसला करें कि एक ऐसी औरत जिसकी नफ़सानी, शहवानी, अख़लाक़ी, मुआशरती, दीनी और ईमानी हालातों ख़यालात ऐसे नागुफ़्ताबह हों, और जिसे रसूल (स) जैसी अज़ी मुश्शान व अज़ीमुल मरतबत हस्ती पर इस क़िस्म के बेहूदह, लग्व, नाजाइज़ और तहज़ीब से गुज़रे हुए इलज़ामात आइद करते हुए शर्म, हया, और ग़ैरत न आती हो और न जिसे अपने शौहर की अज़मत, बुजुर्गी और वक़ार का पासो लिहाज़ हो। इस्लाम और हले इस्लाम की नज़र में किस हैसियत की हामिल हो सकती है और किस नज़र से देखी जा सकती है।

---

1. बुख़ारी :– ज. 1 स. 40-46 किताबुल हैज अल मोअल्लिम तरजमा मुस्लिम :– ज. 1 स. 474, 489 मदारेजुन्नुबूव्वत ज. 2 स. 601 सहीह मुस्लिम ज. 1 स. 41
2. मसनद अहमद बिन हम्बल :– ज. 6 स. 37
3. बुख़ारी :– ज. 1 स. 41, मिश्कात :– स. 56
4. नसरूल बारी तरजमा सहीह बुखारी :– ज. 1 स. 200, एहकामुल मसाजिद, मसनद अहमद बिन हम्बल :– ज. 6 स. 101
5. बुख़ारी :– ज. 1 स. 211,

हज़रत आयशा का अनोखा गुस्ल

अबूबकर बिन हफ़स का बयान है कि मैंने अबू सलमा से सुना, वो कहता है कि मैं आयशा के भाई के हमराह आयशा के पास इस ग़रज़ से गया कि उनसे ये मालूम करूं कि रसूलल्लाह (स) किस तरह और कितने पानी से गुस्ल फ़रमाते थे?

हज़रत आयशा ने एक बरतन में सवा सेर पानी मंगवाया,और परदह दर्मियान में डालकर गुस्ल किया इस तरह कि पानी अपने सर पर ड़ाला।[1]

पूछने वाले इसलिए गये थे कि उम्मुल मोमिनीन से गुस्ल का तरीक़ा मालूम करें, और मुअज़्ज़मा ने गुस्ल करके अमली तौर पर बता भी दिया, लेकिन दर्मियान में परदह हाइल था। पूछने वालों को बग़ैर देखे गुस्ल का तरीक़ा क्यों कर मालूम हुआ? अक़्ल में सिर्फ़ एक बात आती है और वो ये कि परदह बारीक़ था उधर की चीज़ इधर दिखाई दे रही थी।

आयशा के बारे में रसूल की पेशिनगोइयां

एक दिन आयशा के घर की तरफ़ इशारा करते हुए मुख़बिरे सादिक (स) ने मस्जिद में बालाए मिम्बर इरशाद फ़रमाया :–

इस घर में फ़ितना है और यहीं से शैतान अपनी सींग निकालेगा।"[2]

---

1. बुखारी :– ज. 1 स. 39, किताबुल गुस्ल तबआ मुजतबाई 1332 हिजरी
2. बुखारी :– ज. 2 स. 132 (मिस्र)

एक बार हज़रत अली (अ) की मौजूदगी में रसूले अकरम (स) ने आयशा से फ़रमाया :–

"मेरी बीवियों में एक बीवी मेरे इब्ने अम पर ख़ुरूज करेगी।"

आं हज़रत (स) की ज़बान ने मुबारक से ये फ़िक़रह सुनकर आयशा बेइख़्तियार हंस पड़ीं तो आपने मज़ीद फ़रमाया :–

"ऐ आयशा! कहीं वो तुम न हो।"

फ़िर अली (स) से मुख़ातिब हुए और कहा :–

"अगर इसका मामला तुम्हारे सिपुर्द हो जाये तो इसके साथ नर्मी करना।"[1]

एक बार फ़िर आपने आयशा से फ़रमाया :–

"मेरी एक बीवी सुर्ख़ ऊँट पर सवार होकर अली पर ख़ुरूज करेगी और उस पर "हव्वाब" के कुत्ते भौंकेगे।"[2]

रसूलल्लाह (स) इन पेशिनगोइयों के ज़रिये आयशा को आगाह भी कर रहे थे और हुज्जत भी तमाम कर रहे थे वरना आप जुम्ला हालात से बख़ूबी वाक़िफ़ और बाख़बर थे।

एक अनार दो बीमार

क़त्ले उसमान के ख़ुसूसी मुजरिम तल्हा इब्ने उबैदल्लाह के लिए हज़रत आयशा के दिल में किस क़िस्म के ख़यालातो जज़्बात थे? ख़ुदा जाने! तारीख़ें तो हमें यही बताती हैं कि मिस्टर तल्हा अकसर ये कहा करते थे कि रसूलल्लाह (स) की वफ़ात के बाद मैं आयशा से अक़्द करूंगा।[3]

---

1. अबुल फिदा :– ज. 2 स. 71, (मिस्र) सवाइक़े मुहर्रिका :–स. 71 (मिस्र)
2. अबुल फिदा :– ज. 2 स. 71, अवाहिब :– ज. 2 स. 95
3. दर मन्सूर :– ज. 5 स. 214, (मिस्र)

"तुम्हारे लिए ये हर्गिज़ जाइज़ नहीं कि तुम रसूल को अज़ीयत दो और उनके बाद उनकी बीवियों से अक़्द का इरादा करो।"[1]

ये अम्र ग़ौर तलब है कि तल्हा की इस गुस्ताख़ी और दरीदह दहनी पर बरहम–व–नाराज़ होने के बजाय हज़रत आयशा ने सिर्फ़ ख़ामोशी इख़तियार की बल्कि ऐसे कमीना ख़सलत इन्सान के हर फ़ेल में सहीमो शरीक रहीं, यहां तक कि उसकी रिफ़ाक़त में आपने अपनी ग़ैरत, हया और शर्म को बालाए ताक़ रखकर ख़ुदा और रसूल की मर्ज़ी के ख़िलाफ़ क़दम उठाया और घर का गोशा छोड़कर वो तवील सफ़र इख़तियार किया जिसकी मन्ज़िल जमल में हज़रत अली के ख़िलाफ़ महाज़ अराई पर ख़त्म हुई।

इसके बरअक़्स हज़रत आयशा अमीरूल मोमिनीन से महज़ इस बात पर तमाम उम्र बरहमों बरगश्ता रहीं कि "अफ़क़" के मामलें में उन्होंने रसूलल्लाह (स) को ये मशवरह दिया था कि ये (आयशा) आपकी जूती का तसमा है, तलाक़ देकर उससे पीछा छुड़ाइये, आपके लिए औरतों की कमी नहीं है।

यक़ीनन ये वाक़िआ ऐसा है जो उम्मुल मोमिनीन के बातिनी किरदार का आईनादार है।

दूसरा अफ़सोस नाक वाक़िया मुआविया के फ़ासिको फ़ाजिर बेटे यज़ीद से मुताल्लिक़ है, जिसने 29 साल की उम्र में हज़रत आयशा से अक़्द की ख़्वाहिश का इज़हार करके मुअज़्ज़मा के 65 साला बुढ़ापे को चक्कर में डाल दिया था, शाह अब्दुल हक़ मुहद्दिसे देहल्वी फ़रमाते हैं:–

"किताबों में मिलता है कि यज़ीदे शक़ी ने हज़रत आयशा से निकाह की ख़्वाहिश का इज़हार किया, लोगों ने उसे बहुत समझाया और इस इरादए बद से बाज़ रखने के लिए क़ुर्आन की आयत पढ़ी कि नबी की बीवी से निकाह नाजाइज़ है तब कहीं जाकर वो मनहूस बाज़ आया।"[2]

---

1. क़ुर्आने मजीद :– पा. 22, आयत. 54
2. मदारिजुन्नुबूव्वत :– ज. 1, स. 266

कौन कह सकता है कि यज़ीदे मलऊन के इस ख़बीस इरादे में इस्लाम और पैग़म्बरे इस्लाम की तौहीनों तज़लील का जज़्बाकार फ़रमा नहीं था, बड़ी ख़ैरियत हुई कि कुर्आन की आयत आयशा के हक़ में सिपर बन गयी वरना इस कमबख़्त की जवानी मुअज़्ज़मा के बुढ़ापे की मिट्टी ख़राब कर देती। अब ऐसी सूरत में अगर कोई शख़्स तल्हा और यज़ीद पर लानत करे तो उसके इस फेल को हक़ बजानिब क्यों न कहा जाय?

पैग़म्बरे इस्लाम(स) की शहादत

हज़रत मोहम्मदे मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहे व आलेहि वसल्लम से इमामे हसन असकरी (अ) तक मासूमों की फ़ेहरिस्त में कोई मासूम ऐसा नहीं जो शहादत के दर्जे पर फाइज़ न हुआ हो। किसी को ज़हर दिया गया और किसी की शहादत तलवार से वाक़े हुई। इन तमाम शहीदों की सफ़ में एक मासूमा भी शामिल है जो उमर इब्ने ख़त्ताब की शमशीरे जुल्म से मनसबे शहादत पर फाइज़ हुई। इन तमाम मासूमों की शहादत का हाल किताबों के मरक़ूम हैं लेकिन रसूले अकरम की शहादत पर उलमाए अहले सुन्नत की तरफ़ से "अख़फ़ाए जुर्म" और शीआ उलमा की तरफ से चश्मपोशी, ख़ामोशी और रवादारी के मज़ाजी पर्दे पड़े हुए हैं। जिसकी वजह से मुसलमानों की अकसरियत अपनी नावाक़िफ़ियत की बिना पर हुज़ूर की शहादत को वफ़ात से ताबीर करती है। उन परदों को चाक होना चाहिए और हक़ीक़त को सामने आना चाहिए जैसा कि अमीरूल मोमिनीन हज़रत अली इब्ने अबी तालिब का इरशाद है कि "हक़ बात कहो ख़्वाह वो अपने ही ख़िलाफ़ क्यों न हो।"

"सहीह बुख़ारी", सिर्रूल आलमीन", "अलवाफ़ि" और "मिशकात" की रवायतों से इस बात की निशानदही होती है कि सरवरे क़ायनात (स) को आपकी अलालत के दौरान मदीने में ज़हर देकर शहीद किया गया।[1]

---

1. बुख़ारी :– ज. 3, स. 127 बाबुल लदु किताबुल तिब तबअ मिस्र 1314 हिजरी सिर्रूल आलमी बइमाम ग़ेजाली तबअ बम्बई :– स. 7, अल्वाफ़ी :– ज. 1 स. 166 बहवालए तहज़ीबुल एहकाम मिश्कात बाब :– 3, स. 85

इस इनकिशाफ़ के बाद मैं इस नतीजे पर पहुंचा हूं कि ख़ैबर में ज़हर खूरानी की तशहीर महज़ धोका थी और इसी जुर्म को छिपाने की ग़रज़ से अमल में लाई गयी थी।

अब सवाल ये पैदा होता है कि हुज़ूर (स) को ज़हर देने वाला कौन था? इसके जवाब में किताबें ख़ामोश हैं लिहाज़ा ऐसी सूरत में ज़रूरी है कि हक़ीक़त की तह तक पहुंचने के लिए रसूल के आख़िरी दौर में रूनुमा होने वाले उन हालात पर नज़र डाली जाय जिनके पस मन्ज़र में ज़हर दिये जाने के इमकानात मसतूरो मुज़्मरं हैं

तारीख़ गवाह है कि रसूल (स) की ज़िन्दगी के आख़िरी दौर यानी 8 हिजरी के अवाइल में ही कुछ मफ़ाद परस्तों और शरपसन्दों ने आपके खिलाफ़ साज़िशों का आग़ाज़ कर दिया था। जिसकी सबसे बड़ी दलील सूरए मुनाफ़िकून का नुज़ूल है। ये तमाम साज़िशें रसूलल्लाह (स) के इर्द गिर्द रहने वाले अफ़राद और मुनाफ़ित सहाबा की आग़ोशे मुनाफ़िकन में पल और बढ़ रही थी। ख़ास सबब? पैग़म्बर (स) की जानशीनी, इस्लामी क़यादत और इक़्तिदार का मसअला था।

इन साज़िशों में शिद्दत और सुरअत उस वक़्त पैदा हुई जब 9 हिजरी में पैग़म्बरे इस्लाम (स) तीस हज़ार का लश्कर लेकर शहनशहे रूम (हरक़ल) के मुक़ाबले को निकाले और..... तबूक नामी बसती में बीस रोज़ तक क़ियाम फ़रमाया। मगर चूकि जंग की नौबत नहीं आयी इसलिए इक्कीसवें दिन हुज़ूरे अकरम को लौट आना पड़ा।

वाज़्ह रहे कि इस मारके में रसूले अकरम (स) तमाम जंगों के फ़ात्ह अली को अपने हमराह नहीं ले गये थे जिस पर अमीरूल मोमिनीन कबींदह ख़ातिर हुए थे और आपने पैग़म्बर (स) से शिकवा भी किया था। हुज़ूर ने फ़रमाया कि ऐ अली! तुम मेरे जानशीन और ख़लीफ़ा हो इसलिए तुम्हारा यहां रहना और मेरा वहां जाना ज्यादा मुनासिब है।[1]

तज़किरए ख़वासुल उम्मा में है कि पैग़म्बर (स) ने फ़रमाया कि

---

1. इज़ालतुल खुल्फा :— ज. 2 स. 261

ऐ अली! क्या तुम इस बात पर शुख नहीं हो कि तुमको मुझसे वही निसबत है जो हारून को मूसा (अ) से थी।[1]

कनजूल आमाल में है कि हुजूरे अकरम (स) ने फ़रमाया कि ऐ अली! मैं तुम्हें इसलिए अपने साथ नहीं ले गया कि तुम ही मेरे बाद उम्मत के ख़लीफ़ा और मेरे जानशीन हो। मदीने की हालत सिर्फ़ मेरे और तुम्हारे रहने से ही दुरूस्त रह सकती है।[2]

यक़ीनन दहने रिसालत से निकले इन जुमलों से साज़िशी ये समझ गये होंगे कि पैग़म्बरे इस्लाम ने हज़रत अली (अ) को अपना जानशीन और ख़लीफ़ा मुक़र्रर करना तय कर लिया है और शायद यही वजह थी कि इनही साज़िशों ने रसूले अकरम (स) की शम्मे हयात गुल करने की नापाको नाकाम कोशिश भी की जो तारीख़ में "वाक़ेए उक्बा" के नाम से मशहूर है।

इसमें कोई शक नहीं किये इक़्दाम इस्लाम में पहला शैतानी इक़दाम था। इज़माल ये है कि पैग़म्बरे इस्लाम का नाका तबूक की वापसी पर उक़्बा नामी पहाड़ी की ख़तरनाक ढलानों ने गुज़र रहा था, रात तारीक थी और उसी तारीकी में मुनाफ़िक़ीन अपने चेहरों को नक़ाबों से छिपाये ख़तमी मरतबत को मौत के घाट उतारने के लिए घात लगाये खड़े थे कि इतने में बएजाज़े इलाही बिजली चमकी और उसकी रौशनी इतनी देर तक क़ायम रही कि पैगम्बर (स) ने उन सबको पहचान लिया। और नाक़े की मेहार थामे हुए हुज़ैफ़ए यमानी (र) को उनके नामों से आगाह कर दिया लेकिन इसके साथ ही ये ताकीद भी फ़रमा दी कि किसी से इसका तज़किरह न करना वरना फ़साद बरपा हो जाएगा।[3]

तारीख़ ये बताती है कि इस वाक़िए के बाद हज़रत अमर हुज़ैफ़ा से अकसर पूछा करते थे कि क्या साज़िशी मुनाफ़िक़ीन में मेरा नाम भी शामिल है।[4]

---

1. तज़किरए ख़वासुल उम्मा :– स. 12
2. कन्जुल आमाल :– ज. 6 स. 404
3. तारीख़े ख़मीस :– ज. 2 स. 144.
4. मदारिजुन्नुबूव्वत :– ज. 2 स. 302

हुज़ैफा उमर के इस सवाल पर हमेशा ख़ामोश रहे, आख़िरकार वो वक़्त भी आ गया कि दमाग़ी कचोकों और क़ल्बी टहोकों से मजबूर होकर हज़रत उमर ने खुद बखुद ये एतिराफ़ कर लिया कि, ऐ हुज़ैफ़ा खुदा की क़सम मैं भी उन मुनाफ़िक़ीन में शामिल हूं जो रसूलल्लाह (स) को मौत के घाट उतारना चाहते थे।[1]

इस अफ़सोस नाक वाक़िए के बाद व हिजरी में एक वाक़िआ और रूनुमा हुआ। जिसने मुनाफिक़ीन की साज़िशी मसरूफ़ियात में मज़ीद तेज़ी पैदा कर दी, और वो ये है कि माहेज़िल्हिज में पैगम्बरे इस्लाम (स) ने तीन सौ मुसलमानों का एक क़ाफ़िला अबूबकर की सरबराही में मदीने से मक्के की तरफ़ बग़रजे हज रवान किया। और इसके साथ ही सूरए बराअत भी अबूबकर के हवाले करके ये हुक्म सादिर फ़रमाया कि वो इसकी तबलीग़ हज के मौके पर करे दें। हज़रत अबूबकर ने अपने मुक़द्दर पर नाज़ किया और क़ाफ़िला लेकर रवाना हो गये। अभी कुछ ही दूर क़ाफ़िला। पहुंचा था कि जिब्रील नाज़िल हुए और उन्हों ने फ़रमाया कि या रसूलल्लाह (स) परवर दिगारे आलम का ये हुक्म है कि सूरए बराअत की तबलीग़ आप खुद फ़रमायें या उसके हवाले करें जो आपकी ज़ुर्रियत में शामिल हो, कोई दूसरा शख़्स इस काम को अंजाम देने का मजाज़ नहीं है।

इस हुक्म के मौसूल होते ही रसूल (स) ने अपने इब्ने अम हज़रत अली इब्ने अबी तालिब (अ) को तलब किया और उन्हें इस तबलीग़ी मनसब पर फ़ाइज़ करते हुए ये इरशाद फ़रमाया कि तेज़ी से जाओ और अबूबकर से सूरए बराअत वापस लेकर उन्हें मदीने भेज दो। चुनांचे अबूबकर जब हज से महरूमी और तबलीग से माज़ूली का ग़म लेकर मदीने वापस आये तो रसूल (स) के सामने फूट–फूट कर रोने लगे।[2]

एक रवायत ये भी है कि अबूबकर के साथ उमर भी तबलीग़ पर मामूर हुए थे और वो भी माज़ूल किये गये।

---

1. मीज़ानुल एतिदाल तरजमा ज़ैद बिन वहब :– ज. 1 स. 336, मतबअ लखनऊ
2. बुखारी :– ज. 6 स. 238, फतहुल बारी :– ज. 10 स. 194, तारीखे ख़मीस :– ज.2 स. 156 दर मन्सूर :– ज. 2 स. 156, ज. 3 स. 110, कन्जुल आमाल :– ज. 1 स. 146

ज़ाहिर है कि हज़रत आयशा अबूबकर की बेटी थीं लिहाज़ा बाप की इस तौहीनो तज़लील पर उन्हे फ़ितरी तौर पर सदमा ज़रूर हुआ होगा।

10 हिजरी में पैग़म्बर ने आख़िरी फ़रीज़ए हज अदा किया अल्लामा तरीही का कहना है कि इस हज के मौक़े पर अबूबकर, उमर, अबू उबैदह, अब्दुर्रहमान और सालिम (हुज़ैफा का गुलाम) ने ख़ानए क़अबा में ये अहद किया कि वो ख़िलाफ़त को बनी हाशिम में नहीं जाने देंगे।

अल्लाम की तहरीर से ये इन्किशाफ़ भी होता है कि उम्मुल मोमिनीन हज़रत आयशा इस साज़िशी गिरोह की सरगर्म मेम्बर थीं।

अंग्रेज़ मुवर्रिख़ "डेविन पोर्ट" अपनी किताब "तारीख़े ख़िलाफत" में लिखता है कि रसूल (स) की ज़िन्दगी ही में ये मस्अला तय हो चुका था कि हज़रत अली (अ) जो हर तरह ख़िलाफ़त के हक़दार हैं अपने हक़ को पहुंचने न पायें।

लुत्फ़ की बात तो ये है कि एक तरफ़ साज़िशी हज़रत अली को ख़िलाफ़त से महरूम रखने के लिए कोशां थे, और दूसरी तरफ़ परवर दिगारे आलम अपने हबीब को ये हुकम दे रहा था कि जब तुम हज से फ़ारिग़ हो चुको तो अपना जानशीन मुक़र्रर कर लो।[1]

ग़रज़ कि रसूल जब हज से फ़ारिग़ हुए और उनके साथ एक अज़ीम क़ाफ़िला पलटा तो रास्ते में ग़दीरे ख़ुम के मक़ाम पर जलाले किबरिया का आईना बनकर ये आयत नाज़िल हुई कि "ऐ रसूल (स) जो तुम पर नाज़िल किया गया है उसे फ़ौरी तौर पर पहुंचा दो और अगर तुमने ऐसा न किया तो गोया रिसालत का कोई काम अन्जाम ही नहीं दिया। खुदा तुम्हें मुनाफ़िक़ीन के शर से महफ़ूज़ रखेगा।[2]

अब रसूल के लिए ताख़ीर मुम्किन नहीं थी चुनाचें आपने ज़ुल अशीरह में किये गये वादे के मुताबिक़ "मनकुन्तो मौला ही फ़हाज़ा

---

1. इबशेराह आयत : 7
2. माइदह :– आयत : 67

अलीयुन मौला" कहकर अली को अपना जसा हाकिम बना दिया।[1] अबनाअना, निसाअना, वअनफ़ोसना की अमली तफ़सीर के ज़रिये अहलेबैत (अ) में शामिल जुमला अफ़राद का ताअर्रुफ़ भी करा दिया।

साज़िशयों और साज़िशों से पैगम्बरे इस्लाम (स) हर्गिज़ बेख़बर नहीं थे अगर बेख़बर होते तो अपनी ज़िन्दगी के आख़िरी अय्याम में ऐसे अहकाम सादिर न फ़रमाते जिनसे आकाबिरीने सहाबा ने न सिर्फ़ इख़तिलाफ़ किया बल्कि ऐसी नाफ़रमानियों और गुस्ताख़ियों के मुर्तकिब हुए कि सरकारे दो आलम को लअनत जैसा अबदी हर्बा इस्तिमाल करना पड़ा।

अपनी अलालत और शहादत के दर्मियान रसूले अकरम (स) ने उम्मत को इन्तिशारों इफ़्तिराक़ और दाएमी फ़िर्क़ा बन्दी से बचाने के लिए बड़े ही हकीमाना अन्दाज़ में लशकर की तशकील की जिसकी सरबराही और क़यादत पर असामा बिन ज़ैद को मामूर फ़रमाया।

ख़तमी मरतबत ने इस लशकर में हज़रत अली (अ) ओर चन्द मख़सूस सहाबा को छोड़ के तमाम अनसारों मुहाजिरीन और आयाने मदीना के हमराह अबूबकरों उमरों उस्मान, सअद इब्ने अबी विक़ास, उबैदए जर्राह, अब्दुर्रहमान बिन औफ़, तल्हा और ज़ुबैर वग़ैरह को भी शामिल किया, और उन्हें ये ताजीली हुक्म दिया कि सब लोग बग़ैर किसी ताख़ीर के मदीना छोड़ के असामा के साथ महाजे जंग पर रवाना हो जायें।

असामा बिन ज़ैद हुक्में पैग़म्बर (स) के मुताबिक़ लशकर लेकर मदीने से रवाना हुए मगर अभी सिर्फ़ तीन मील का रास्ता तय हुआ था कि उन्हें जरफ़ नामी एक मक़ाम पर ठहर जाना पड़ा, इसका सबब ये था कि अबूबकर वग़ैरह इस लशकर में शामिल नहीं हुए थे।[2]

असामा तीन दिन तक इन लोगों का इन्तिज़ार करते रहे मगर उन्हें न जाना था न गये। अलबत्ता असामा को उम्मे ऐमन के तवस्सुल

---

1. तफसीर दर मन्सूर :– ज. 2, स. 398
2. कामिल :– ज. 2, स. 120, तबरी :– ज. 3 स. 188

से हज़रत आयशा का ये पैग़ाम ज़रूर मौसूल हुआ कि पैग़म्बर (स) की हालत नाज़ुक है, लिहाज़ा लशकर को पेशक़दमी करने के बजाय मदीने की तरफ़ वापस पलट आना चाहिए।

अबूबकर वग़ैरह की तरफ़ से असामा का तखल्लुफ़ और हज़रत आयशा की तरफ़ से हुक्मे पैग़म्बर (स) के ख़िलाफ़ लशकर को पलटाने का नारवा इक़्दाम हमें ये सोचने पर मजबूर करता है कि बाप और बेटी के दर्मियान ख़िलाफ़त के बारे में कोई तालमेल ज़रूर था और शायद आयशा की दूर रस निगाहों ने ये भी महसूस कर लिया था कि ख़िलाफ़त के बारे में पैग़म्बर को जिन लोगों से ख़तरा था उन्हें आप मदीने से बाहर भेज देना चाहते थे ताकि अली से कोई झगड़ा न कर सके। ये भी मुम्किन है कि आयशा ने लशकर को वापस पलटा कर रसूल के बाद ख़िलाफ़त के मसअले पर साहिबे ज़ुल्फ़िक़ार के मुक़ाबले में अपने बाप को तहफ़्फ़ुज़ देने का ख़्याल किया हो।

बहरहाल तारीख़ी तजज़िये के बाद हर इन्साफ़ पसन्द शख़्स ये कहने पर मजबूर होगा कि हज़रत आयशा की इस हिक्मते अमली ने रसूले अकरम (स) के तमाम मनसूबों पर पानी फ़ेर दिया।

इस वाक़ेए के बाद तमाम साजिशी लोग खुलकर रसूल (स) के सामने आ गये। इसकी मोहकम दलील ये है कि वक़्ते आख़िर जब सरकारे दो आलम ने मिल्लते मुस्लिमा को गुमराही से बचाने और ख़िलाफ़त के इश्काल को दूर करने के लिए कलम, दवात और काग़ज तलब किया तो इन्हीं साज़िशियों ने मुख़ालिफ़त की और हंगामा बरपा किया। उमर इब्ने ख़त्ताब इस क़दर मुश्तइल हुए कि उन्होंने यहां तक कह दिया कि इस मर्द को इसके हाल पर छोड़ दो क्योंकि ये हिज़्यान बक रहा है। हमारे लिए ख़ुदा की किताब काफ़ी है।[1] मज़ीद किसी नविशते की ज़रूरत नहीं । ये बात अलाहिदा है कि उमर की इस गुस्ताखी पर आं हज़रत (स) ने उन्हें और उनके साथियों को अपने घर से निकाल बाहर किया।[2]

---

1. बुखारी :– ज. 1, स. 134, मुस्लिम :– ज. 5 स. 76, सिर्रूल आलेमीन :– स. 90
2. बुखारी :- ज. 3, स. 701, मुस्लिम :– ज. 5 स. 77

ये वो हादसात हैं जो पैग़म्बर (स) के आख़िरी दौरे हयात में यके बाद दीगरे रूनुमा होते रहे। इनको तसलसुल ये बताता है कि इन तमाम वाक़िआत के पसेपर्दा सिर्फ़ हवसे इक़्तिदार का ज़ज्बाकार फ़रमा था और तमाम साज़िशी ये उम्मीद लिए बैठे थे कि किसी तरह रसूल (स) की आंखे बन्द हों और अपने देरीना मनसूबों को अमली जामा पहना सकें। जैसा कि डॉक्टर मोहम्मद अबूबकर खां मलिहाबादी अपने एक मज़मून में तहरीर फ़रमाते हैं :–

"सादा लौह मुसलमान और चालाक मुनाफ़िक़ीन मरे नहीं थे बल्कि मुनाफ़िक़त की नक़ाब चेहरों पर डाले मुसलमानों में घुल मिल गये थे और उस दिन का इन्तिज़ार कर रहे थे कि पैग़म्बर (स) की आंखे बन्द हो और वो सलतनते इस्लामी पर क़ब्ज़ा करके खूब गुलछर्रे उड़ायें"।[1]

अज़मतों इक़्तिदार की भू की शख़्सियतें कितनी परेशान थीं और सज़िशी गिरोह के अरकान पर खिलाफ़त का भूत किस हद तक सवार था? इसका अन्दाज़ा हज़रत आयशा के उस बयान से होता है जिसमें आप फ़रमाती हैं कि :–

वक़्ते आख़िर पैग़म्बर (स) ने मुझसे फ़रमाया कि मेरे हबीब को बुलाओं तो मैंने अपने वालिद अबूबकर को बुलाया आंहज़रत (स) ने उन्हें देखा तो मुंह फ़ेर लिया। कुछ तवक्कुफ़ के फ़िर फ़रमाया कि मेरे हबीब को बुलाओ तो मैंने उमर को बुलाया। उन्हें भी देखकर आं हज़रत (स) ने मुंह फ़ेर लिया। तीसरी मरतबा फ़िर फ़रमाया कि मेरे हबीब को बुलाओ तो मैंने अली को तलब किया जब वो आए तो सरकारे दो आलम (स) ने उन्हें अपनी चादर में ले लिया और उस वक़्त तक अपने सीने से लगाये रहे जब तक कि आपकी रूह आपके, जिस्म से परवाज़ न कर गयी।[2]

हज़रत आयशा के मज़कूरह बयान पर ग़ौर करने से मुन्दर्जा ज़ेल बातों का इन्किशाफ़ होता है।

---

1. माखूज़ अलखुलफ़ा :– ज. 1, स. 91
2. रियाजुन्नज़रह :– ज. 2, स. 180

(1) ये कि दौराने अलालत पैग़म्बरे इस्लाम (स) के पास साज़िशियों और आंयशा के अलावा ख़ानदाने बनी हाशिम में से कोई मौजूद नहीं था।

(2) पैग़म्बर (स) के मुताल्लेक़ीन और क़राबतदारों को पैग़म्बर (स) की कुर्बत से अलग रखा गया था।

(3) हज़रत आयशा की नीयत साफ़ न थी वरना वो रसूल की पहली ही आवाज़ पर हज़रत अली (अ) को तलब करतीं क्योंकि वो जानती थीं कि ख़ुदा को हबीब का हबीब हज़रत अली के अलावा और कोई नहीं हो सकता।

(4) हज़रत आयशा ने ऐसे लोगो को क्यों तलब किया जो साज़िशी गिरोह के मुखिया थे और जिनके मकरूह चेहरों को देखकर पैग़म्बर (स) ने अपना मुंह फ़ेर लिया।

इन तमाम उमूर का ख़ास सबब आले रसूल (स) और अली (अ) से हज़रत आयशा की बुनियादी दुशमनी थी जैसा कि अंग्रेज़ मुवर्रिख मिस्टर गिबन का कहना है कि :—

रसूल का बिसतरे मरज़ आयशा जैसी चालाक औरत के मुहासिरे में था जो अबूबकर की बेटी और अली की बदतरीन दुशमन थीं।[1]

शम्सुल उलमा डिप्टी नज़ीर अहमद फ़रमाते हैं :—

"आयश इब्तिदाए अलालत से तादमें मर्ग पैग़म्बर (स) के पास से न खिसकीं"।[2]

इसकी वजह मौसूफ़ ये बयान करते हैं कि :—

"वो (आयशा) दिल से बाप की इमामत और ख़िलाफ़त सभी कुछ चाहती थीं।"[3]

---

1. तारीख़े उरूजे ज़वाले सल्तनते रूम :— स. 928,
2. उम्महातुल उम्मा :— स. 91
3. उम्महातुल उम्मा :— स. 102

अपने बाप के लिए आयशा की तमन्नाए ख़िलाफ़त के बारे में शम्सुल उलमा का नज़रिया सौ फ़ीसद दुरूस्त है, मगर अबूबकर की इमामत यानी पेश नमाज़ी की फ़रसूदह दास्तान से मुझे क़तई इत्तिफ़ाक़ नहीं हैं हालांकि इस दास्तान को तमाम मुवर्रेख़ीनों मुहद्दिदसी ने हज़रत आयशा की ज़बान से बयान किया है, और मौसूफ़ भी तहरीर फ़रमाते हैं :–

"तसफ़ीयए ख़िलाफ़त के वक़्त इसी इमामत को ख़िलाफ़ते अबूबकर के लिए ताज़ह सनद गर्दान कर इसी बिना पर सहाबा ने बिल इजमाअ हज़रत अबूबकर को पैग़म्बर साहब का ख़लीफ़ा तस्लीम कर लिया।[1]

तारीख़े शहिद है कि अबूबकर मुनाफ़िक़ भी थे और मुशरिक़ भी।[2] इसके अलावा अगर अबूबकर में इस्लामी और दीनी उमूर की अन्जाम दही की सलाहियत होतीं तो वो सूरए बराअत से माज़ूल न किये जाते या असामा के लशकर से तख़ल्लुक़ की बिना पर पैग़म्बरे इस्लाम उन पर लानत न फ़रमाते। भला ये कैसे मुम्किन था कि रसूले ख़ुदा (स) किसी ऐसे शख़्स को अपनी जगह पेशनमाज़ी जैसे अहम फ़रीज़े के लिए नामज़द करते जो मुनाफ़िक़ भी हो, मुशरिक भी हो, लानती भी हो और बहुक्में ख़ुदा क़ुर्आन के तबलीग़ी मनसब से माज़ूल भी किया गया हो। फिर खुद अबूबकर ने भी सकीफ़ा में बैअत के मौके पर इस दलील को ख़िलाफत की बुनियाद नहीं बनाया कि मै मस्जिदे नब्वी में का इमामे जमाअत हूँ और पैग़म्बरे इस्लाम ने मुझे इस मनसब पर फ़ाइज़ किया है और न ही उमर ने इस दलील की तरफ़ अबूबकर की तवज्जो मबजूल कराई। और न आयशा ने अपने वालिदे मोहतरम को ख़िलाफ़त के अखाड़े में भेजते वक़्त ये कहा कि आपकी ख़िलाफ़त के लिए आपकी इमामत की दलील मोहकम और काफ़ी है। अबूबकर जब ख़लीफ़ा बनने के बाद तख़ते खिलाफ़त पर मुतमक्किन हुए तो दरबारे ख़िलाफ़त में उन्होंने हज़रत अली के सामने भी इस्तेहक़ाक़े ख़िलाफ़त के बारे में इस

1. उम्महातुल उम्मा :– स. 98

2. अलखुलफा :– ज. 1 स. 52 दरमन्सूर :– ज. 4 स. 84, कन्जुल आमाल :– ज. 1 स. 271, इज़ालतुल खुल्फा :– ज. 1 स. 199, तफसीरे कबीर बर हाशिया फतहुल बयान ज. 5 स. 229 (मिस्र)

दलील को पेश नहीं किया। बहरहाल मेरे नज़दीक इस वाक़िए की कोई हक़ीक़तो अहमियत क़तई नहीं है ये सिर्फ़ मनगढ़त फ़र्ज़ी और बनी उमय्या की इख़तिराअ है जिसे हज़रत आयशा की तरफ़ मनसूब कर दिया गया है।

हक़ीक़त यही है कि पैग़म्बरे इस्लाम की हयात के आख़िरी दौर में हुज़ूरा (स) के ख़िलाफ़ जुम्ला साजिशों और साज़िशी गिरोह की तमामतर सरगर्मियां और महाजआराइयां सिर्फ और सिर्फ़ ख़िलाफ़त की बाज़याबी के लिए थी। हज़रत आयशा चूंकि अबूबकर की बेटी थीं लिहाज़ा फ़ितरी तौर पर उनकी दरपर्दा कोशिश ये थी कि रसूलल्लाह (स) के बाद खिलाफ़त की बागडोर उनके बाप अबूबकर के हाथों में रहे। मगर ये काम आसान नहीं था, क्योंकि पैग़म्बर आख़िरी हज से वापसी के दौरान ग़दीर में बहुक्मे ख़ुदा हज़रत अली की खिलाफ़तो विलायत का एलान करके तक़रीबन दो लाख मुसलमानों की मौजूदगी में उन्हें अपना जानशीन और ख़लीफ़ा मुक़र्रर कर चुके थे। अब मसअला सिर्फ उम्मते मुस्लिमा की तरफ़ से अली की ख़िलाफ़त पर अमल दर आमद का था जिसके बारे में पैग़म्बर ख़ुद भी ये महसूस कर रहे थे कि जब साज़िशी गिरोह के अफ़राद मदीने में मौजूद हैं, मुसलमानों को अली की ख़िलाफ़त पर मुत्तफ़िक़ो मुत्ताहिद होने न देंगे। इसीलिए आप तमाम साज़िशियों को असामा बिन ज़ैद के लशकर में शामिल करके मदीने से बाहर महाज़े जंग पर रवाना कर देना चाहते थे ताकि बाद में कोई झगड़ा ही न रहे। मगर हज़रत आयशा ने अपने सियासी जोड़ तोड़ से पैग़म्बर (स) के इस मनसूबे को नाकाम बनाकर अपने मक़सद में क़ामयाबी हासिल कर ली। जिसका नतीजा ये हुआ कि इस्लाम में फ़ित्नओं फ़साद के दरवाज़े खुल गये और मुसलमान तिहत्तर फ़िरक़ों में तक़सीम हो गये।

हुसूले ख़िलाफ़त की इस रस्साकशी के अलावा दूसरा अहमतरीन वाक़ेआ तल्हा इब्ने उबैदुल्लाह का है जो रसूल (स) के बाद आयशा से निकाह के ख़्वाहिशमन्द थे, यक़ीनन इस ख़्वाहिश में ख़ुद हज़रत आयशा की मर्ज़ी भी कारफ़रमा रही होंगी, वरना तल्हा ऐसे सहाबी की

क्या मजाल थी कि वो रसूल की ज़िन्दगी में उनकी ज़ौजा के मुताल्लिक़ इस क़िस्म की बेहूदह और ग़ैरशइस्ता ख़्वाहिश का इज़हार करते या ऐसे लागे़ कलमात अपनी ज़बान पर लातें। ये आम मुशहिदह है कि जब कोई शौहरदार औरत किसी ग़ैर मर्द की तरफ़ रूजूअ हो जाती है तो अकसरो बेशतर ख़तरनाक नताएज बरामद होते हैं।

इन तमाम हालातों वाक़ेआत के पेशे नज़र अहरत आयशा की तरफ़ से बिसतरे अलालत पर पैग़म्बरे इस्लाम को ज़हर का दिया जाना और मुजरिमाना फ़ेल का सरज़द होना बईद अज़ क़यास हरर्गिज़ नहीं है।

अबूबकर व उमर का दौरे हुकूमत और आयशा

रसूले अकरम सल्लल्लाहो अलैहे व आलेही वसल्लम के अहद में हज़रत आयशा की पूरी जिन्दगी खेलकूद, हंगामा आराई, धमा चौकड़ी, नफ़रतो अदावत, रश्क़ो हसद, इख़तिलाफ़ और लड़ाई झगड़े में गुज़री, जिसकी वजह से रसूल को भी बाज़ मवाक़े पर सख़्त अज़ीयतों और दुशवारियों में मुब्तिला होना पड़ा।

रसूलल्लाह (स) की शहादत के बाद आपकी मनचली तबीअत क़दरे सन्जीदगी की तरफ़ माएल हुई। अबूबकर का ज़माना आपकी ज़िन्दगी और शख़्सियत साज़ी का बेहतरीन ज़माना था। बाप की हुकूमत का सुकूनों आराम मयस्सर था, खुशहाली और कामरानी आपके क़दमों में थी, सियाहे, सफ़ेद का इख़्तियार हासिल था, गोया आप मलकए वक़्त थीं और कुल सलतनत आप ही की थी।

इब्ने सअद का कहना है कि "अहदे अबूबकर को उमर में हज़रत आयशा फ़तवे दिया करती थीं, और अकाबिरी ने साहाबा उनसे पैग़म्बरे के एहकामात मालूम किया करती थीं।[1]

अबूबकर के बाद उमर के दौरे में हुकूमत में भी आपको वहीं

1. तबक़ात :– ज. 8 स. 375

अज़मतों मान्ज़ेलत मयस्सर रही। ख़लीफ़ए वक़्त ने तमाम अज़्वाजे रसूल का सालाना वज़ीफ़ा दस हज़ार मुक़र्रर किया था लेकिन आपको खुसूसी मुराआत के तहत बारह हज़ार मिलते थे।[1]

(जुक़वान) गुलामे आयशा का बयान है कि एक मरतबा ईराक़ से उमर के पास एक सन्दूक भेजा गया जो बेशक़ीमत जवाहरात से भरा हुआ था, उमर ने लोगों से दर्याफ़्त किया कि अगर तुम लोग कहो तो मैं ये सन्दूक आयशा को दे दूं क्यों कि वो रसूल की चहीती हैं, सबने मन्जूर कर लिया और उमर ने वो सन्दूक आयशा को नज़्र कर दिया।[2]

हज़रत आयशा की क़द्रो मन्ज़िलत का अन्दाज़ा इस वाक़ेए से होता है कि 23 हिजरी में उमर आख़िरी हज के लिए तैय्यार हुए तो ज़ैनब और सौदह के अलावा दीगर उम्महातुल मोमिनीन के साथ आयशा ने भी हज की ख़्वाहिश ज़ाहिर की। जिसे उमर ने बसरो चश्म मन्ज़ूर ही नहीं किया बल्कि ये हुक्म भी दिया कि सामा ने सफ़र के साथ उम्मुल मोमिनीन के लिए ख़ुसूसी इन्तिज़ामात भी किये जायें। और जुम्ला आसाइशें भी मुहय्यां की जायें।

चुनांचे अमारियां आरास्ता की गयीं और उन पर सब्ज़ रंग के खुशनुमा पर्दे डाले गये। उस्मान बिन उफ़्फ़ान और अब्दुर रहमान बिन औफ ऊँटों की सारबानी पर मुक़र्रर हुए और उम्मुल मोमिनीन इस शानो शैकत और जाहो जलाल के साथ दीगर अज़्वाज़ के हमराह हज के लिए खाना हुई कि उनके नाक़े के आगे उस्मान थे जो चींख–चींख कर ये अवाज़ देते जाते थे कि..... होशियार..... खबरदार...... इधर का काई रूख न करे और न नज़र उठाकर देखने की कोशिश करे। अज़्वाजे पैग़म्बर के साथ उम्मुल मोमिनीन महवे सफर हैं। अब्दुर रहमान बिन औफ़ क़ाफिले के पीछे चल रहे थे और उनकी भी वहीं हालत थी जो उस्मान की थी।[3]

उम्मुल मोमिनीन ज़ैनब और सौदह ने इस सफर में आयशा का

---

1. मुसतदरक हाकिम जिक्रे आयशा फिस सहाबियात व किताबुल खिराज :–स. 25
2. तबक़ात इब्ने सअद :– ज. 8 स. 208-209
3. तबक़ात :– ज. 8 स. 208-209

साथ इसलिए नहीं दिया कि उनका कहना था कि अब ऊँट की पीठ हमें हरकत नहीं दे सकती। रसूले ख़ुदा के साथ हमने हज भी कर लिया और उमरह भी, अब हमारे लिए ख़ुदा का हुक्म यही है कि हम घर में बैठे।

ग़रज कि हज़रत आयशा खुसूसी तवज्जो और इनायत का अज़ीम मरकज़ थीं। ख़लीफ़ए सानी के दौर में उन्हें जो मरतबा हासिल हुआ वो किसी को भी नसीब न हो सका। आयशा भी उमर का पूरी तरह एहतिराम करती थीं। और उन दोनों के क़ौलो अमल में बड़ी हद तक यकसानियत भी थी। बुखारी, बैअते उस्मान के वाक़ेआत में और इब्ने सअद ने तबक़ात में एकतवील रवायत नक़ल की है जिससे दोनों के ख़याल़ात की हम आहंगी का पता चलता है, इस रवायत को नज़र अन्दाज़ कर देना ही मेरे ख़्याल से मुनासिब है।

अल्लामा इब्ने अबदरबा ने अक़्दे फ़रीद में मिम्बराने शूरा की ज़बानी उमर की गुफ़्तुगू नक़ल की है जिसका ख़ुलासा ये है कि उमर की वसीयत ये थी कि मेरे बाद तुम लोग आयशा के हुजरे में ही ख़लीफ़ा का इन्तिख़ाब करना चुनांचे उमर की तदफ़ीन हो चुकी तो मिक़दाद बिन अस्वद ने आयशा की मर्ज़ी से अरकाने शूरा को उनके घर में इकट्ठा किया, अमरे आस और मुग़ीरह बिन शअबा भी दरवाज़े पर आकर बैठ गये लेकिन सअद ने उन्हें पत्थर मारकर भगा दिया और कहा कि कल तुम दोनों भी अपने आपको मिम्बराने शूरा में शुमार करने लगोगे और लोगों से कहोगे कि हम भी शूरा में मौजूद थे।[1]

उमर ने अपनी ज़िन्दगी के आख़िरी लम्हों तक आयशा का पासो लिहाज़ किया, और इम्तियाज़ी और तरजीही सुलूक़ को बदस्तूर रवा रखा और उन्हें इस कुव्वतो ताक़त का मालिक बना दिया कि बाद में वो हर हुकूमत से टकरायी और उसके लिए दर्दे सर बन गयी।

उमर अगर एक तरफ़ हज़रत आयशा की ज़ात से वालिहाना अक़ीदतों मुहब्बत रखते थे तो दूसरी तरफ़ अपने मौकिफ़ में इन्तिहाई

---

1. अब्दुल फरीद :– ज. 4 स. 275

सख़्त भी थे। जिसका अन्दाज़ा उल्लामा मुहिबउद्दीन तबरी की इस रवायत से होता है। वो तहरीर फ़रमाते हैं :—

जब अबूबकर का इन्तिक़ाल हो गया तो आयशा ने ग़म में सफ़े मातम बिछाई और गिरयओ मातम का एहतिमाम किया। उमर को जब ये ख़बर मालूम हुई तो वो कुछ हमराहियों के साथ आ धमके और दरवाज़े पर खड़े होकर अपनी गरजदार आवाज़ में गिरयओ मातम से मना करने लगे। मगर जब आयशा और दूसरी औरते रोने से बाज़ न आयीं तो उमर ने हिशाम बिन ख़ालिद को हुक्म दिया कि घर मे घुस जाओ और रोने वालियों को ज़बरदस्ती घसीट लाओ। हिशाम घर के अन्दर घुस गया और आयशा की बहन उम्मेफ़रवह को खींचता हुआ बाहर ले आया। उमर ने रोने के जुर्म में उम्मेफ़रवह को इतने दुर्रे मारे कि वो लहू लुहान हो गयीं।

बज़ाहिर उम्मे फ़रवह और आयशा का जुर्म एक था मगर उमर ने उम्मे फ़रवाह को जदोकोब करने के बाद आयशा को छोड़ दिया, शायद इसलिए कि उनकी हुकूमत आयशा की मरहूने मिन्नत थी।

उमर के इस इक़दाम पर आयशा जितनी भी फख़्र करें कम है क्योंकि उमर ने उनका वो पासो तिहाज़ किया जो रसूल के बाद उनकी कुदसी सिफ़ात बेटी फ़ात्मा जहांरा (स) का भी नहीं किया।

तबरी की इस रवायत से ये भी पता चल गया कि "ग़मे हुसैन(अ)" में गिरयओ मातम के ख़िलाफ़ बिदअत के फ़तवे इसी "उमरी सीरत" पर अमल का शाख़साना है।

उस्मान का दौरे हुकूमत और आयशा

ख़िलाफ़ते उस्मानिया के इब्तिदाई छः बरसों में हज़रत आयशा उस्मान की सरगर्म हिमायती रहीं और क़दम क़दम पर उनकी अताअत करती रहीं। उसके बाद दोनों के दर्मियान इख़तिलाफ़ पैदा हो गया।

इस इख़्तिलाफ़ की वजह ये बताई जाती है कि, उमर ने तमाम अज़्वाजे पैग़म्बरे (स) का सालाना वज़ीफा 10 हज़ार मुक़र्रर किया था और आयशा को बारह हज़ार देते थे। उस्मान ने दो दो हज़ार कम करे उनका वज़ीफ़ा भी दीगर अज़्वाज़ के मसावी कर दिया।

रफ़्ता रफ़्ता इसी मुख़ालिफ़त ने ख़तरनाक सूरत इख़्तियार कर ली और आयशा खुलकर उस्मान से मुक़ाबले के लिए मैदान में उतर आयीं। उन्होंने मुसलमानों को वरग़लाया, भड़काया और आमादए पैकार किया और फ़तवा दिया कि उस्मान काफ़िर हो गया है इस 'नअसल' को क़त्ल कर दो।

ज़ब मुसलमान उस्मान के ख़िलाफ़ पूरी तरह मुशतइल और बरगश्ता हो गये, और हालात इन्तिहाई नाज़ुक मोड़ पर आ गये तो आप मदीना छोड़कर हज के बहाने से मक्के रवाना हो गयीं। आपके जाते ही आपके हिमाइती तल्हा जुबैर वग़ैरह की मदद से आम मुसलमानों को आमादा करके हुकूमते उस्मान का तख़्ता पलट दिया, और उस्मान बड़ी बेदर्दी से मौत के घाट उतर दिये गये।

बलाज़री का कहना है कि :–

हज़रत आयशा की वो पहली ज़ात है जिसने उस्मान की मुख़ालिफ़त में आवाज़ बलन्द की, उनके मुख़ालिफ़ीन के लिए जाए पनाह बनीं और उनसे आमादए पैकार लोगों की क़ियादत की। उस वक़्त पूरी मुम्लिकते इस्लामिया में हज़रत अबूबकर के ख़ानदान से बढ़कर उस्मान का दुशमन न था।[1]

हज़रत उस्मान से आयशा के इख़्तिलाफ़ का सबब उनके वज़ीफ़े में तख़फीफ़ के अलावा वो ज़ियादतियां मज़ालिम और तशद्दुद भी थे जिन्हें उस्मान और उनके आमिलों नें आम मुसलमानों पर रवा रखे थे और जिनकी वज्ह से मुसलमानों और असहाबे पैग़म्बर (स) में ग़मो गुस्सा और बरहमी की लहर पैदा हो चुकी थी। तल्हा और ज़ुबैर की वो मिली भगत भी थी जिसके ज़रिये वो लोग हुकूमतो अमारत के ख़्वाहां

---

1. अलनिसाबुल अशरफ :– ज. 5 स. 68

थे। और जिसकी हक़ीक़ी तस्वीर जंगे जमल के मौक़े पर उभर कर सामने आयीं।

इस दलील के तमाम हालात और वाक़ेआत को हम अपनी किताब "अलख़ुलफ़ा हिस्सा दोम" में मुफ़स्सल तौर पर तहरीर कर चुके हैं मुनासिब होगा कि कारेईने किराम उस किताब का मुतालिआ फ़रमायें।

क़त्ले उस्मान पर आयशा के ख़िलाफ़ सहाबा की गवाहियां

(माख़ज़ अज़ अलख़ुलफ़ा)
(हिस्सा दोम)

मुग़ीरह एक दिन आयशा के पास आया तो उन्होंने उससे फ़रमाया कि ऐ अबूअब्दुल्लाह! काश तुम जंगे जमल में देखते कि तीर किस तरह मेरे हौदज को तोड़ कर निकल रहे थे। मुग़ीरह ने कहा काश उन तीरों में से कोई तीर आपका ख़ात्मा कर देता। आयश ने फ़रमाया, आख़िर क्यों? मुग़ीरह ने कहा तुम्हारे क़त्ल से उस सइए क़त्ल का कफ़्फ़ारह हो जाता जो उस्मान के लिये आपने की है।[1]

सअद इब्ने अबी विक़ास

"सअद से एक शख़्स ने पूछा कि उस्मान का क़ातिल कौन है? उन्होंने कहा, उस तलवार से क़त्ल हुए जो आयशा ने खींची थी।"[2]

---

1. अक़दुल फ़रीद :– ज. 2 स. 190
2. अल इमामत वल सियासत :– स. 49, अक़दुल फरीद :– ज. 3 स. 188

इब्ने कलाब

हिसारे उस्मान के वक़्त आयशा मक्के चली गयी थी और जब उस्मान क़त्ल हो गये तो मक्के से फ़िर मदीने की तरफ़ पलटीं। सर्फ के मक़ाम पर इब्ने कलाब से मुलाक़ात हुई, पूछा, क्या ख़बर है? कहा उस्मान क़त्ल कर दिये गये। ये सुनकर आयशा फिर मक्के की तरफ़ पलटीं और फ़रमाया उस्मान बे गुनाह क़त्ल हुए।

इब्ने कलाब ने कहा, आप ही ने उस्मान का क़त्ल चाहा आप ही वो हैं कि जिसने ये फ़तवा दिया कि "नअसल" को क़त्ल कर डालों क्योंकि ये काफ़िर हो गया है।[1]

अम्मार बिन यासिर

उस्मान के क़त्ल होने पर आयशा ने शोर मचाया कि उस्मान बे गुनाह क़त्ल हुए। उस पर अम्मार ने कहा, कल तुम उनके क़त्ल के लिए लोगों को भड़काती थीं और आज शोर मचाती हो।[2]

हज़रत आयशा का इक़रार

जब अमीरूल मोमिनीन हज़रत अली (अ) के बैअत की ख़बर आयशा को मिली तो वो उस वक़्त मदीने में नहीं थी। उनसे कहा गया कि उस्मान क़त्ल हो गये और अली के हाथ पर बैअत हो गयी। ये सुनकर आयशा ने कहा, मुझे परवाह नहीं, अगर ज़मीनों आसमान मुझ पर फ़ट पड़े। ख़ुदा की क़सम उस्मान बेगुनाह क़त्ल हुए और अब मैं उनके ख़ून का इन्तिक़ाम लूंगी। उस पर उबैद ने कहा, ऐ उम्मुल मोमिनीन! सबसे पहले जिसने उस्मान पर तअन की और लोगों को उनके क़त्ल पर उभारा वो आप थीं। और आप ही ने कहा कि इस

---

1. अक़्दुल फरीद :– ज. 3 स. 187
2. तारीखे कामिल :– ज. 3 स. 80

"नअसल" को क़त्ल कर डालों क्यों कि ये काफिर हो गया है। आयशा ने कहा, हां ख़ुदा की क़सम मैंने ये ज़रूर कहा और किया, मगर दूसरा क़ौल पहले कौल से बेहतर है। उबैद ने कहा, हमारे नज़दीक क़ातिल वो है जिसने क़त्ल का हुक्म दिया।[1]

अमरए आस

इब्ने क़ैबा ने अपनी किताब "अलइमामत वल सियासत" में तहरीर किया है कि जिस वक़्त उस्मान क़त्ल हुए अमरए आस फ़िलिस्तीन में था। उसे ख़बर मालूम हुई तो उसने सअद इबने अबी विक़ास को खत लिखकर पूछा कि उस्मान को किसने क़त्ल किया। जवाब में सअद ने लिखा कि उस तलवार से उस्मान क़त्ल हुए जो आयशा ने तैय्यार की थी और तल्हा ने उस पर सैक़ल की थी।[2]

ये वो तारीख़ी शबाहिद है जो इस सरबस्ता राज़ पर पड़े हुए परदे को चाक कर देते हैं कि उस्मान का अस्ल क़ातिल कौन है? अब सवाल ये है कि अगर आयशा ने उस्मान के क़त्ल का हुक्म दिया और इस हुकम के अमल दर आमद पर मुसलमानों को हमवार किया तो फ़िर उसमान के क़त्ल हो जाने के बाद उन्होंने ख़ूने उसमान के क़िसास का नारह क्यों बलन्द किया जिसके नतीजे में जंगे जमल के नाम से एक हौलनाक हादसा रूनुमा हुआ। इसका जवाब ये है कि सियासी नुक़तए नज़र से आयशा के लिए इससे बेहतर कोई सूरत नहीं थी कि वो मुसलमानों को फ़रेब में मुबितला करके अपने दामन से क़त्ले उसमाने के धब्बों को साफ़ कर लें।

दूसरे ये कि वो दुशमनी और अदावत जो हज़रत अली (अ) की तरफ़ से आपके दिल में थी, उसके इन्तिक़ाम के लिए भी ज़रूरी था कि वो इस मौक़े से फ़ायदा उठाते हुए मैदाने कारज़ार गर्म कर दें। अगर जंग में ये कामयाब हो जातीं तो उनकी सारी दिली मुरादें पूरी हो जातीं

---

1. कामिल :– ज. 3 स. 80, तबरी :– ज. 3 स. 173
2. अल इमामत वल सियासत :– स. 54

यानी हज़रत अली (अ) भी क़त्ल हो जाते और हुकूमत की बागडोर भी उनके हाथों में आ जाती।

क्योंकि आयशा, तल्हा, ज़ुबैर और मुआविया, इन चारों में हर एक ये चाहता था कि वो इक़तिदार का मालिक बने। हज़रत आयशा की सियासत ये भी कि अगर मैं किसी वज्ह से मैं इक़तिदार की मालिक न हो सकूं तो मेरी बहन का लड़का अब्दुल्लाह इब्ने ज़ुबैर इस मनअब पर फ़ाइज़ हो। यही वजह थी कि उस्मान के क़त्ल में उन्होंने अपना पूरा सियासी ज़ोर सर्फ़ कर दिया।

अमीरूल मोमिनीन हज़रत अली के ख़िलाफ़ आयशा का मौक़िफ़

एक मुहक़्क़िक़ की जुस्तुजू हज़रत अली इबने अबी तालिब अलैहिस सलाम के ख़िलाफ आयशा के मौक़िफ़ में अहले बैत से दुश्मनी और अदावत के अलावा और कुछ नहीं पाती ये भी एक मोजिज़ह है कि आले रसूल (स) ख़ुसूसन हज़रत अली से आयशा की दुशमनी और अदावत को तारीख़ ने क़यामत तक के लिए महफ़ूज़ कर लिया है। चुनांचे बुख़ारी का बयान है कि हज़रत अली से आयशा का बुग्ज़ो हसद इस नुक़तए उरूज पर था कि वो अमीरूल मोमिनीन का नाम लेना भी गवारह नहीं करती थी।[1]

अल्लामा एहसान उल्लाह गोरख़पूरी ने अपनी "तारीखे इस्लाम" में तहरी किया है कि अली और फ़ात्मा (स) से आयशा का रश्को हसद मुख़तलिफ वाक़ेआत से गुज़रकर नफ़रत की हदों तक पहुंच गया था।[2]

इमाम अहमद बिन हम्बल का कहना है कि एक रोज़ अबूबकर

---

1. सहीह बुख़ारी :– ज. 1 स. 162, ज. 3 स. 153, ज. 5 स. 140
2. तारीखे इस्लाम :– स. 258

रसूलल्लाह की ख़िदमत में हाज़िर हुए और बारयाबी की इजाज़त चाही। लेकिन घर में दाख़िल होने से क़ब्ल उन्होंने आयशा की आवाज़ सुनी जो चींख़–चींख़ कर बलन्द आवाज़ में पैग़म्बर (स) से कह रहीं थी कि ख़ुदा की क़सम आप अली को मुझसे और मेरे बाप से ज़्यादा चाहते हैं।[1]

इब्ने आबिल हदीदे मोअतज़ेली का बयान है कि एक दिन रसूलल्लाह (स) हज़रत अली (अ) के हमराह गुफ़्तुगू करते हुए जा रहे थे, आयशा उनके पीछे–पीछे चल रही थीं अचानक मुअज़्ज़मा की रग भड़क गयी, और वो रसूलल्लाह और अली के दर्मियान हाइल होते हुए कहने लगीं कि बस बहुत हो चुकी अब ख़त्म करो इस गुफ़्तुगू को आयश की इस नाशाइस्ता हरकत पर रसूले अकरम बेहद ग़ज़बनाक हुए।[2]

मसरूक़ से एक रवायत है कि मैं उम्मुल मोमिनीन आयशा की ख़िदमत में हाज़िर था और उनसे मसरूफ़े गुफ़्तुगू था कि इतने में हज़रत आयशा ने अब्दुर रहमान के नाम से अपने एक हब्शी ग़ुलाम को आवाज़ दी। वो आकर खड़ा हो गया। आयशा ने मुझसे फ़रमाया कि ऐ मसरूफ़ तुम्हें मालूम है कि मैंने इस ग़ुलाम का नाम अब्दुर रहमान क्यों रखा? मैं ग़ौर ही कर रहा था कि फिर फ़रमाया कि चूंकि अब्दुर रहमान इबने मुलाजिम अली का क़ातिल था इसलिए ये नाम मुझे बहुत अज़ीज़ है और मैं इस नाम से इन्तिहाई मोहब्बत करती हूं।

इस वाकेए को अल्लाम शेख़े मुफ़ीद (र) ने अपनी किताब "अलजमल" में तहरीर फ़रमाया है और उससे शेख़े अबूजाफ़रे तूसी (र) ने अपनी किताब "अशशाफ़ी ज. 4 स. 158 पर नक़्ल किया है।

गुज़श्ता सफहात में हम "अहलेबैत से आयशा की अदावत" के उनवान से तहरी कर चुके हैं कि हज़रत अली की शहादत पर आयशा ने शुक्र का सजदह किया मसररतों शादमानी का इज़हार फ़रमाया और तरबिया अशआर पढ़े।

आप हसनैन अलैहेमुस्सलाम से पर्दा करती थीं और जब इमाम

1. मसनद अहमद बिन हम्बल :– ज. 4 स. 275

2. शरह नहजुल बलाग़ा :– ज. 9 स. 195

हसन (अ) की शहादत वाके़ हुई तो उनके जनाज़े को रसूल (स) के रौज़े में दफ्न नहीं होने दियां हद ये है कि ख़ुद खच्चर पर सवार होकर निकल पड़ी और इमाम के जनाज़े पर इतने तीर बरसवाये कि सत्तर तीर जसदे अतहर में पेवस्त हो गये।

ये वो तारीख़ी हक़ाएक़ हैं जिनसे इन्कार की कोई गुन्जाइश नहीं है।

क़त्ले उस्मान के बाद जब ख़िलाफ़त हज़रत अली की तरफ़ मुनतक़िल हुई तो आप मक्के से मदीने की तरफ़ वापस आ रही थीं, रास्ते में मालूम हुआ कि अली की बैअत हो गयी तो फ़रमाने लगीं किं मुझे आसामान का फ़ट पड़ना गवारह है मगर अली का ख़लीफ़ा होना गवारा नहीं। फ़िर आप क़िसासे ख़ूने उस्मान का सहारा लेकर उठ खड़ी हुईं, लशकर जमा किया जिसके नतीजे में एक ऐसी ख़ूंरेजे हौलनाक और तबाहकुन जंग हुई जो तारीख़ में जंगे जमल के नाम से याद की जाती है।

जंगे जमल की तैयारियां और उसका पस मंज़र

दुनिया की ख़ूनी जंगों में जंगे जमल "वो हौलनाक और हलाकत खे़ज़ जंग है जो "खिलाफते अली" के इब्तिदाई दौर में "क़िसासे ख़ूने उस्मान" के नाम से लड़ी गयी।

इस तबाहकुन और ख़ूंरेज़े जंग के अफ़सोसनाक नताइज और "इफ़तिराक़ बैनल मुस्लिमीन" की तमामतर मुजरिमाना ज़िम्मेदारियां हज़रत आयशा, तल्हा और ज़ुबैर पर आइद होती है। जो "इन्तिक़ामे ख़ून उसमान" की आड़ में "अमीरूल मोमिनीन" बनने का जज़्बा लेकर तलवारों के साथ उठ खड़े हुए थे। हालांकि यही लोग उस्मान की ज़िन्दगी में उनके सख़्त मुख़ालिफ़ रहे, यहां तक कि इन्हीं की कोशिश से "तीसरे ख़लीफ़ा" बड़ी बेदर्दी के साथ मौत के घाट उतार दिये गए

उस्मान के खिलाफ़ लोगों को भड़काने उकसाने और वरगलाने में हज़रत आयशा का किरदार बहुत ही अहम है। वो इस अम्र से बख़ूबी वाकिफ़ थीं कि रसूले अकरम (स) से वालिहाना अक़ीदत की बिना पर मुसलमान हुज़ूरे (स) के जिस्में अतहर सेमस होने वाले वाकियात और आसार की ज़ियारत को तरस रहे हैं लिहाज़ा इन्हीं वाकियात का तवस्सुल उस्मानी हुकूमत का तख़्ता पलट देने के लिए काफ़ी है। जब ये चीज़ें मुसलमानों के सामने रखी जायेंगी तो वो जज़्बात से मग़लूब होकर बेक़ाबू हो जायेंगे और उनके दिलों में एक हैजानी कैफ़ियत पैदा हो जायेगी।

हज़रत आयशा का ये हर्बा, यक़ीनन मोवस्सर तरीन हर्बा था। चुनांचे उन्होंने सरकारे दो आलम की नअलैने मुबारक और पैरहने अक़दस का सहारा लिया और ये दोनों चीज़ें मुसलमानों के सामने रखकर माइल–ब–फ़रयाद हुई कि अभी ये चीज़ें कोहना भी नहीं होने पायीं कि उसमान ने आं हज़रत (स) की शरीअत को यकसर बदल कर रख दिया। काश! इस नअसल को काई क़त्ल कर दे क्यों कि ये कफ़िर हो गया है।

हज़रत आयशा की ये सियासी तदबीर किसी तरह "सऊदी पेट्रोल" से कम न थी। इसने उस्मान के ख़िलाफ़ सुलगती हुई चिंगारी को शोला बना दिया। आवाम में ग़मों गुस्से की आग भड़क उठी, और मुख़ालिफ़ीन के बिफ़रे हुए सैलाब ने क़सरे ख़िलाफ़त को चारों तरफ़ से घेर लिया। जब आपने देखा कि मुख़ालिफ़ीनों मोहासेरीन की गिरफ़्त मज़बूत हो चुकी है तो ज़ैद इब्ने साबित, मरवान बिन हकम और अब्दुर रहमान बिन उताब की मिन्नत समाजत के बावजूद उसमान को मोहासरे में छोड़कर हज के बहाने से मक्के रवाना हो गयीं सफ़र के दौरान भी उस्मान के ख़िलाफ़ आप का तबलीग़ी अमल जारी रहा। चुनांचे मदीने से कुछ दूर निकल कर "सलसल" के मक़ाम पर जब आपकी मुलाक़ात इब्ने अब्बास से हुई जो अमीरे हज की हैसियत से मक्के जा रहे थे तो आपने उनसे भी फ़रमाया :–

ए इब्ने अब्बास! ख़ुदा ने तुम्हें कुव्वते गोयाई अता की है तो लोगों

को उसमान की मदद से रोको ओर उनके बारे में उन्हें शको शुबहे में मुब्तिला करो रास्ता हमवार हो चुका हे, मुखालिफ़ शहरों से लोग फ़ैसलाकुन अम्र के लिए मदीने में जमा हो चुके हैं तल्हा ने बैतुलमाल की कुंजियों पर क़ब्जा कर लिया है अगर वो ख़लीफ़ा हो गये तो अपने इब्ने अम अबूबकर की सीरत पर अमल करेंगें।[1]

हज़रत आयशा की इस गुफ़्तुगू से ये अम्र पोशीदा नहीं रह जाता कि वो उसमान के बाद तल्हा की ख़िलाफत का ख्वाब देख रहीं थी। और उनके ज़रिये इक़तिदार का रूख भी अपने ख़ानदान की तरफ़ मोड़ना चाहती थीं।

उस्मानी अहदे हुकूमत के इब्तिदाई छः सालों में हज़रत आयशा उस्मान की ख़ैरख़्वाह, हमनवा, तरफ़दार और मोईनों मददगार रहीं मगर उसके बाद मुख़ालिफ़ हो गयीं मुख़ाफ़ित की वजह ये बयान की जाती है कि हज़रत उमर ने अपने दौरे हुकूमत में अज़्वाजे रसूल का वज़ीफ़ा दस दस हजार मुक़र्रर किया था, लेकिन आयशा को तरजीही बुनियाद पर बारह हज़ार मिलता था।

उस्मान ने दो हज़ार कम करे उनका वज़ीफ़ा भी दीगर अज़्वाज के बराबर कर दिया था। जैसा कि याकूबी का कहना है कि :–

हज़रत उस्मान और आयशा के दर्मियान मुख़लिफ़त की वज्ह ये थी कि उसमान ने उनका वज़ीफ़ा जो हज़रत उमर उन्हें दिया करते थे कम कर दिया।[2]

हज़रत उस्मान और उनके उम्माल की आमिराना रविश की वज्ह से सहाबा का एक गिरोह पहले ही से उस्मान का मुख़लिफ़ था। मुस्तजाद ये कि आयशा की इश्तेआल अंगेज़ी ने उसे और हवा दी यहां तक कि उस मुख़ालिफ़त ने जोर पकड़ लिया और लोग उसमान के ख़िलाफ़ सरगर्मे अमल हो गये। खुसूसन तल्हा इब्ने उबैदुल्लाह और उनका क़बीला बनी तैम इस मुख़लिफ़त में पेश पेश रहा। जिसकी

---

1. तबरी :– ज. 3 स. 434
2. तारीखे याकूबी :– ज. 2 स. 132

क़ाएद हज़रत आयशा थीं। उन लोगों ने क़त्ले उसमान के असबाब फ़राहम करने में कोई कसर उठा नहीं रखी। बलाज़री रक़म तराज़ है कि :–

तल्हा से बढ़कर हज़रत उस्मान पर सख़्तगीर कोई नहीं था।[1]

तल्हा ने अपनी हिकमते अमली से मुहासेरीन में जोशो ख़रोश पैदा करके उस्मान पर मुहासरे को मजीद तंग किया। उन पर पानी बन्द किया। रात के अन्धेरे में क़सरे ख़िलाफ़त पर तीरों की बारिश की और अब्दुर रहमान बिन अदबस को इस अम्र पर मजबूर किया कि वो उनके घर में आने जाने वालों पर पाबन्दी आएद कर दें। चुनांचे उस्मान को इन बातों का इल्म हुआ तो उन्होनें कहा :–

परवर दिगार मुझे तल्हा के शर से महफ़ूज़ रखे इसी ने लोगों का मेरे ख़िलाफ़ भड़काया है और मेरे गिर्द घेरा डलवा दिया।[2]

उस्मान के क़त्ल हो जाने के बाद तल्हा के रवय्ये में फ़र्क़ न आया। उनकी लाश पर पत्थर बरसाये और उन्हें जन्नतुल बक़ीअ मे दफ़्न न होने दिया ओर यही हालत जुबैर की भी थी कि वो मुहासेरीन के दर्मियान आयशा की इस बात को दोहराते रहते थे कि :–

उस्मान को क़त्ल कर दो उसने तो तुम्हारे दीन ही को बदल दिया।[3]

यहीं वो लोग थे जिन्होंने क़त्ले उस्मान की बुनियाद रखी, और उनके ख़िलाफ़ ऐसी फ़जा पैदा कर दी कि जिसके नतीजे में वो क़त्ल कर दिये गये। अगर उस्मान का क़त्ल वाकई जुर्म था तो ये लोग उस जुर्म से बरी हरग़िज़ नहीं क्योंकि क़ातिलों और मुजरिमों की एआनत और पुश्त पनाही भी जुर्म है।

हज़रत आयशा को अपनी कामियाबी का यक़ीन था उनका बोया हुआ बीज फ़ल ज़रूर देगा इसलिए वो क़त्ले उस्मान से बीस दिन पहले

1. अल निसाबुल अशरफ :– ज. 1 स. 113
2. तबरी :– ज. 3 स. 411
3. इब्ने अबिल हदीद मोअतज़ेली :– ज. 2 स. 404

ही इस ख़्याल के तहत मदीने से खिसक लीं कि दुनिया उनको तमाम हंगाम आराइयों से बेताल्लुक़ तसव्वुर करे, और जब उसमान का काम तमाम हो जाय तो वो तल्हा या जुबैर को बरसरे इक़तिदार लाकर उस माली नुक़सान की तलाफ़ी कर सके जो मौजूदा हुकूमत से उन्हें पहुंचा है। मगर वो अपने इस मक़सद में क़ामियाब न हो सकीं और उनकी अहम मौजूदगी में ही मुसलमानों ने हज़रत अली की ख़िलाफ़त का फ़ैसला कर लिया।

हज़रते उस्मान ने जो शूरा क़ायम किया था उसके रूक्न तल्हा और जुबैर भी थे इसलिए उनका जेहेन भी ख़िलाफ़त के तसव्वुर से ख़ाली नहीं था, चुनांचे क़त्ले उसमान के सिलसिले की तमामतर कोशिशें इसी मक़सद के हुसूल का नतीजा थीं मगर उन लोगों ने जब ये देखा कि लोग हज़रत अली की ख़िलाफ़त पर बज़िद हैं और उनके अलावा किसी की बैअत पर रज़ामन्द नहीं हैं तो उन लोगों ने भी राय आम्मा का रूख़ देखकर पेश क़दमी की और हज़रत अली की बैअत कर ली। और दूसरे ही दिन ये मुतालबा किया कि उनहें कूफा और बसरा की अमारत दे दी जाये। लेकिन हज़रत अली ने ये गवारा न किया कि उन इलाकों को जो हुकूमत के मुहासिल का सरचश्मा हैं उनकी बढ़ती हुई हिर्सो हवस की आमाजगाह बनने दें। चुनांचे आपने ये कहकर इन्कार कर दिया कि मैं, तुम्हारे मामलात में जो बेहतर होगा वो करूंगा, फ़िलहाल तुम दोनों को मेरे पास ही मरकज़ में रहना ज़्यादा बेहतर है।

तल्हा और जुबैर समझ रहे थे कि कूफ़ा और बसरामें उन उनके असरात हैं और उन्हीं की आवाज़ पर वहां के लोग उस्मानी हुकूमत में इन्क़िलाब बरपा करने की गरज़ से जमा हुए थे इसलिए अमीरूल मोमिनीन उन असरो रूसूख़ से मुतास्सिर होकर उन्हें कूफ़े और बसरे की हुकूमत का परवाना लिख देंगे। मगर मायूसी के अलावा उन्हें और कुछ हासिल न हुआ। और उन्होंने समझ लिया कि अली (अ) के होते हुए उनहें न तो मनमानी करने का मौक़ा फ़राहम होगा और न ही वो खुसूसी मराआत हासिल होंगी जो साबक़ा हुकूमतों में हासिल थीं। लिहाज़ा उन्होंने अपने मक़ासिद की तकमील के लिए ग़ैर आईनी खुतूत पर सोचना शुरू किया और अपनी तवज्जो का रूख़ आयशा की नक़्लों

हर्कत की तरफ़ मोड़ दिया ताकि उनके अज़ाइम की रौशनी में मुसतक़बिल का लाइदए अमल तरतीब दें।

हज़रत आयशा ये चाहती थीं कि उस्मान के क़त्ल के बाद, तल्हा को बरसरे इक़तिदार लायें और इस तरह ख़िलाफ़त को मुस्तक़िलन अपने क़बीले बनी तैम में मुनतक़िल कर दें इसलिए कि मक्के में क़याम के दौरान बलवाईयों की यूरिश का नतीजा मालूम करने के लिए बेचैन रहती थीं और हर आने जाने वाले से मदीने के हालात और उस्मान के अंजाम के बारे में मालूम करती रहती थीं। इसी अस्ना में मदीनें से अख़ज़र नामी एक शख़्स मक्के आया। हज़रत आयशा ने उसे बुलवाकर पूछा कि मदीने की शोरिश अंगेज़ी का क्या नतीजा हुआ? उसने कहा कि हज़रत उस्मान ने मिस्र के बलवाइयों को मौत के घाट उतार दिया है। और शोरिशो हंगामें पर क़ाबू पा लिया है। इस ख़बर ने उनके सारे ख़यालात का शीराज़ा दरहम बरहम कर दिया, उन्होंने तास्सुफ़ आमेज़ लहजे में कहा :—

"इन्ना लिल्लाहे व इन्ना एलैहे राजेऊन! क्या उन लोगों को उस्मान ने क़त्ल कर दिया जो अपना हक़ मांगने और ज़ुल्म के ख़िलाफ़ आवाज़ बलन्द करने की ग़रज़ से गये थे? ख़ुदा की क़सम हम इस पर राजी नहीं हैं।[1]

अभी आयशा अफ़सुर्दगी की हालत में थी कि एक दूसरे शख़्स ने आकर ये इत्तिलाअ दी कि अख़ज़र की बातें ग़लत हैं मिस्रियों में से कोई नहीं क़त्ल हुआ, वो खुले बन्दो मदीने में दन दनाते फ़िर रहे हैं, अलबत्ता हज़रत उस्मान उन लोगों के हाथों मारे गये हैं। ये सुनकर उम्मुल मोमिनीन पर मसरत तो शादमानी की कैफ़ियत तारी हो गयी और उन्होंने मुस्कुराते हुए फ़रमाया :—

ख़ुदा उसे अपनी रहमत से दूर रखे, वो अपने करतूतों को पहुंच गया।[2]

इस ख़बर के बाद हज़रत आयशा के लिए मदीने जाना ज़रूरी हो

1. तबरी :— ज. 3 स. 468
2. शराह इब्ने अबिल हदीद :— ज. 2 स. 77

गया ताकि तल्हा की ख़िलाफ़त का रास्ता हमवार करें और फ़ज़ा को उनके लिए अपने असरात से साज़गार बनायें।

चुनांचे उन्होंने फ़ौरन सामाने सफ़र बांधा और मदीने की तरफ़ चल पड़ीं। लेकिन अभी मक्के से तक़रीबन 10 किलोमीटर का फ़ासला तय किया होगा कि "सर्फ़" के मक़ाम पर उबैदुल्लाह इब्ने अबी सलमा से मुलाक़ात हुई। आपने उसमान और मदीने के सियासी हालात के बारे में उससे दर्याफ़्त किया। उसने कहा हज़रत उस्मान क़त्ल कर दिये गये हैं पूछा, फ़िर क्या हुआ? कहा! मुसलमानों ने हज़रत अली की बैअत कर ली है। ये सुनते ही जमीन पैरों तले से ख़िसकने लगी, और आसमान धुवां बनकर उड़ता नज़र आने लगा। कानों को यक़ीन न आया तो फ़िर पूछा कि क्या वाक़ई अली की बैअत हो गयी है। भला उनसे ज़्यादा मसनदे ख़िलाफ़त का मुस्तहक़ और सज़ावार कौन था? अब आयशा के लिए अपने जज़्बात पर क़ाबू रखना मुशकिल हो गया। तेवराकर गिरने ही वाली थीं कि बेसाख़्ता उनकी ज़बान से निकला :-

"काश ये आसमान मुझ पर फट पड़े और मैं उसमें समा जांऊ।"[1]

ग़रज़ कि मुअज़्ज़मा उल्टे पैरों मक्के की तरफ़ पलट पड़ी और रंजोग़म के स्टेज पर इन अलफाज़ के साथ एक नया ड्रामा शुरू कर दिया :-

"ख़ुदा की क़सम उस्मान मज़लूम मारे गये, मैं उनके ख़ून का इन्तिक़ाम लेकर रहूंगी।[2]

अब्दुल्लाह इब्ने अबी सलमा इस मुतज़ाद तर्ज़ेअमल को देखकर हैरत और इस्तेजाब के दरिया में ग़र्क़ हो गया उसने आयशा से कहा :-

आप तो बार बार ये कहा करती थी कि इस नअरल को क़त्ल कर डालो ये काफ़िर हो गया है।[3]

अब ये तबदीली कैसी? कहा :-

---

1. तारीखे कामिल :- ज. 3 स. 105
2. तारीखे कामिल :- ज. 3 स. 105
3. कामिल :- ज. 3 स. 105

हां, पहले मैं यही कहा करती थी। लेकिन अब ये मेरी राय पहली राय से ज़्यादा बेहतर है। हज़रत आयशा की इस बात से उबैद मुतमइन न हो सके। चुनांचे उन्होंने कहा कि ऐ उम्मुल मोमिनीन! ख़ुदा की क़सम ये इन्तिहाई बौदा उज़्र है।[1]

उसके बाद उबैद इब्ने अबी सल्मा ने हज़रत आयशा को मुख़ातिब करके अरबी में कुछ शेर पढ़े, जिनका उर्दू तर्जुमा हस्बे ज़ेल है।

(1) आप ही ने पहल की आप ही ने मुख़ालिफत के तूफ़ान उठाये और अब आप अपना रंग बदल रही हैं।

(2) आप ही ने ख़लीफ़ा के क़त्ल का हुक्म दिया और हमसे कहा कि वो काफ़िर हो गया।

(3) हमने माना कि आपके हुक्म की तामील में ये क़त्ल हमारे हाथों से हुआ, मगर हमारे नज़दीक अस्ल क़ातिल आप हैं जिसने क़त्ल का हुक्म दिया।

(4) (सब कुछ हो गया) मगर न आसमान हमारे ऊपर फट पड़ा और न चांद, सूरज को गहन लगा।

(5) और लोगों ने उसकी बैअत कर ली जो कुव्वतों शिकोह से दुशमनों को हकाने वाला है, तलवारों की धारों को क़रीब फ़टकने नहीं देता और गर्दन कशों के बल निकाल देता है।

उम्मुल मोमिनीन चूंकि जल्द अज़ जल्द मक्के पहुंच जाना चाहती थीं, इसलिए उन्होंने उबैद के आशआर पर कोई तवज्जो नहीं दी और आगे बढ़ गयीं। जब मक्के वापस पहुंची तो लोगों ने कहा :–

ऐ उम्मुल मोमिनीन! अभी तो आप रवाना हुई थीं आख़िर पलट क्यों आयीं? बोली :–

उस्मान बे गुनाह मारे गये, मैं उनका ख़ून राएगां नहीं जाने दूंगी और उस वक़्त तक वापस नहीं जाऊंगी जब तक उनके ख़ून का इन्तिक़ाम नहीं ले लूंगी।

लोग उनकी साबेक़ा और मौजूदा रविश के तजाद पर सख़्त

1. अल इमामत वल सियासत :– ज. 1 स. 52

हैरान हो गये मगर कुछ कहने के बजाय ख़ामोश रहे। ग़रज़ कि आयशा ने उस्मान की मज़लूमियत का ढिंडोरा पीट–पीट कर मक्के ही में हज़रत अली के ख़िलाफ़ एक मज़बूत महाज़ क़ायम कर लिया। और जब तल्हा और ज़ुबैर को मालूम हुआ कि उनकी मादरे गिरामी मक्के में उसमान की मज़लूमियत का परचार कर रही हैं और अली को उनके क़त्ल का ज़िम्मेदार ठहरा रहीं हैं तो उन्होंने अब्दुल्लाह इब्ने ज़ुबैर को चन्द खुतूत के साथ चुपके से आयशा के पास मक्के रवाना किया और उन पर ज़ोर दिया कि वो "क़िसासे ख़ून उस्मान" की तहरीक चलायें और जिस तरह मुम्किन हो मज़ीद लोगों को अली की बैअत से बाज़ रखें। इन पैग़ामात ने उनके इरादों को और मज़बूत किया और उन्होंने पूरे जोशो ख़रोश और ज़ोरो शोर से क़िसासे उस्मान के नाम पर लोगों को दावत देना शुरू कर दी। चुनांचे सबसे पहले अब्दुल्लाह इबने आमिर ने जो उस्मान की तरफ़ से मक्के का गवर्नर था, उनकी आवाज़ पर लब्बैक कही। और सईद इबने आस और वलीद इब्ने उक़बा भी उनके हमनवा बन गयें।

तल्हा और ज़ुबैर क़िसासे उस्मान की आड़ में हंगामा खड़ा करके अपनी महरूमी और नाक़ामी का बदला लेना चाहते थें लेकिन मदीने की फ़ज़ा इस हंगामा आराई के लिए साज़गार न थी क्योंकि क़त्ले उस्मान के सिलसिले में अहले मदीना उनका किरदार देखे हुए थे। अलबत्ता मक्के में तहरीक कामियाब हो सकती थी क्योंकि उम्मुल मोमिनीन के अलावा साबिक़ गवरनरे मक्का मरवान बिन हकम और मदीने से निकल खड़े होने वाले दीगर बनी उमय्या वहां जमा हो गये थे। चुनांचे उन दोनों (तल्हा–ज़ुबैर) ने भी मक्का जाने का फ़ैसला किया और अमीरूल मोमिनीन अली इब्ने अबी तालिब (अ) से कहा कि हम लोग उमरह की नीयत से मक्के जाना चाहते हैं। लिहाज़ा हमें इजाज़त मरहमत फ़रमाये। अमीरूल मोमिनीन हज़रत अली उनके तेवरों को फ़ौरन भांप गये कि ये लोग बैअत की जकड़ बन्दियों से निकल कर अपनी जवलानियों और शोरिशों का मरकज़ मक्के को बनाना चाहते हैं चुनांचे आपने फरमाया :-

"खुदा की क़सम उनका इरादह उमरह का नहीं है कि ये लोग गद्दारी और फरेबकारी पर उतर आये हैं।"[1]

अमीरूल मोमिनीन ने उन्हें समझाया कि तुम लोगों का मक्के जाना मुनासिब नहीं हैं मगर ये लोग बराबर इसरार करते रहे और अपनी ज़िद पर अड़े रहे। बिल आख़िर हज़रत ने उन से दो बारह बैअत लेकर उन्हें दोबारह मक्के जाने की इजाज़त दे दी और ये लोग भी मक्के पहुंच कर हज़रत आयशा की जमाअत के सरगर्म मिम्बर बन गये। और बाक़ाएदा क़िसास की मुहिम शुरू कर दी।

इस मुहिम को कामियाब बनाने के लिए सरमाये की ज़रूरत भी थी, उसका हल यूं निकल आया कि बसरा का माजूल हाकिम अब्दुल्लाह इबने आमिर बैतुलमाल की सारी पूंजी लेकर मक्के पहुंच गया और यमन से यअली इब्ने उमय्या छः लाख दिरहम और छः सौ ऊंट अपने साथ लाया। और ये तमाम सरमाया जंगी इख़राजांत के लिए महफूज़ कर दिया गया।

अबुल फ़िदा ने तहरीर किया कि :-

यअली तमाम पूंजी समेट कर निकल खड़ा हुआ और मक्के पहुंच कर आयशा तल्हा और जुबैर के साथ हो गया और वो माल उनकी तहवील में दे दिया।[2]

अहले मक्का से भी सरमाया फ़राहम किया गया और माली एतबार से लोग मुतमइन हो गये। जंग तो बहरहाल एक तय शुदा अम्र थी मगर रज़्मगाह की तजवीज़ में फ़िक्रें लड़ी हुई थीं। चुनांचे हज़रत आयशा की रिहाइशगाह पर एक मीटिंग रखी गयी जिसमें सब लोग शरीक हुए। उम्मुल मोमिनीन की तजवीज़ थी कि मदीने पर हमला करके उसे तराजो मिसमार किया जाये मगर कुछ लोगों ने इसकी मुख़ालिफ़त की और कहा कि अहले मदीना से जंग एक मुश्किल मरहला होगी लिहाज़ा किसी और मकाम को मरकज़ बनाना चाहिये। कुछ लोगों ने ये मशवरा भी दिया कि "शाम" को महाज़े जंग क़रार दिया जाये। इस पर इब्ने

1. तारीखे याक़ूबी :- ज. 2 स. 156
2. अबुल फिदा :- ज. 1 स. 172

आमिर ने कहा कि मुआविया के होते हुए शाम में तुम्हारी ज़रूरत नहीं है।[1]

शाम को महाज़े क़रार देने ये शायद अम्र भी माने था कि मुआविया जिसने उसमान का मातहत होते हुए भी उनकी मदद से गुरेज़ किया था, वो इन लोगों की मदद पर क्यों आमादा होता? फ़िर जिसने हज़रत अली की ख़िलाफ़त को क़ुबूल न किया हो वो इन लोगों की कामयाबी के बाद तल्हा और ज़ुबैर की ख़िलाफ़त को क्यों कर तस्लीम करता?

बेशक मुआविया इन लोगों का हमनवा था मगर उसी हद तक कि जिस हद तक हज़रत अली को इक़तिदार से हटाने का ताल्लुक़ हो।

आख़िरकार बड़ी रद्दोकद और सोच विचार के बाद महाज़े जंग के लिए बसरा की सरज़मीन का इनतिख़ाब अमल में आया। बसरा को महाज़े जंग बनाने में जहां ये मसलेहत कार फ़र्मा थी कि वहां उनके हमनवा कसरत से मौजूद थे जो जंग में उनका साथ देते वहां ये फाइदा भी मद्देनज़र था कि हिजाज़ के एक तरफ़ शाम है जहां मुआविया की हुकूमत है और दूसरी तरफ ईराक़ है। अगर ईराक़ पर तसल्लुत क़ायम रह जायेगा। जिसके बाद अमीरूल मोमिनीन की सिपाह को बआसानी ज़ेर करके इक़तिदार पर कब्ज़ा किया जा सकता है या इन दोनों ताक़तों के ज़ेरे असर उन्हें रखा जा सकता है। लेकिन ये महज़ उन लोगों की ख़ाम ख़याली थी क्यों कि "साहेबे ज़ुल्फ़िक़ार" से मुक़ाबला उनके इमकान से क़तई बाहर था।

इन तमाम बातों से ये अन्दाज़ा भी होता है कि आयशा और उनके हमनवाओं के पेशेनज़र ख़ूने उस्मान का क़िसास था ही नहीं। अगर क़िसास मक़सूद होता तो ये लोग बसरा को महाज़े जंग बनाने के बजाय मदीने ही को अपनी तख़रीबकारियों की आमा जगाह बनाते जो हज़रत आयशा की साबेका जौलानियों का मसकन भी था और जहां उस्मानी हादसे के जिम्मेदार अफ़राद भी काफ़ी तादाद में मौजूद थे।

---

1. तबरी :– ज. 3 स. 434

आयशा के बढ़ते क़दम

महाज़े जंग के तसफ़िये के बाद कूच की तैय्यारियां शुरू हो गयीं। यअली बिन उमैय्या नें क़बीलए उर्निया के एक शख़्स से छः सौ दिरहम में एक बदनसीब ऊँट ख़रीद कर आयशा के हवाले किया और उमूमी तौर पर ये एलान किया कि जिसके पास हथियार और सवारी नहीं है वो आये उसे तमाम चीजें मुहैय्या की जायेंगी।

चुनांचे अमीरूल मोमिनीन ने यअली के बारे में फ़रमाया कि :–

"वो मुझसे लड़ने के लिए लोगों को घोड़ा हथियार और तीस–तीस दीनार देता था।"[1]

तल्हा और ज़ुबैर ने अब्दुल्लाह इब्ने उमर पर दबाव भी डाला कि वो उनकी मुवाफ़िक़त और हमराही इख़्तियार करे। मगर उन्होंने ये कह कर इन्कार कर दिया कि आयशा के लिए हौदज में बैठने से घर में क़ैद रहना और तुम लोगों के लिए बसरा से मदीने में रहना ज़्यादा बेहतर है।[2]

हज़रत आयशा ने हफ़सा और उम्महातुल मोमिनीन को जो हज के बाद मक्के में क़ायम पिज़ीर थीं अपना हम ख़्याल बनाने की कोशिश की और उन्हें भी अपने हमराह जंग में हिस्सा लेने की दअवत दी। हफ़सा तैय्यार हो गयीं। मगर बाक़िया अज़्वाजे पैग़म्बर (स) ने साफ़ इनकार कर दिया। चुनांचे अब्दुल्लाह इबने उमर को जब अपनी बहन हफ़सा के इस इरादे का इल्म हुआ तो उन्होंने उन्हें भी रोक दिया।

इब्ने असीर का कहना है कि :–

"अज़्वाजे रसूल आयशा के साथ मदीने जाने का इरादा रखती थीं मगर जब आयशा की राय बदल गयी और वो (हज़रत अली से मुक़ाबले के लिए) बसरा जाने पर तैय्यार हो गयीं तो सबने उनका साथ

---

1. तारीख़े इस्लाम ज़हबी :– ज. 2 स. 14
2. अल इमामत वल सियासत :– ज. 1 स. 61

छोड़ दिया। मगर हफ़सा उनके साथ बसरा जाने पर तैय्यार हो गयीं। १मगर जब अब्दुल्लाह इब्ने उमर को मालूम हुआ तो उन्होंने रोक दिया।[1]

हफ़सा की आमादगी ख़िलाफ़े तवक़्क़ो न थी। इसलिए कि उनके और आयशा के नज़रियात में बड़ी हद तक हम आहंमी थी। न उनके मिज़ाज़ो में तज़ाद था और न तबीअतों में इख़तिलाफ़ और इसी बिना पर दोनों अज़्वाजे रसूल एक ही गिरोह से वाबस्ता थी।

जैसा कि बुख़ारी ने तहरीर किया है कि :–

अज्वाजे पैग़म्बर में दो गिरोह थे। एक में आयशा हफ़सा और सौदा थीं और दूसरे गिरोह में उम्मे सलमा और दीगर अज़्वाज थीं।[2]

हज़रत उम्मे सलमा की तमाम तर हमदर्दियां हज़र अली के साथ थी। चुनांचे जब आयशा ने उन्हें अपना हमनवा बनाने की कोशिश की तो उन्होंने उनके इस इक़दाम की मुख़ालिफ़त की और जवाब दिया :–

"अगर रसूलल्लाह (स) ये समझते कि औरतें जिहाद का बोझ उठा सकती हैं तो वो अपनी हयात में इसका हुक्म ज़रूर देते। क्या तुम्हें मालूम नहीं कि पैगम्बर तुम्हे दीनी मामलात में तजावुज़ से मना फ़रमा गये हैं। वो जानते थे कि अगर दीन का सुतून झुक गया तो औरतों से तो थम नहीं सकता और अगर उसमें शिगाफ़ पड़ गया तो औरतों के ज़रिये उसकी दुरूस्तगी और इस्लाह मुम्किन नहीं। औरतों का जिहाद सिर्फ़ ये है कि वो निगाहें नीचीं रखें। अपने ताल्लुक़ात को महदूद रखें, और अपने दामन को समेंटे। अगर रसूल (स) तुम्हें इन सहराओं में ऊँट दौड़ाते हुए एक चश्मे से दूसरे चश्में तक जाते हुए देखते तो क्या कहते? कल तुम्हे रसूलल्लाह (स) के सामने जाना होगा तो तुम क्या जवाब दोगी? खुदा की क़सम अगर हश्र में मुझसे ये कहा गया कि ऐ उम्मे सलमा तुम जन्नत में दाख़िल हो जाओ तो अगर मैंने उस हिजाब को तोड़ा है जिसका रसूल मुझे पाबन्द बना गये थे तो मुझे उनका

---

1. कामिल :– ज. 3 स. 106
2. बुख़ारी :– ज. 2 स. 59

सामना करते हुए शर्म आएगी। लिहाज़ा बेहतर है कि तुम पर्दे की पाबन्द और घर की चारदीवारी में बन्द रहो।"[1]

हज़रत आयशा की इन नसीहत आमेज़ बातों से सबक़ हासिल करने के बजाये आयशा ने उन्हें ये जवाब दिया कि मैं दो मुतहारिब गिरोहों में सुल्ह कराने और बरगश्ता माहौल को पुरअम्न और साज़गार बनाने की ग़रज़ से जा रही हूं।

ज़ाहिर है कि उम्मुल मोमिनीन का ये जवाब दफ़उल वक़्ती के लिए था वरना हक़ीक़त ढकी छुपी नहीं थी कि वो इस नेज़ाअ में खुद एक फरीक़ की हैसियत रखती थीं। अगर वो खुदा और रसूल के हुक्म पर अमल पैरा होकर घर में बैठी रहती और लशकर जमा करके बसरा का रूख़ न करतीं तो दो फ़रीक़ पैदा ही न होते और न ही जंगो जदल की नौबत ही आती। और अगर मुअज़्ज़मा का मक़सद दो गिरोहों में सुल्हों सफ़ाई पर मब्नी था तो फ़िर उन्हें सामाने हर्बो ज़र्ब और लशकर इकट्ठा करने की क्या ज़रूरत थी?

बहरहाल हज़रत आयशा सात सौ की जमीअत के साथ जो उस वक़्त उनके परचम के नीचे जमा हो चुकी थी बसरा की तरफ़ रवाना हो गयीं।

इस तरह कि "आयशा ऊँट पे बैठी थीं रसूलन बनकर" रास्ते में वो लोग भी उनकी चिकनी चुपड़ी बातों से मुतास्सिर होकर फ़रेब में मुब्तिला होते गये जो वे समझें बूझे उनके साथ हो लिए। इस तरह लशकरियों की तादाद तीन हज़ार तक पहुंच गयीं। और जब ये लशकर उस मोड़ (ज़ाते अर्क़) पर पहुंचा, जहां से बसरा की राह लेना थी तो सईद इब्ने आस ने मरवान से पूछा :–

हम लोग आख़िर किस तरफ़ मुंह उठाये हुए चले जा रहे हैं? और इस दस्त पैमाई का मक़सद क्या है? मरवान ने कहा:–

"हम बसरा जा रहे हैं।" सईद ने कहा :–

---

1. अक़्दुल फरीद :– ज. 2 स. 99

बसरा में क्या है? मरवान ने कहा हम उस्मान के क़ातिलों से बदला लेना चाहते हैं। उस पर सईद ने तुर्श लहजे में कहा :–

उस्मान के क़ातिल (तल्हा व ज़ुबैर) तो तुम लोगों के साथ ही हैं, उन्ही को क़त्ल कर डालो और अपने घरों को वापस चले जाओ। एक दूसरे का नाहक़ ख़ून न बहाओ।[1]

उसके बाद सईद इबने आमिर तल्हा और ज़ुबैर के पास आये, और उनसे तन्हाई में पूछा :–

ये बताओ अगर तुम लोगों ने ये जंग जीत ली और अपने मक़सद में क़ामयाब हो गये तो ख़लीफ़ा कौन होगा? सईद ने कहा :– जब तुमने ख़ूने उस्मान के क़िसास पर जंग का इरादा रखते हो तो तुम्हे उस्मान के बेटों में से किसी को ख़लीफ़ा बनाना चाहिए। जबकि उनके दो साहबज़ादे अबान और वलीद तुम्हारे साथ हैं, और अगर तुमने ऐसा न किया तो दुनिया के लोग यही कहेंगे कि ख़ूने उस्मान के क़िसास का लबादह ओढ़कर अपने इक़तिदार की राह हमवार काने निकले थे।

उस पर तल्हा और ज़ुबैर दोनों एक साथ तड़पकर बोल उठे :–

क्या हम बुज़ुर्गो सिन रसीदह मुहाजिरीन को छोड़ के उस्मान के बाल बच्चों को ख़लीफ़ा बनायेंगे।[2]

तल्हा और ज़ुबैर की इस गुफ़तुगू ने सईद पर वाज़ेह कर दिया कि ये लोग क़िसास तलबी के लिए नहीं निकले बल्कि ये सारा हड़बोग हुकूमत और इक़तिदार के लिए हैं। चुनांचे वो किनाराकश हो गये और उनके साथ अब्दुल्लाह इब्ने ख़लिद मुग़ीरह बिन शैबा और क़बीलए बनी सक़ीफ़ के लोग भी अलाहिदा होकर ताएफ़ की तरफ़ चले गये। बाक़ी लशकर अपनी मन्ज़िल की तरफ़ रवाना हो गया।

---

1. तबरी :– ज. 3 स. 472
2. तबरी :– ज. 3 स. 472

कुत्तों का इसतेफ़सार

लशकर अपनी मुअय्यना मन्ज़िल की तरफ़ गामज़न था कि दौराने सफ़र एक ऐसा वाक़ेआ रूनुमा हुआ जिसने आयशा के होशो हवास को दरहम बरहम और उनके अजाएमों इरादों को मुतज़लज़िल कर दिया। वो ये कि जब उम्मुल मोमिनीन अपने लशकर के साथ हौअब[1] नामी एक चश्में के क़रीब शब गुज़ारी के लिए फ़रोकश हुई वो अपने कुत्तों के भौंकने की आवाज़ें सुनीं जो भौंक भौंक कर आपका ख़ैरमक़दम कर रहे थे और अपनी ज़बान में ये पूछ रहे थे कि ऐ उम्मुल मोमिनीन! ख़ुदा और रसूल के हुक्म के ख़िलाफ़ आप घर से क्यों निकल खड़ीं हुईं? आख़िर आपके साथ क्या मजबूरी थी जबकि पैग़म्बर की तरफ़ से आपको घर में बैठने की सख़्त ताक़ीद थी। क्या आप हुज़ूर (स) की तम्बीह भूल गयीं थीं जिसमें आपने अपनी अज़्वाज़ को मुख़ातिब करके फ़रमाया था कि तुममें वो कौन हैं जिस पर हौअब के कुत्ते भौंकेंगे?

फ़िर कुत्तों ने ये फ़र्याद भी की :–

हमें अफ़सोस है कि आपने अपने ही हाथों अपना दामने इज़्ज़तो हुर्मत चाक कर डाला। ख़ुदा के लिए वापस जाइये और तौबा और इसतिग़फ़ार के जरिये अपनी इस ग़ल्ती की तलाफ़ी कीजिए और हमें ज़्यादह भौंकने पर मजबूर न कीजिए।

कुत्तों की इस फ़र्याद और इसतेफ़्सार का असर आयशा पर हुआ हो या न हुआ हो लेकिन उनके दिमाग़ो–दिल में एक ख़लिश और उलझन ज़रूर पैदा हो गयी, चुनांचे उन्होंने क़रीब खड़े सारबान से पूछा कि ये कौन सा मक़ाम है? उसने कहा ये "हौअब" है। हौअब का नाम सुना था कि आप पर लर्ज़ा जारी हो गया, ख़ौफ़ो दहशत से कांपने लगीं और चीख़–चीख़ कर कहने लगीं कि :–

---

1. ये चश्मए हौअब बिन्ते कल्ब इब्ने दबुर्रह के नाम पर हौअब कहलाता है

"मुझे वापस जाने दो, ख़ुदा की क़सम मैं ही वो हौअब वाली हूं।"[1]

तल्हा और ज़ुबैर वग़ैरह को भी उनकी इस अचानक तबदीली पर हैरत हुई, उन लोगों ने उन्हें तसल्ली दी और कहा "हौअब" है तो हुआ करे आप इस क़दर सरासीमा और परेशान क्यों हैं? और वापसी पर इसरार क्यों हैं? जवाब में आपने फ़रमाया :–

एक मरतबा रसूलल्लाह (स) की बीवियां उनके गिर्द जमा थीं कि मैंने आपको फरमाते हुए सुना कि तुममें वो कौन है जिस पर "हौअब" के कुत्ते भौंकेंगे।[2]

लिहाज़ा अब मुझे कोई शको शुब्ह नहीं कि उससे मुराद मैं हूं और आं हज़रत (स) का इशारा मेरी ही तरफ़ था। बेहतर यही है कि मुझे वापस चला जाना चाहिये।

जब तल्हा और ज़ुबैर ने सारा मामला बिगड़ते देखा तो कहा कि कुत्तों को भौंकने दीजिए और सारबान को कहने दीजिए ये हौअब नहीं है। फिर मुअज़्ज़मा को यक़ीन दिलाने के लिए अब्दुल्लाह इब्ने ज़ुबैर ने आस–पास के पचास आदमियों को इकट्ठा किया और उन्हें कुछ दे दिला कर इस अम्र की झूठी गवाही दिलवा दी कि ये हौअब नहीं है। इमामे शअबी का कहना है कि ये पहली झूठी गवाही थी जो इस्लाम में दी गयी।[3]

अभी उम्मुल मोमिनीन ज़ेहनी कशमकश और तज़बज़ुब के आलम में मुबतला ही थीं कि तल्हा ने एक तरफ़ से ये हुल्लड़ मचवा दिया कि, जल्दी करो, उठो और चलो, अली इब्ने अबी तालिब (स) सरों पर आ पहुंचे हैं।[4]

तल्हा की ये तदबीर कारगर हुई, सुनते ही लोग अफ़रा तफ़री के आलम में खड़े हो गये और हज़रत अली का नाम सुनते ही उम्मुल

1. तारीख़े कामिल :– ज. 3 स. 107
2. तारीख़े कामिल :– ज. 3 स. 107
3. तज़किरए खवासुल उम्मा :– स. 39
4. कामिल :– ज. स. 108

मोमिनीन के ख़यालात ने इस तरह पलटा खाया कि उन्हें न तो कुत्तों को भौकना याद रहा, न हौअब, न क़ौले पैगम्बर (स)। अमीरूल मोमिनीन की अदावत और दुशमनी में उनके मुज़महिल इरादों और पसमुर्दा हौसलों पर फिर से शबाब आ गया और वो मुकम्मल जोशों ख़रोश के साथ लशकर की क़यादत करती हुई बसरा की तरफ़ फ़िर चल पड़ीं।

उम्मुल मोमिनीन उम्मे सलमा की पेशकश

एक तरफ़ हज़रत आयशा क़दम क़दम पर नये नये गुल खिला रहीं थी और दूसरी तरफ़ अमीरूल मोमिनीन हज़रत अली (अ) मुआविया की तरफ़ से शाम में रूनुमा होने वाली बग़ावत को फरो करने की फिक्र में थे कि उन्हें तल्हा और ज़ुबैर की बैअत शिकनी और आयशा की लशकरकशी की इत्तेलआ मदीने में फ़राहम हुई।

आपको तल्हा और ज़ुबैर की तरफ़ से ये अन्देशा ज़रूर था कि वो मुआविया से साज़ बाज़ करके फ़ित्ना वशर को हवा देंगे। मगर आयशा की तरफ़ से ये ख़्याल भी न था कि वो मारका आराई के लिए फ़ौज कशी करेंगी। और ख़ुदा व रसूल के ख़िलाफ़ घर से निकल खड़ीं होंगी। लिहाज़ा आपने मजबूरन शाम की मुहिम का ख़्याल तर्क किया ताकि मौजूदा सूरते हाल से निपटा जा सके। चुनांचे मदीने के सरकर्दा अफ़राद को आपने मस्जिदे नब्वी में जमा किया और फरमाया कि तल्हा और ज़ुबैर के बाग़ियाना इक़दाम का तुम्हें इल्म हो चुका है, तुम लोग मेरा साथ दो ताकि बसरा पहुंचने से पहले ही उन लोगों को रास्ते में रोक लिया जाये। कुछ लोग आयशा तल्हा और ज़ुबैर ऐसी बाअसर शख़्सियतों के मुक़ाबले खड़े होने से हिचकिचाने लगे, कुछ लोगों ने साफ़ इनकार कर दिया अलबत्ता ज़्यादा इब्ने हन्ज़ला, हसीम इब्ने तैहान और अबू क़सावए अनसरी वग़ैरह ने हिमायत का यक़ीन दिलाया, अबू क़सावा ने एक पुरजोश तक़रीरे भी की और ये कहा :–

या अमीरूल मोमिनीन! ये तलवार मुझे रसूलल्लाह (स) ने सौंपी थी और एक अर्से से ये मियान में है लेकिन अब वक़्त आ गया है कि मैं इन ज़ालिमों के ख़िलाफ इसे बे नियाम करूं जो उम्मत को फ़रेब देने में पेश पेश है।[1]

हज़रत उम्मे सलमा ने अपने फ़रजन्द उमर इब्ने अबी सलमा को अमीरूल मोमिनीन की ख़िदमत में पेश किया और फ़रमाया :–

मैं इसे आपके हवाले करती हूं, ये जान से ज़्यादा मुझे अज़ीज़ है। मेरा फ़रज़न्द तमाम मारको में आपके साथ रहेगा यहां तक कि ख़ुदा वन्दे आलम वो फ़ैसला करे जो करने वाला है। अगर रसूलल्लाह के हुक्म की ख़िलाफ़ वर्ज़ी न होती तो मैं भी आपके हमराह जाती जिस तरह आयशा, तल्हा और ज़ुबैर के साथ निकल खड़ी हुई है।[2]

हज़रत उम्मे सलमा की इस पेशकश पर हक़ परस्ती जिस क़दर भी फ़ख़ करे कम है।

अबू मूसा अशअरी की रख़ना अंदाज़ी

अमीरूल मोमिनीन हज़रत अली अलैहिस्सलाम ने मदीने में सहल इब्ने हुनैफ़े अनसारी और मक्के में क़सम इब्ने अब्बास को अपना क़ायम मक़ाम मुक़र्रर किया और इस शान से मुहिम सर करने के लिए कि आम लशकरियों के अलावा सत्तर बद्र में, और चार सौ बैअते रिज़वान में शरीक होने वाले सहाबा आपके शरीक थे।

मक़ामे ज़ीवक़ार पर पहुंच कर आपने मन्ज़िल की और जंग की नज़ाकत को मद्देनज़र रखते हुए इमामे हसन इलैहिस्सलाम और अम्मारे यासिर को कूफ़ा रवाना किया कि वहां के लोगों को जिहाद की दावत दें। जब ये लोग कूफे पहुंचे और अहले कूफ़ा को अमीरूल

---

1. तारीखे कामिल :– ज. 3 स. 13
2. अनसाबुल अशनफ :– ज. 1 स. 430

मोमिनीन का पैग़ाम दिया तो वालिए कूफ़ा अबू मेसा अशअरी दर्मियान में दीवार बनकर हाएल हो गया और ये कहकर लोगों को रोकना शुरू किया कि ये इक़तिदार की जंग है जो दुनियां का तलबगार हो वो जाये। और जो आख़रत का ख़्वास्वगार हो वो गोशा नशीनन होकर घर में बैठे। अबू मूसा अशअारी की इस रख़ना अंदाज़ी की इत्तेला जब अमीरूल मोमिनीन को मिली तो आपने इब्ने अब्बास और मालिके अशतर को कूफ़े भेजा कि वो अबू मूसा को समझायें कि वो इन हरकतों से बाज़ रहें। चुनांचे मस्जिदे कूफ़ा में उन लोगों ने समझाया कि अमीरूल मोमिनीन की नुसरतों मदद का मक़सद फ़ित्ना व शर का इन्सेदाद और इस्लाह बैन्ननास है। मगर उसने कहा कि मैं ने रसूलल्लाह (स) को फ़रमाते सुना है कि अनक़रीब एक फ़ितना बरपा होगा। जिसमें बैठने वाला खड़े होने वाले से, खड़ा होने वाला चलने वाले से ओर चलने वाला सवार होने वाले से बेहतर होगा।[1]

आख़िर वो लोग (तल्हा और ज़ुबैर) भी तो हमारे ही भाई बन्द हैं, न उनका खून हमारे लिए मुबाह है और न उनका माल छीनना हमारे लिए जाएज़ है। उस पर अम्मारे यासिर ने बिगड़ कर कहा :–

"बेशक, तुम्हारा गोशा नशीन हो जाना बेहतर है।"[2]

फ़िर ये दोनों एक दूसरे से उलझते रहे ओर मूसा यही इसरार करता रहा कि ये एक फ़ितना है इससे किनारा कशी ही बेहतर है।

इधर ये कशमकश जारी थी, उधर ज़ैद इब्ने सौहान ने हज़रत आयशा की तरफ़ से मूसा के नाम मौसूल शुदा दो ख़ूतूत हाज़िरीन को पढ़कर सुनाये जिनमें अबू मुसा को ये ताकीद की गयी थी कि तुम मेरी मदद को आओ और अगर किसी मजबूरी के तहत न आ सको तो अहले बसरा को अली की नुसरत और मदद से रोको।

इन ख़ुतूत को पढ़ने के बाद ज़ैद ने तन्ज़िया लहजे में कहा :–

"तुम दरिया के बहाव को नहीं रोक सकते, लिहाज़ा जो बात

1. क़ामिल :– ज. 3 स. 117
2. कामिल :– ज. 3 स. 117

तुम्हारे इख़्तियार में नहीं है उससे दस्तबरदार हो जाओ। और लोगों को अमीरूल मोमिनीन की नुसरत से रोकने के बजाये ख़ामोश होकर घर में बैठ जाओ।

मगर उस पर किसी बात का असर न हुआ और वो बराबर ये कहता रहा कि ये एक फ़ितना है इससे बचना चाहिये। इमामे हसन अलैहिस्सलाम भी मस्जिद में मौजूद थे, जब आपने अबू मूसा का ये मुआनिदाना रवैय्या देखा तो उसे फ़टकारते हुए फ़रमाया :–

"हमारी मस्जिद से निकल और जहां तेरा दिल चाहे चला जा।"[1]

फ़िर आपने मिम्बर से एक बलीग़ और पुरअसर तक़रीर की और लोगों को अमीरूल मोमिनीन की नुसरत पर आमादा किया। इसका असर ये हुआ कि अहले कूफ़ा ने करवट ली और आवामी सैलाब आगे बढ़ने लगा। जब कूफ़े की फ़ज़ा मुकम्मल तौर पर साज़गार हो गयी तो मालिके अशतर ने दारूल अमारह पर क़ब्ज़ा कर लिया और अबू मूसा को क़स्र में दाख़िल होने से रोक दिया। अबू मूसा ने गिड़गिड़ा कर खुशामद की और कहा कि मुझे एक रात की मोहलत दीजिए।

मालिके अशतर ने कहा कि तुम्हें सिर्फ इशां तक मोहलत दी जाती है, अपना मुंह काला करो और शहर से निकल जाओ। चुनांचे वो शाम की तरफ़ निकल गया। इधर अहले कूफ़ा गिरोहदर गिरोह उठ खड़े हुए और अबू मूसा की कोशिश और आयशा के ख़ुतूत के बावजूद बारह हज़ार शमशीर ज़न रातो रात मक़ामे ज़ीकार अमीरूल मोमिनीन के परचम तले जमा हो गये।

अमीरूल मोमिनीन हज़रत अली का ये जंगी इक़दाम हुक्मे रसूल (स) के ऐन मुताबिक़ था और इस मुहिम को सर करने की पैग़म्बर ने आपको हिदायत की थी। जैसा कि अबू अय्यूबे अनसारी का बयान है कि :–

रसूलल्लाह (स) ने हज़रत अली को ये हुक्म दिया था कि वो बैअत शिकनों (असहाबे जमल) बेराहरूओं (असहाबे सिफ़्फ़ीन) और

---

1. अख़बारूत तौल :– स. 145

बेदीनों (ख़वारिज) से जंग करें।[1]

पैग़म्बरे इस्लाम ने हज़रत अली के इस इक़दाम को एक मज़लूम और हक़ परस्त का इक़दाम और इसके मुक़ाबले में ज़ुबैर की जंग को ज़ालिमाना वा ज़ारिहाना क़रार देते हुए बतौरे पेशिनगाई फ़रमाया था :–

"ऐ ज़ुबैर! जब तुम अली से जंग करोगे तो उनके हक़ में ज़ालिम हो गये।[2]

और हज़रत आयशा को हौअब के सिलसिले में मुतनब्बे करते हुए फ़रमाया था :–

"ख़बरदार, ऐ आयशा! कहीं वो तुम ही न हो।"[3]

इन इरशादाते पैग़म्बर के अलावा क़ुर्आने मजीद में भी बाग़ियों के बारे में ये सरीही हुक्म है कि :–

"अगर अहले ईमान के दो गिरोह आपस में बरसरे पैकार हों तो उनमें सुल्ह कराओ, और अगर उनमें से एक गिरोह दूसरे गिरोह पर ज़ियादती करे तो तुम उस ज़ियादती करने वाले गिरोह से जंग करो।"

इन नुसूस के होते हुए कौन कह सकता है कि हज़रत का ये इक़दाम आयशा के मुक़ाबले में ग़लत था?

आयशा और अहले बसरा

हज़रत आयशा का लशकर चश्मए हौअब से रवाना होकर जब "चाहे अबू मूसा" पर पहुंचा और हाकिमे बसरा उस्मान बिन हुनैफ़ को लशकर के साथ अचानक वारिद बसरा होने की ख़बर मिली तो उसने अबू असवदे वाएली और इमरान इब्ने हसीन को भेजा कि वो आपसे बसरा आने का सबब मालूम करे चुनांचे लोग गये और आयशा से पूछा:–

---

1. मुसतदरक हाकिम :– ज. 3 स. 139
2. कामिल :– ज. 3 स. 122
3. याकूबी :– ज. 3 स. 157

ऐ मादरे गिरायी! आप किस मक़सद से यहां तशरीफ़ लाई है, और ये फ़ौज़ो सिपाह आपके साथ क्यों है? कहा कि मैं ख़ूने उसमान का इन्तिक़ाम लेने आयी हूं जो बेजुर्मो ख़ता घर के अन्दर क़त्ल कर दिये गये। अबुल असवद ने कहा कि बसरा में उसमान का क़ातिल कोई नहीं है, आप ग़लतफ़हमी में मुब्तिला हैं।

आयशा ने कहा कि मैं अहले बसरा के तआवुन से इन्तिक़ाम लेना चाहती हूं। अबुल असवद ने कहा, रसूलल्लाह आपको घर में बैठने का हुक्म दे गये हैं, इन मारका आराइयों से आपको क्या मतलब? क्या आपके शायाने शन ये बात है कि घर का गोशा छोड़ कर मैदाने कारज़ार गर्म करने निकल खड़ी हों?

हज़रत आयशा ने कहा हमसे लड़ने की हिम्मत कौन करेगा? इस पर अबुल असवद ने कहा, हम लड़ेंगे, और दुनिया देखेगी कि किस तरह लड़ा जाता है।

आयशा का ये गुरूर और ये घमण्ड शायद इसलिए था कि वो उम्मुल मोमिनीन हैं और ज़ौजए रसूल होने की वजह से इन्तिहाई इज़्ज़तों तौक़ीर की मुस्तहक़ हैं लिहाज़ा ऐसी सूरत में कौन उनसे नबर्द आज़मायी की जसारत कर सकता है? मगर उनका ये ख़्याल उस वक़्त सही होता जब वो ख़ुद इस एहतिराम को बरक़रार रखतीं, और घर का गोशा न छोड़तीं। जब वो खुद अपनी मन्ज़िलत का पासो लिहाज़ न कर सकीं तो उन्हें ये तवक़्क़ो क्यों थीं कि वो एहतिराम जो उन्हें घर के अन्दर रहने में हासिल था, बाहर भी बरक़रार रहता। इस सिलसिले में मोहतर्मा का दूसरा ख़्याल ग़ालिबन ये था कि हज़रत अली के हमराह यही चन्द गिने चुने अफ़राद होंगे जो उनके साथ मदीने से चले होंगे। कूफ़ा जहां से जगंजू सिपाह फ़राहम हो सकती हैं वो अबू मूसा अशअरी के ज़ेरे असर हैं, उसके होते हुए वहां से कुमक मिलने का इमकान नहीं। लिहाज़ा ऐसी सूरत में हज़रत अली की मुख़तसर सी फ़ौज उनके लशकरे गंरा की ताब न ला सकेगी, और वो बग़ैर लड़े ही हथियार डालने पर मजबूर हो जायेगी। लेकिन मामला इसके बरख़िलाफ़ निकला। अमीरूल मोमिनीन की आवाज़ पर अहले कूफ़ा उमंड पड़े और रातों रात

उनकी सिपाह में शामिल होकर पूरे लशकर पर छा गये।

ग़रज़ कि अबुल असवद उनकी गुफ़्तुगू से समझ गये कि ये लोग फ़ितन व शर पर आमादा और जंगो जदल पर तुले हुए हैं। अब उनसे मज़ीद बातचीत करना वक़्त को बरबाद करना है लिहाज़ा वो पलट आये और उस्मान बिन हुनैफ़ को उनके इरादों से आगाह कर दिया और साथ ही साथ उनको ये मशवरह भी दिया कि दिफ़ाई और हिफ़ाज़ती इन्तिज़ामात और मज़बूत कर दिये जाये।

चाहे अबू मूसा पर कुछ तवक़्क़ुफ़ के बाद, उम्मुल मोमिनीन का लशकर हरकत में आ गया और हुदूदे बसरा में दाख़िल होकर उसने मज़ीद ऊँटों की मन्डी में पड़ाव डाल दिया।

अहले बसरा को जब आयशा तल्हा और ज़ुबैर के आने की ख़बर मिली तो वो चारों तरफ़ से सिमट कर कसीर तादाद में उनके गिर्दो पेश जमा हो गये और बाहम चहमीगोइयां और क़यास आराइयां होने लगीं। कोई कुछ कहता था कोई कुछ। एक शख़्स ने खड़े होकर मजमें को ख़िताब किया और कहा :–

ऐ लोगों! अगर ये लोग किसी ख़ैफ़ो दहशत की वजह से हमारे शहर में आये हैं तो इन्हें पनाह दो और अगर ख़ूने उस्मान के इन्तिक़ाम की ग़रज़ से आये हैं तो हममें कोई उस्मान का क़ातिल नहीं है लिहाज़ा उन्हें वापस जाने पर मजबूर होना ही पड़ेगा।

इसके बाद जाया इब्ने क़तादह ने हिम्मत की और आगे बढ़कर आयशा से कहा :–

ऐ उम्मुल मोमिनीन! आपका इस मलऊन ऊँट पर बैठ कर हथियारों का निशाना बनने के लिए उठ खड़ा होना क़त्ले उस्मान से कहीं ज्यादह मुसीबत खेज़ है। खुदा की तरफ़ से आपके लिए हिजाब व एहतिराम का हुक्म था जिसका दामन रक़द आपही ने चाक कर डाला। जो शख़्स आप से जंग कर सकता है वो आपको क़त्ल करने में भी दरेग़ नहीं करेगा। अगर आप अपनी मर्ज़ी से आयी है तो बेहतर है कि वापस चली जाइये और अगर घेर कर लायी गयी है तो लाने वालों

के ख़िलाफ़ हमसे मदद तलब कीजिए।

हज़रत आयशा ने ज़ारिया की इन बातों का कोई जवाब नहीं दिया क्योंकि उस वक़्त आपकी सारी तवज्जो अपनी कुव्वतों ताक़त को बढ़ाने और लोगों को अपना हम ख़्याल बाने के नुकते पर मर्कूज़ थी। और उनके पेशे नज़र ये मरहला था कि अहले बसरा को किसी तदबीर से ये यक़ीन दिलायें कि कत्ले उस्मान हज़रत अली के इशारे पर हुआ है और चन्द शोरिश पसन्दों के बल पर उन्हीं मसनदे ख़िलाफ़त पर क़ब्ज़ा कर लिया है। न राय आम्मा उनकी ताईद के हक़ में है और न उन्हें असहाबे शूरा का तआवुन हासिल है ग़रज़ कि आयश, तल्हा और जुबैर ने इस किस्म के ग़लत तास्सुरात देने के लिए मौजूदह मजमें को ख़िताब किया। जिसका नतीजा ये हुआ कि हाजेरीन दो गिरोहों में बंट गये। एक गिरोह आयशा तल्हा और जुबैर की हिमायत पर उतर आया और दूसरा गिरोह उस्मान बिन हुनैफ़ का हमनवा बन गया और बाहम तक़रार होने लगीं फ़िर क्या था एक दूसरे पर जूते चले पत्थर बरसे, और घर–घर में फूट पड़ गयी, और भाई–भाई में तफ़र्का पैदा हो गया। बसरा में ये हज़रत आयशा के क़दमों की पहली बरकत थी।

उस्मान बिन हुनैफ़ की दुर्गत

तल्हा, जुबैर और आयशा की चालबाज़ियों और मक्कारियों की बदौलत फ़रेब में मुबतिला होकर अहले बसरा की अक़सरियत उनके साथ हो गयी तो उन्हें ये फ़िक्र लाहक़ हुई कि अमीरूल मोमिनीन हज़रत अली के वारिदे बसरा होने से पहले ही बैतुल माल और शहर के नज़्मों नसक़ को अपने क़ब्ज़े में ले लिया जाए। चुनांचे उन्होंने की शहर तरफ़ रूख़ किया। बसरा के हाकिम उस्मान बिन हुनैफ़ आसानी से शहर उनके हवाले करने को तैयार न थे। उन्होंने तमाम रास्तों की नाका बन्दी करके जहां तक मुम्किन हो सका हिफ़ाज़ती इक़दामात किये। यहां तक कि हमला आवर जिस रास्ते से बढ़ने की कोशिश करते उस्मान बिन हुनैफ़ के साथी आहिनी दीवार बनकर खड़े हो जाते और उन्हें आगे बढ़ने से रोक देते। लेकिन हज़ारों के रेले को कब तक रोका

जा सकता था जब कि उस्मान की तरफ़ से हर महाज़ पर चन्द गिनती के लोग मामूर थे जिनमें न मुसल्लह अफ़वाज़ से मुक़बले की ताक़त थी और नहीं मुक़ाबले में कामयाबी की उम्मीद। जब उस्मान बिन हुनैफ़ ने देखा कि शहर उनके दस्तबर्द से महफ़ूज़ नहीं रखा जा सकता तो वो एक फ़ौजी दस्ता लेकर तल्हा व ज़ुबैर के पास आए और उनसे कहा कि तुम लोग क्या चाहते हो और ये शेरिशों हंगामा क्यों? कहा, हम ख़ूने उस्मान का क़िसास चाहते हैं। उसमान ने कहा क़िसास लेने का ये कोई तरीका नहीं है, ये क्यों नहीं कहते कि हम ख़िलाफ़त के लिए लड़ रहे हैं। तल्हा ने कहा, अगर ऐसा हो भी तो हमसे ज्यादा अली ख़िलाफ़त के अहल नहीं है। ग़रज़ कि दोनों तरफ़ से बात बढ़ने लगी और नौबत ये आयी कि फ़रीक़ैन ने तलवारे सौंत लीं और झड़प शुरू हो गयी। जब दोनों तरफ़ के अच्छे खासे लोग मारे जा चुके तो आयशा ने लड़ाई रूकवा दी। और दोनों के दर्मियान ये मुआहिदा हो गया कि अमीरूल मोमिनीन हज़रत अली इब्ने अबी तालिब अलैहिस्सलाम तशरीफ़ लाये उस वक़्त तक फ़रीक़ैन ख़ामोश रहें और हुकूमत के इन्तिज़ामी उमर अपनी जगह बदस्तूर बरक़रार रहे। लेकिन इस मुआहिदे को अभी दो दिन ही गुज़रे थे कि एक सर्द व तारीक रात में आयशा के आदमियों ने उस्मान पर शबशून मारा और उन्हें गिरफ़्तार करके उनकी दाढ़ी, सर, भौं, और पलकों का एक–एक बाल उखेड़ लिया। जैसा कि इब्ने असीर लिखते हैं:–

"अभी दो, तीन दिन ही गुज़रे होंगे कि उन्होंने बैतुर रिज़्क़ के नज़दीक उसमान पर हमला कर दिया, और गिरफ़्तार करके चाहा कि उन्हें क़त्ल कर दे, मगर इस ख़्याल से कि कहीं अन्सार बिफ़र न जाये के लोग डर गये मगर उनके सर दाढ़ी, भौ, और पलकों के बालों को उखेड़ कर उन्हें क़ैद कर दिया।[1]

ज़ाहिर है कि जब हाकिमें बसरा उस्मान क़ैद हो गये तो उनके बारे में उम्मुल मोमिनीन का मशवरह भी ज़रूरी था। चुनांचे तल्हा व ज़ुबेर ने ख़लीफ़ा उस्मान के फ़रज़न्द अबान से ज़रिये आयशा से मालूम

1. तारीखे कामिल :– ज. 3 स. 111

कराया कि उस्मान बिन हुनैफ़ को क़ैद रखा जाये या क़त्ल कर दिया जाये। हज़रत आयशा ने फ़ौरन हुक्म सादिर कर दिया कि उन्हें क़त्ल कर दो।

एक औरत ने जब ये सुना तो चींख़ कर आयशा से कहा :–

क्या गज़ब कर रही हो, उस्मान रसूल (स) का सहाबी और तुम्हारे बाप अबूबकर का दोस्त है। आयशा ने कहा अच्छा? तो फ़िर अबान को बुलाओ।

अबान पलट कर आया तो आयशा ने दूसरा हुक्म सादिर फ़रमाया कि उन्हें क़त्ल न करो बल्कि क़ैद ही रहने दो।

अबान ने ये दूसरा हुक्म सुना तो कहने लगा, अगर मुझे मालूम होता कि आप इस मक़सद से बुला रही हैं तो मैं पलट कर ही न आता[1]

जंगे जमले असग़र

उम्मुल मोमिनीन हज़रत आयशा के हुक्मे से उस्मान बिन हुनैफ़ की जान तो बच गयी मगर उनके साथियों में से चालीस आदमी बेजुर्मो ख़ता क़त्ल कर दिये गयें इस कुश्तो ख़ून के बाद आयशा के लशकरियों ने बैतुल माल पर धावा बोल दिया और उसके पचास मुहाफ़िज़ों को भेड़ों और बकरियों की तरह ज़िब्ह कर डाला।

जब बसरा को एक मुमताज़ शख़्सियत हकीम इब्ने जबला को इस सफ़फाकी, खूंरेजी, और जुल्मों तशद्दुद का हाल मालूम हुआ तो वो तड़प उठे और कहा कि अगर मैं इस मौके पर ख़ामोश बैठा रहा तो अपने परवरदिगार को क्या जवाब दूंगा? चुनांचे वो क़बीलए बनी बकर और क़बीलए अब्दुल क़ैस के तीन सौ आदमियों को लेकर बैतुर रिज़्क़की तरफ़ बढ़े जहां अब्दुल्लाह इब्ने ज़ुबैर अपने आदमियों में लूट का गल्ला तक़सीम कर रहे थे। उसने हकीम को आते देखा तो आगे बढ़कर पूछा कि तुम कैसे आये हो? कहा इस गल्ले की तक़सीम बन्द

1. तबरी :– ज. 3 स. 485

की जाये, उस्मान बिन हकीम को रिहा किया जाये और उन्हें उस वक़्त तक दारूल अमारह में रहने दिया जाये जब तक अमीरूल मोमिनीन यहां नहीं आ जाते। ख़ुदा की क़सम अगर मेरे पास यारों अन्सार होते तो मैं इस क़त्लों ग़ारतग़री का इन्तिक़ाम ज़रूर लेता जिसे तुम लोगों ने रवा रवा है।

इब्ने ज़ुबैर ने कहा, "हमने ख़ूने उस्मान का बदला लिया है।" हकीम ने कहा :–

जिन लोगों को तुमने क़त्ल किया है क्या वो उसमान के क़ातिल थे? तुम लोग क़हरे ख़ुदा से क्यों नहीं डरते, और क़त्लो ग़ारतग़री का सिलसिला आख़िर क्यों नहीं बन्द करते? इस पर इब्ने ज़ुबैर ने हकीम को गालियां दीं और कहा, तुम लोग यूं ही चींखते चिल्लाते रहो हम वही करेंगे जो हमें करना है। अब रह गया उस्मान बिन हुनैफ़ कि रिहाई का सवाल तो वो उसी वक़्त मुम्किन है जब वो अली की बैअत का तौक़ अपनी गर्दन से उतारकर हमारे साथ उनके मुक़ाबले में सफ़आरा हो जायें। हकीम ने जब ये सूरते हाल देखी तो कहने लगे :–

"परवरदिगार! गवाह रहना इन लोगों के ज़ुल्मों ज़ौर पर तू हाकिमो आदिल है।"

फिर आपने साथियों से कहा:–

"मुझे इन लोगों से जंगो क़िताल के जवाज़ में कोई शुब्हा नहीं, जिसे शक हो वो वापस चला जायें।"[1]

ये कहकर हकीम ने क़बज़ए शमशीर पर हाथ रखा और मैदान में उतर आये। हरीफ़ों की तलवारें भी नियामों से निकल पड़ीं, और देखते ही देखते मैदाने कारज़ार गर्म होने लगा, जंग के शोले भड़कने लगे, और तलवारों से तलवारें टकरा कर ख़ून बरसाने लगीं।

हकीम पूरे जोशो ख़रोश के साथ मसरूफ़े पैकार थे कि अचानक एक शख़्स ने उनके पैर पर तलवार से ऐसा वार किया कि उनका पैर

---

1. तबरी :– ज. 3 स. 491

घुटने से कटकर अलग हो गया। हकीम ने अपना वही कटा हुआ पैर उठाया और पूरी कुव्वत से उस शख़्स पर इस तरह फेंका कि वो लड़खड़ा कर ढेर हो गया। हकीम घुटनों के बल दौड़ते हुए उस मलऊन के पास पहुंचे और उसे इस तरह दबोंच कर उसके ऊपर बैठ गये कि जब तक उसका दम नहीं निकल गया, अलग न हुए।

हकीम बिन जबला ने बड़ी बेजिगरी से जंग की मगर उनका मुख़तसर दस्ता हज़ारों शमशीर बकफ़ हरीफ़ों का मुक़ाबला कहां तक करता। आख़िरकार सबके सब मौत के घाट उतर गये। हकीम के भाई रअल इब्ने जबला और उनके बेटे अशरफ़ भी इस जंग में काम आये। ये जंग तारीख़ में जंग जमले असग़र के नाम से मौसूम है जो 25 रबीउस्सानी 36 हिजरी में वाक़े हुई।

उस्मान बिन हुनैफ़ की रिहाई

हक़ीम बिन जबला और उनके साथियों को मौत के घाट उतरने के बाद तल्हा और जुबैर वग़ैरह ने चाहा कि उस्मान बिन हुनैफ़ का भी ख़ात्मा कर दें। उस्मान ने उनके इरादों और तेवरों को भांप लिया। उन्होंने कहा कि अगर तुम लोगों ने मुझे क़त्ल कर दिया तो याद रखो, मेरा भाई सहल इब्ने हुनैफ़ इस वक़्त मदीने का हाकिम है, वो मेरे ख़ून के बदले में तुम्हारे ख़ानदान भर को क़त्ल कर देगा। तल्हा वग़ैरह ने जब ये बात सुनी तो उन्हें अपने अज़ीज़ों, रिश्तेदारों और घर वालों की जानों के लिए ख़तरा महसूस हुआ और इसी ख़तरे के पेशे नज़र उन्होंने उस्मान को छोड़ दिया। और वो जान बचाकर बसरह से निकल खड़े हुए। और किसी न किसी तरह मक़ामे ज़ीक़ार में अमीरूल मोमिनीन हज़रत अली अलैहिस्सलाम की ख़िदमत में पहुंच गयें आपने जब उस्मान की हालते ज़ार देखी तो आबदीदह हो गये, और जब उस्मान ने बसरह के हालात और असहाबे जमल के मज़ालिम की दास्तान सुनाई तो आपका चेहरह ग़ैज़ो ग़ज़ब से सुर्ख़ हो गया।

बसरह में शाहेलाफ़ता की आमद

उस्मान बिन हुनैफ़ ने जो हालात अमीरूल मोमिनीन से बताए उन्हें सुनने के बाद बसरह की तरफ़ आपकी रवानगी नागुज़ीर हो गयी थी। चुनांचे आपने उसी वक़्त लशकर की सफ बन्दी की मैमना और मैयसरह को तरतीब दिया और बीस हजार का लशकर लेकर इस शान से रवाना हुए कि सत्तर बदरी सहाबा और चार सो बैअते रिज़वान में शरीक होने वाले असहाबे पैग़म्बर (स) आपके हमरकाब थे।

देखने वालों का बयान है कि जब ये सिपाह बसरह के क़रीब पहुंची तो सबसे पहले अन्सार का एक दसता नुमूदार हुआ जिसका परचम अबू अय्यूबे अन्सारी के हाथ में था। उसके बाद एक हज़ार सवारों का एक दसता सामने आया जिसके सिपहसलार ख़ज़ीमा बिन साबिते अन्सारी थे। फिर एक दस्ता और नज़र आया जिसका अलम अबू क़तावह इब्ने रबई उठाये हुए थे। फिर एक हज़ार बूढ़ों और जवानों का ज़मगठा दिखाई दिया जिनकी पेशानियों पर सजदों के निशान चमक रहे थे, चेहरे पर ख़शीयते इलाही की नक़ाबे पड़ी हुई थी, ऐसा मालूम होता था गोया जलाले किबरिया के सामने मौक़िफ़े हिसाब में ख़ड़े हैं उनका सिपहसालार सर पर अम्मामा बांधे, सफेद लिबास में मलबूस और घोड़े पर सवार बआवाज़े बलन्द कुर्आने मजीद की तिलावत करता जा रहा था, ये हज़रत अम्मारे यासिर थे। फ़िर एक अज़ीम दसता दिखाई दिया जिसका अलम क़ैस इब्ने सअद इब्ने उब्बादह के हाथ में था। फ़िर एक बड़ा दस्ता नज़र आया जिसका क़ाइद सियाह अम्मामा बांधे सफ़ेद लिबास पहने और खुश जमाल ऐसा कि निगाहें उसके चेहरे के गिर्द मसरूफ़े तवाफ़ थीं। फिर चन्द दस्ते गुज़रने के बाद एक अम्बोहे क़सीर नज़र आया जिसमें रंगारंग के फ़रैरे लहरा रहे थे और नैज़ों की वो कसरत थी कि एक दूसरे में गुथे जा रहे थे। और एक बलन्दो बाला अलम इम्तियाजी शान लिये था उसके पीछे जलालतो अज़मत के पहरों

में एक सवार दिखाई दिया, जिसके बाज़ू भरे हुए और निगाहें जमीन पर गड़ी हुई थीं और हैबत व वक़ार का ये आलम था कि कोई नज़र उठाकर देख न सकता था ये असदउल्लाहु लग़ालिब अली इब्ने अबी तालिब अलैहिस्सलाम थे जिनके दायें बायें रसूलल्लाह के नवासे इमामे हसन और इमामे हुसैन अलैहे मुस्सलाम थे। और आगे–आगे मोहम्मद बिन हनफ़िया फत्हों ज़फ़र का परचम बलन्द किये हुए आहिस्ता–आहिस्ता क़दम उठा रहे थे, पीछे जवानाने बनी हाशिम, असहाबे बद्र और अब्दुल्लाह इब्ने जाफ़र थे।

जब लशकर शुमाली बसरह के मक़ाम "ज़ादिया" पर पहुंचा तो शहे लाफ़ता घोड़े से उतर पड़े, आपने चार रकअत नमाज़ पढ़ी और मुनाजात के लिए सजदे में सर रख दिया। सर उठाया तो जमीन आंसुओं से तर थी और जबान पर अलफ़ाज़ थे कि "ऐ अर्शोफ़र्श के परवरदिगार! ये बसरह है इसकी भलाई से हमारा दामन भर, और इसके शर से अपनी पनाह में रखे।"

आपने इस मक़ाम से मुख़तलिफ़ क़ासिदो के ज़रिये चन्द ख़ूतूत, आयशा तल्हा और जुबैर के पास रवाना किये जिसमें उनहें हर्बो पैकार और ख़ाना जंगी से बाज़ रहने की हिदायत की थी, लेकिन उन लोगों की समझ में कुछ न आया, अपनी जिद पर अड़े रहे और समझाने बुझाने के बावजूद राहे रास्त पर न आये।

मैदाने जमल

फिर मक़ामे "ज़ाबिया" से आगे बढ़कर आप मैदाने जमल में उतर पड़े जहां तीस हज़ार का मुख़ालिफ़ लशकर ठाठें मार रहा था। चुनांचे आपकी फ़ौजों ने भी लशकरे ग़नीम के बिलमुक़ाबिल पड़ाव डाल दिया और जब तमाम फ़ौजी अपनी–अपनी जगह बैठ गये तो आपने अपनी सिपाह को ये हिदायत देते हुए फ़रमाया :–

"जब तक दुश्मन की तरफ़ से इबतिदा न हो तुममें से कोई आगे न बढ़े, और जब तक उस तरफ़ से हमला न हो तुममें से कोई वार न

करे। किसी भागने वाले का पीछा न किया जाय, किसी ज़ख्मी को क़त्ल न किया जाय, किसी के हाथ पैर न काटे जाय किसी की लाश की बेहुर्मती न की जाय, किसी साहेबे तौक़ीरकी परदहदरी न की जाय और किसी औरत को गज़न्द न पहुंचाया जाय।"

जब ये हिदायत दे चुके तो ग़ैर मुसल्लह हालत में घोड़े सवार हुए और सफ़ों से बाहर निकल कर जुबैर से ललकारा कि वो कहां है? अमीरूल मोमिनीन की अवाज़ सुनकर जुबैर का दम बाहर आ गया, पहले तो वो हिचकिचाया और कुछ सोचता रहा, फिर ज़ेरह बकतर और आलाते हर्बोज़र्ब से आरासता होकर सहमा हुआ हज़रत के क़रीब आया तो आपने फ़रमाया कि ऐ जुबैर! तुम लोगों का इरादा क्या है? आख़िर बसरह में ये उधम चौकड़ी मचा रखी है? जुबैर ने मुर्दा आवाज़ में जवाब दिया, "ख़ूने उस्मान के क़िसास" की ख़ातिर!

आपने फ़रमाया :–

"हैरत है कि तुम लोग मुझसे ख़ूने उस्मान का क़िसास चाहते हो, हालांकि तुम ही लोगों ने उन्हें क़त्ल किया। खुदा उन लोगों पर मोत को मुसल्लत करे जो उस्मान पर सख़्ती और तश्द्दुद को रवा रखे हुए थे।"[1]

फ़िर फ़रमाया :–

ऐ जुबैर! मैं तुम्हें खुदा का वास्ता देकर पूछता हूं कि क्या तुमने रसूलल्लाह (स) को ये फ़रमाते नहीं सुना कि :–

"तुम मुझसे जंग करोगे और मेरे हक़ में ज़ालिम होगे।"[2]

जुबैर ने कहा बेशक रसूलल्लाह (स) ने ये फ़रमाया था इतने में जुबैर की नज़र अम्मारे यासिर पर पड़ी जो अमीरूल मोमिनीन के लशकर में मौजूद थे और जिनके बारे में पैग़म्बर (स) ने इरशाद फ़रमाया था की, ऐ अम्मार! तुम्हे बाग़ी गिरोह क़त्ल करेगा। यहीं से जुबैर ने जंग

---

1. तबरी :– ज. 3 स. 520
2. तारीखे इस्लाम ज़हबी :– ज. 2 स. 151

से दस्तबर्दार होने का फ़ैसला किया और अमीरूल मोमिनीन से कहा कि अब मैं आप से जंग नहीं करूंगा। चुनांचे वो मुरझाए हुए चेहरे और थके हुए क़दमों के साथ हज़रत आयशा के पास आया और कहा कि इस जंग में न मेरी अक़्ल काम करती है न मेरी बसीरत मेरा साथ देती है लिहाज़ा मैं अली के ख़िलाफ़ जंग में हिस्सा नहीं लूंगा। आयशा ने कहा कैसी उखड़ी–उखड़ी बातें करते हो, ये आख़िर तुम्हें हो क्या गया है? ऐसा मालूम होता है कि तुम फ़रज़न्दाने अब्दुल मुत्तलिब की चमकती हुई तलारों लहराते हुए फ़रहरों और मौत को मंडलाते हुए देखकर खैफ़ज़दह हो गये हो?

आयशा ने जुबैर को लाख तसल्ली दी मगर वो नहीं माने और मैदान छोड़कर चल खड़े हुए और बसरह से सात फ़रसख़ के फ़ासले पर वादिए सबाअ में अमर इब्ने जरमूज़ के हाथों मारे गये।[1] इस तरह अमीरूल मोमिनीन के क़ौल की तस्दीक़ हो गयी कि "खुदा उन लोगों पर मौत को मुसल्लत कर दे जो उस्मान पर सख़्ती और तश्द्दुद को रवा रखे हुए थे।"

जुबैर के मरने के बाद आयशा के लशकर की कमान तन्हा तल्हा के हाथों में रह गयी।

जुबैर का ये इक़दाम बजाय खुद एक सुबूत है कि उन्होंने अपने साबिक़ा मौक़िफ़ को ग़लत समझा क्यों कि पहला–मौक़िफ़ सही हो तो दूसरा इक़दाम सही नहीं हो सकता। और अगर ये दूसरा इक़दाम दुरूस्त था तो पहला लामुहाला ग़लत होगा। ये नहीं हो सकता कि अली से जंग करना भी सही हो और उनके मुकाबले में जंग न करना भी सही हो। जुबैर के इस इक़दाम ने ये भी साबित कर दिया कि इनकी तरह आयशा और तल्हा का मौक़िफ़ भी ग़लत था।

---

1. तबरी :– ज. 5 स. 199, इब्ने असाकर :– ज. 5 स. 364, कामिल :– ज. 3 स. 94-95

अतमामे हुज्जत

जुबैर के बाद अमीरूल मोमिनीन ने चाहा कि तल्हा पर भी हुज्जत तमाम कर दी जाय, चुनांचे उनहें मुख़ातिब करके आपने फ़रमायाः–

"ऐ तल्हा! तुम रसूलल्लाह (स) की ज़ौजा को जंगो क़िताल के लिए लाये हो लेकिन अपनी बीवी को घर में छोड़ आये हो, क्या तुमने मेरी बैअत नहीं की थी।"[1]

जब तल्हा ने कोई जवाब न दिया और आपकी हुज्जत तमाम हो चुकी तो आप अपने लशकर में वापस आये और कुर्आन हाथों में लेकर फ़रमाया :–

तुममें कौन वो मुजाहिद है जो ये कुर्आन ले कर दुश्मानों की सफ़ में आये और उन्हें इस किताबे ख़ुदा पर अमल पैरा होने की दावत दे और इस मुसहफ़ का वास्ता देकर उन्हें इस फ़ितना अंगेज़ी से मना करे मगर ये समझ लें कि वो मौत के मुंह में जा रहा है।

कूफ़े का एक हक़शिनास नौजवान मुस्लिम इब्ने अब्दुल्लाहे मुजाशई खड़ा हुआ और उसने कहा, या अमीरूल मोमिनीन! इस ख़िदमत पर आप मुझे मामूर फ़रमायें। आपने दुआए ख़ैर दी और कुर्आन उसके हवाले किया। उसने कुर्आन को बोसा दिया और उसे हाथों पर बलन्द किये हुए दुशमनों की तरफ़ रवाना हुआ और उन्हें सहीफ़ए इलाही पर अमल करने की दावत दी नीज़ उसका वास्ता देकर फितना अंगेज़ी से मना किया मगर उसकी आवाज़ सदा बसहरा साबित हुई और किसी ने कोई तवज्जो नहीं दी। इतने में हज़रत आयशा के गुलाम ने आगे बढ़कर उस पर तलवार से हमला किया और उसके दोनों हाथ काट दिये। उसने कुर्आन को सीने से लगाया मगर दुश्मनों की तरफ़ से इतने तीर बरसाये गये कि कुर्आन छलनी–छलनी हो गया और उसके साथ ही मुस्लिम मुशाजई की शहादत भी वाक़े हो गयी। अमीरूल मोमिनीन ने जब ये इस्लाम सोज़ मन्ज़र देखा तो आपने फ़रमाया :–

---

1. असदुलग़ाबा :– ज. 2 स. 185

"अब इन लोगों से जंग के ज़वाज़ में काई शुब्ह नहीं।"[1]

मुस्लिम मुशाजई की इस मुजाहिदाना सरफ़रोशी के बाद हज़रत अम्मारे इब्ने यासिर दुश्मन की सफ़ों के क़रीब आये और उनसे तल्ख़ लहजे में मुखातिब होकर फ़रमाया :–

तुमने अपनी औरतों को घरों के अन्दर पर्दे में बिठा रखा है और सूलल्लाह की बीवी को नेज़ों, भालों और तलवारों के सामने ले आये हो हालांकि तुम्हें बख़ूबी मालूम है कि उस्मान के क़ातिल कौन थे और उनके क़त्ल की ज़िम्मेदारी किन लोगों पर आएद होती है।[2]

हज़रत अम्मार अभी इतना ही कह पाये थे कि तीरों की बौछारों ने उनहें पीछे हटने पर मजबूर कर दिया। पलटकर अमीरूल मोमिनीन की ख़िदमत में आये और कहा मौला! अब किस बात का इन्तिज़ार है। ये कमबख़्त जंग के अलावा कुछ सुनना ही नहीं चाहते।

अमीरूल मोमिनीन के सब्रोसुकूत और सुल्ह पसन्दाना रविश से दुश्मनों के हौसले ऐसे बढ़े थे कि उन्होंने आपके लशकर पर तीरों की बारिश कर दी जिससे मुतअद्दिद जांबाज़ सिपाहियों के सीने छलनी हो गये और ज़ख़्मों से निहाल होकर लोग ज़मीन पर गिरने लगे।

इसी असना में एक शख़्स को उठाकर हज़रत के सामने लाया गया जो तीरों की बदौलत जांबहक़ तस्लीम हो चुका था। फ़िर एक दूसरे शख़्स को लाया गया वो भी तीरों का शिकार होकर शहीद हो चुका था।

अमीरूल मोमिनीन ने ये कैफ़ियत देखी तो पेशानी पर बलपड़ आये आपने तेव्रियों को बदला और फरमाया :–

"इन्ना लिल्लहे व इन्ना इलैहे राजेऊन" – अब हर तरह हुज्जत तमाम हो चुकी सुलह के आसार ख़त्म हो चुके और दुशमन की तरफ़ से जंग की इब्तिदा हो चुकी।[3]

---

1. तबरी :– ज. 3 स. 522
2. याकूबी :– ज. 3 स. 117
3. कामिल :– ज. 3 स. 117

मोहम्मद इब्ने हनफ़िया का हमला

मुख़ालिफ़ीन की तरफ़ से पहले हो चुकी थी और अमीरूल मोमिनीन के लिए मैदान में उतरे बग़ैर कोई चारह न था चुनांचे आप अज़्मों इस्तिक़लाल के साथ उठ खड़े हुए। पैग़म्बरे इस्लाम की ज़ेरह ज़ेबेतन की सर पे सियाह अम्मामा बांधा, ज़ुल्फ़िक़ार हाथ में ली, मैंमने पर मालिके अशतर और मैसरे पर अम्मारे यासिर को मामूर किया और फ़रमाया :–

मेरे बेटे मोहम्मद को बुलाओ वो हाज़िर हुए तो रसूलल्लाह (स) का अलम "उक़ाब" उनके सिपुर्द करके फरमाया बेटा! आगे बढ़ो और लशकरे ग़नीम पर हमला करो। मोहम्मद ने सर झुकाया और अलम लेकर मैदान की तरफ़ बढ़े मगर तीर इस कसरत से आ रहे थे कि उनके लिए आगे बढ़ना दुश्वार हो गया और वो ठिठक कर खड़े हो गये। हज़रत ने जब ये देखा तो पुकारा कि मोहम्मद आगे क्यों नहीं बढ़ते? कहा बाबा! तीरों की बौछार में आगे बढ़ने का कोई रास्ता भी तो हो, बस तवक्कुफ़ फ़रमाइये कि तीरों का ज़ोर कुछ कम हो जाय। फ़रमाया नहीं तीरों और सेनानों के अन्दर घुसकर हमला करो। इब्ने हनफ़ीया कुछ और आगे बढ़े। मगर तीर अन्दाज़ों ने इस तरह घेरा डाला कि क़दम रोक लेना पड़े। ये देखकर अमीरूल मोमिनीन का चेहरा सुर्ख़ हो गया, पेशानी पर ग़ैज़ की शिकने उभर आयीं और आगे बढ़कर तलवार का दस्ता मोहम्मद की पुश्त पर मारा और अलम उनके हाथ से ले लिया। फ़िर आसतीनों को चढ़ा कर इस तरह हमला किया कि एक सिरे से दूसरे सिरे तक दुश्मनों की फ़ौज में तहलका मच गया। जिस सफ़ की तरफ़ मुड़े वही सफ़ खाली थी और जिधर का रूख़ किया लाशें तड़पने लगीं और सर घोड़ों के सुमों से टकरा कर लुढ़कते नज़र आने लगे। जब सफ़ों को तहोबाला करके फिर अपने मरकज़ की तरफ़ पलट कर

आये इब्ने हनफीया से फ़रमाया, देखों बेटा, ऐसे जंग की जाती है। ये कहकर फिर अलम उनके हवाले किया और कहा, अब आगे बढ़ो, इब्ने हनफ़िया दुश्मनों पर टूट पड़े। दुश्मन भी नैज़े हिलाते, बरछियां तौलते हुए सामने आये मगर शेर दिल बाप के बेटे ने परे के परे उलट दिये, मैदाने कारग़ार को लालहज़ार बना दिया और कुश्तों के ढेर लगा दिये।

तल्हा की हलाकत

इस हंगामए दरोगीर में मरवान बिन हकम, तल्हा की ताक में था किसी सूरत से इन्हें क़त्ल करके ख़ूने उस्मान का बदला चुका लिया जाय क्यों कि वो जानता था कि तल्हा और ज़ुबैर ही उसमान के क़ातिल हैं और पूरी ज़िम्मेदारी इन्हीं के सर आइद होती है। इस इन्तिक़ामी जज़बे के अलावा तल्हा को ठिकाने लगाने में मरवान का एक सियासी मक़सद भी था, और वो ये कि मरवान समझ रहा था कि जब तक ये जिन्दा है ख़िलाफ़त बनी उमय्या की तरफ़ मुनतक़िल नहीं हो सकती।

ज़ुबैर चूंकि मैदान छोड़ चुके थे इसलिए मरवान उनके बारे में मजबूर था, अलबत्ता उसने तल्हा को मौत के घाट उतारने का मौक़ा ढूंढ निकाला, और जंग की उस गर्म बाज़ारी में उसने अपने गुलाम की आड़ लेकर वो ज़हर आलूद तीर उन पर चलाया जो उनकी पिंडली को चीरता हुआ घोड़े के शिकम में दर आया। घोड़ा ज़ख़्मी होने के बाद भाग खड़ा हुआ और एक ख़राबे में जा रूका, जहां तल्हा ने दम तोड़ दिया इब्ने सअद का कहना है कि :–

"जमल के दिन मरवान बिन हकमने तल्हा जो आयशा के पहलू में खड़े थे तीर मारा जो उनकी पिंडली में लगा फिर मरवान ने कहा, खुदा की क़सम अब मुझे उस्मान के क़ातिल की तलाश नहीं रह गयी।"[1]

अल्लाम अब्दुल बर, याक़ूबी, इब्ने असाकर, इब्ने असीर और हजरे मक्की वगैरह का कहना है कि अकाबिर उलमा के दर्मियान इस अम्र में

1. तबक़ात :– ज. 3 स. 222

इख़्तिलाफ़ नहीं है कि मरवान ही ने जमल में तल्हा को क़त्ल किया था। हालांकि क़ातिल और मक़तूल दोनों एक ही जमाअत से ताल्लुक़ रखते थे। मदाइनी ने रवायत की है कि जब तल्हा जख़्मी होकर मैदान से फ़रार हुए तो किसी महफ़ूज़ जगह की तलाश में थे जहां वो पनाह ले सकें। चुनांचे हज़रत अली का जो भी सिपाही उधर से गुज़रता उससे वो कहते कि मैं तल्हा हूं, ख़ुदा के लिए मुझे कोई पनाह दे दे। फिर वो मर गये और रेगिस्तान की ज़मीन उन्हें निगल गयी।[1]

ऊँट के मुहाफ़िज़

हज़रत अली के मुक़ाबले में जंग से ज़ुबैर की दस्त बरदारी या तल्हा के क़त्ल हो जाने से असहाबे जमल के इरादों, हौसलों, और वलवलों में कोई फ़र्क़ न आया। वो लोग उसी हिम्मत, इस्तिक़लाल और जोशो ख़रोश के साथ जान देने के लिए मैदान में डटे रहे और जमें रहे। इसका सबब ये था कि उनकी नज़रों में जंग का मरकज़ी किरदार आयशा और सिर्फ़ आयशा थीं और उन्हीं से उनकी तमामतर अक़ीदतें वाबस्ता थीं। इन्तिहा ये है कि वो लोग हज़रत आयशा के ऊँट की मेंगनियां उठा कर उन्हें तोड़ते और सूंघ कर कहते कि ये हमारी मादरे गिरामी के ऊँट की मेंगनियां है इनसे मुश्को अम्बर की खुशबू आती है।[2]

हज़रत आयशा के लशकर का अलम खुद उनका मलऊन ऊँट था इसलिए असहाबे जमल की नज़रों में उसका वही मरतबा था जो "अलम" का होता है। वो लोग हमावक़्त उसके चारों तरफ़ हिसार बांधे खड़े रहते थे। और जिस तरह लशकर के अलम की हिफ़ाज़त की जाती है उसी तरह उस ऊँट की हिफ़ाज़त करते थे। यहां तक कि उसकी मेहार थामकर क़त्ल हो जाना अपने लिए सबबे इफ़तिख़ार और ज़रियए नजात समझते थे।

---

1. तबरी :– ज. 5 स. 204, याक़ूबी :– ज. 2 स. 158, मुसतदरक :– ज. 2 स. 271, इब्ने असाकर :– ज. 7 स. 84, इस्तेयाब :– स. 207-208, असाबा :– ज. 2 स. 222, अक़्दुल फरीद :– ज. 4 स. 321
2. तबरी :– ज. 5 स. 412, कामिल :– ज. 3 स. 97

मेहार थामने वालों के हाथ कटते, सीने छलनी होते और सर तनों से जुदा हो जाते मगर उनके अज़्मों सबात में कोई फ़र्क़ न आता। हज़रत आयशा मेहारकशों को ख़ून में नहाता देखतीं तो उनकी हौसला अफ़ज़ाई करतीं। इस हिम्मत अफ़ज़ाई के नतीजे में जब भी कोई मौत से हम किनार होता तो उसकी जगह फ़ौरन कोई दूसरा आख़ड़ा होता और मेहार अपने हाथों में ले लेता। उनमें ज़्यादातर बनी ज़ब्बह, बनी नाज़िया और कुरैश के लोग होते थे, जो अपनी बारी पर मेहार थामने का शरफ़ हासिल करते, रजज़िया अशआर पढ़ते और फ़ना के घाट उतर जाते।

मेहार थामने वालों के नाम से तारीख़ बख़ूबी वाक़िफ़ हैं उनमें क़अब इब्ने सौर, अब्दुर रहमान बिन उताब, और अमर बिन बतरी वग़ैरा के नाम ख़ास तौर से क़ाबिले ज़िक्र है।

क़अब इब्ने सौर लड़ाई में शरीक नहीं होना चाहते थे। इब्ने सअद ने रवायत की है कि जब तलहा, ज़ुबैर और आयशा वारिदे बसरह हुए तो ये एक काठरी में घुस गये और उसका दरवाज़ा चुनवा दिया सिर्फ़ एक सुराख़ बाक़ी रखा जिससे खाना पानी लेते थे। ये सिर्फ़ इसलिए था कि फ़ितने से किनाराकश रहे। हज़रत आयशा से कहा गया कि अगर क़अब आपके साथ हो गये तो पूरा क़बीलए अज़्द आपके साथ हो जाएगा। हज़रत आयशा एक खच्चर पर सवार होकर उसके पास गयीं। उसे आवज़ दी मगर उसने कोई जवाब न दिया। हज़रत आयशा ने कहा, क़अब क्या मैं तुम्हारी माँ नहीं हूं? अब क़अब गुफ़्तुगू करने पर मजबूर हो और उम्मुलमोमिनीन उसे मैदाने हर्बो ज़र्ब में खींच लायीं। इसकी वजह से बनी अज़्द भी आपके हमराही हमनहा हो गये। क़अब बरोज़े जमल, मैदाने जंग में कुर्आन गले में हेमाएल किए एक हाथ से और दूसरे हाथ से मेहार पकड़े खड़ा था कि एक नामालूम समत से सनसनाता हुआ तीर आया जिसने उसे वहीं पर ठंडा कर दिया।

इसके बाद ऊँट की मेहार अब्दुर रहमान बिन उताब ने मांगीं और ये रजज़ पढ़ा :–

मैं फ़रज़न्दे उताब हूं, मेरी तलवार की काट मुम्किन नहीं। इतने

में किसी सम्त से तलवार पड़ी और वो मौत के घाट उतर गया फ़िर कुरैश के सत्तर आदमियों ने उस मनहूस ऊँट की मेहार थामी और सबके सब क़त्ल कर दिये गये। तबरी का कहना है कि जो भी मेहार हाथ में लेता उसका हाथ काट लिया जाता। या मौत के घाट उतार दिया जाता।"[1]

फ़िर बनी नाज़िया आगे बढ़े और सबके सब क़त्ल कर दिये गये।

फ़िर अरब के मशहूर शमशीरज़न अमर इब्ने यसरी ने मेहार पकड़ी। अमीरूल मोमिनीन की तरफ़ से हिन्द इब्ने अमर उस पर हमला आवर हुए। उसने ऊँट की नकेल अपने बेटे के हाथ में थाम दी और हिन्द से मुक़ाबला होने लगा। आख़िरकार इब्ने असीर ग़ालिब रहा और हिन्द उसके हाथ से मारे गये। उसके बाद उसने अमीरूल मोमिनीन की फ़ौज़ के दो जवानों को और क़त्ल किया। आख़िरकार ये अम्मारे यासिर के हाथों क़त्ल हुआ। उसके बाद उसका बेटा और भाई भी मारा गया। तबरी का बयान है कि अमरे यासरी जंग के दौरान रजाज़िया अशआर पढ़–पढ़ के अपनी क़ौम की बराबर उभारता और बरअंगेख़्ता करता रहा यहां तक कि उसने पूरे क़बीलए बनी ज़ब्बा और बनी अज़्द को मरवा दिया। हज़रत आयशा का बयान है कि जब तक बनू जब्बा की आवाज़े न थमीं मेरे ऊँट की गरदन सीधी रही। मुख़तलिक मोवर्रेख़ीन का कहना है कि बनी ज़ब्बा और बनी अज़्द वालों ने ऊँट के चारों तरफ़ इन्सानी चहारदीवारी खड़ी कर दी थी। अमरे यसरी के बाद ऊँट की नकेल अमर इब्ने अशरफ के हाथों में आयी और हारिस से उनका मुक़ाबला हुआ। दोनों ज़ख़्मी होकर गिरे और अमर की तलवार ने हारिस का और हारिस की तलवार ने अमर का काम तमाम कर दिया। अमर बिन अशरफ़ के साथ उसके घर के तेरह अफ़राद भी मक़तूल हुए।[2]

ग़रज़ कि आयशा के ऊँट की मेहार दस्त ब दस्त गर्दिश करती रही और लोग मौत के घाट उतरते रहे। आख़िर में जब जुमुर इब्ने हारिस के हाथों में लेहार आयी तो घमासान की जंग शुरू हो चुकी थी।

---

1. तबरी :– ज. 4 स. 204
2. तबरी :– ज. 5 स. 211-212

अमर इब्ने अहलबे ज़ब्बी का वाक़िआ

बनी ज़ब्बा की पस्त किरदारी और दीन से बेख़बरी का अन्दाज़ा उस वाकिए से होता है जिसे मदाएनी ने बयान किया है। वो कहते हैं कि मैंने बसरह में एक शख़्स को देखा जिसका एक कान कटा हुआ था। मैंने सबब पूछा। उसने जवाब दिया, मैं जमल के मैदान में कुश्तों का मन्ज़र देख रहा था कि मैंने एक ज़ख़्मी को देखा जो कभी सर उठाता था कभी ज़मीन परदे मारता था। मैं क़रीब गया तो उसकी ज़बान पर दो शेर थे जिनका मफ़हूम ये था :–

(1) "हमारी माँ ने हमे मौत के गहरे पानी में ढ़केल दिया और हमने भी उस वक़्त तक पलटने का नाम नहीं लिया जब तक सेराब न हो गये।"

(2) हमने शोमिये क़िस्मत से बनी तमीम की इताअत कर ली हालांकि उनके मर्द गुलाम और उनकी औरतें कनीज़े हैं।

वो शख़्स आयशा, तल्हा और ज़ुबैर पर तन्ज़ कर रहा था। मैंने उससे कहा, अल्लाह को याद करो और कलमा पढ़ो ये शेर पढ़ने का वक़्त नहीं है। ये कहना था कि उसने मुझे गुस्से की नज़रों से देखा और एक मोटी सी गाली दी। और मुझसे कहा कि मैं कलमा पढ़ूं और आख़िरी वक़्त में डर जांऊ और बेसबरी का मुज़ाहिरा करूं। ये सुनकर मुझे बड़ी हैरत हुई और मज़ीद कुछ कहना सुनना मुनासिब न समझा और पलटने का इरादा किया। जब उसने पलटते हुए देखा तो कहने लगा, अच्छा ठहरो, तुम्हारी ख़ातिर इसे पढ़ लेता हूं लेकिन मुझे सिखा दो। मैं उसे कलमा पढ़ाने के लिए क़रीब हुआ तो उसने कहा और क़रीब आओ, मैं क़रीब गया तो उसने मेरा कान अपने दांतों में दबा लिया और उस वक़्त तक न छोड़ा जब तक कि उसे जड़ से काट न लिया। मैंने सोचा इस मरने वाले पर क्या हाथ उठाऊं, उसे लअन तअन करता हुआ चलने लगा तो उसने कहा एक बात और सुनते जाओ। मैंने कहा सुना

दो, कि दिल में कोई हसरत न रह जाए। उसने कहा जब अपनी माँ के पास जाना और वो तुमसे पूछे कि कान किसने काटा सो उससे कहना अमर इब्ने अहलबे ज़ब्बी ने। जो एक ऐसी औरत के चक्कर में आ गया था जो उम्मुल मोमिनीन बनना चाहती थी।

घमसान की जंग

मारकए कारज़ार पूरी तरह गर्म हो चुका था, मैदाने जमल में हर तरफ़ खून की बारिश हो रही थी। हज़रत अली के जांबाज़ मुजाहिदीन सफों पे सफें उलट रहे थे, और मुख़ालिफ़ीन बदहवासी के आलम में इधर से उधर भाग रहे थे। जब हज़रत आयशा ने ये ख़ूनी मन्ज़र देखा तो उन पर भी मायूसी के दौरे पड़ने लगे। चुनांचे उन्होंने कुछ कंकरिया तलब कीं और हौदज से अमीरूल मोमिनीन के लशकर की तरफ़ ये कहकर फेंकी कि "इनके चेहरे सियाह हो जायें" ये चरबा था उस मोजिज़ाना अमल का जो जंगे हुनैन में रसूलल्लाह (स) से जुहूर पिज़ीर हुआ था। मगर वहां पैग़म्बर का अमल कुफ़्फ़ार के मुक़ाबले में वहीए इलाही के मातहत था और यहां मुक़ाबले में अमीरूल मोमिनीन, असहाबे बद्र मुम्ताज़ सहाबा और ज़ाते इलाही पर भरोसा रखने वाले सच्चे मुसलमान थे। आयशा के इस अमल का क्या असर हो सकता था? किसी ने तवज्जो भी न की, बल्कि बिगड़े दिल मुसलमान ने मामूली तग़य्युर के साथ ये आयत पढ़ी :–

"तुमने ये कंकरिया नहीं फेंकी बल्कि अल्लाह ने फेंकी हैं।"[1]

बहरहाल अमीरूल मोमिनीन ने मालिके अशतर को मैमने पर और हाशिम बिन अलबा को मैसरे पर हमला आवर होने का हुक्म दिया, और ये दोनों अपने दस्तों के साथ इतनी शिद्दत से हमला आवर हुए कि मैमने के क़दम उखड़ गये और हज़रत आयशा का मैसरा अपनी जगह से हटकर क़ल्बे लशकर से जा मिला। मैमने का सरदार हेलाल इब्ने वाक़ीअ मालिके अशतर की तलवार से क़त्ल हुआ तो लशकरी भाग–भाग

---

1. शराह इब्ने आबिल हदीद मोतज़ेली :– ज. 1 स. 85

कर आयशा के इर्द गिर्द पनाह लेने पर मजबूर हो गये। चुनांचे ऊँट के चारों तरफ़ लड़ाई शुरू हो गयी। बनी नज़्द और बनी नाज़िया ऊँट के गिर्द घेरा डाले उसकी हिफ़ाज़त कर रहे थे और तीरों और तलवारों के वार अपने सीनों पर रोक रहे थे, बक़ौले जमुख़शरी "सरों पर तलवारों को पड़ने की ऐसी आवज़े आती थीं जैसे कपड़े धोने पर चोट पड़ने की आवाज़ आती है।"[1]

अमीरूल मोमिनीन हज़रत अली इब्ने अबी तालिब अलैहिस सलाम ने जब ये देखा कि जंग अभी फ़ैसलाकुन मरहले में दाख़िल नहीं हुई तो आपने बज़ाते ख़ुद मैदान में उतरने का फैसला किया और मोहम्मदे हनफ़िया, इमामे हसन और इमामे हुसैन अलैहे मुस्सलाम के हमराह अन्सारों मुहाजिरीन का एक दस्ता लेकर उठ खड़े हुए। पहले तो आपने एक नज़र में मैदाने कारज़ार का जाएज़ा लिया। फ़िर मोहम्मद से कहा, बढ़ो और सफ़ों को चीरते हुए उस मक़ाम तक पहुंचों जहां आयशा का ऊँट खड़ा है। मोहम्मद आगे बढ़े ही थे कि चारों तरफ़ से तीरों की बरसात होने लगी। ये देखकर हज़रत ख़ुद आगे बढ़े और शेर की तरह दुशमन की सफ़ों पर टूट पड़े। जुल्फ़िक़ार की बिजलियां कौदंने लगीं। और लाशों के अम्बार लगने लगे। मोतज़ेली का कहना है "आपने इस तरह हमला किया जिस तरह भूंखा शेर भेड़ बकरियों पर हमला करता है।" जब अफ़वाजे मुख़ालिफ़ की तमाम सफ़े दरहमों बरहम हो गयीं तो आप फ़िर अपने मरक़ज़ की तरफ़ पलट आये, चन्द लम्हें तवक्कुफ़ किया और फिर दोबारह हमले के इरादे से उठ खड़े हुए। मोहम्मद बिन हनफ़िया अम्मारे यासिर, अदि इबने हातिम वग़ैरह ने अर्ज़ किया कि या अमीरूल मोमिनीन! अब आप ठहरिये हम मैदान में जाते हैं मगर आपने कोई जवाब न दिया चेहरा ग़ैजो–ग़ज़ब से तिलमला रहा था, आंखों से शरारे निकल रहे थे और सीने से शेर के गुर्राने की सी अवाज़े आ रहीं थी। अब किसी में हिम्मत थी जो बिफ़रे हुए शेर से कुछ कहता, लिहाज़ा सब खामोश रहें इमामे हसन और इमामे हुसैन अलैहे मुस्सलाम ने इजाज़त चाही, आपने फ़रमाया अभी नहीं, और फ़िर दुश्मनों की तरफ़

---

1. फारूक़ :– ज. 1 स. 35

झपट पड़े और सफ़ों के अन्दर घुसकर ऐसी तलवार चलाई कि मैदान लाशों से पट गया और लड़ते–लड़ते आपकी तलवार भी टेढ़ी हो गयी। फिर आप अपनी सफ़ की तरफ़ आये ओर घोड़े से उतरकर तलवार सीधी की। जब आपके आवानों अन्सार ने देखा कि फ़िर आपका इरादा मैदान की तरफ़ जाने का है तो उन लोगों ने क़सम दी और मजीद हमला आवर होने से ये कहकर मना किया कि अगर आप पर आंच आ गयी तो दीन पर बन आएगी और इस्लाम का शीराज़ह बिख़र जाएगा। अमीरूल मोमिनीन ने उन लोगों की बात मान ली।

साहिबे जुल्फ़िक़ार के दो ही पुरजोर हमलों से असहाबे जमल के हौंसले पस्त हो चुके थे और उन पर शिकस्त के आसार जारी हो चुके थे मगर मैदान छोड़ना उनके लिए उस वक़्त नामुम्किन था जब तक आयशा का ऊँट उनके दर्मियान खड़ा था। उसकी भी कैफ़ियत ऐसी थी कि उसके झोल और उम्मुल मोमिनीन के कजावे में तीर इस तरह पेवस्त थे जिस तरह साही के बदन में काँटे होते हैं। और वो इस ख़ूनी हंगामें कीताब ना लाकर इस तरह घूम रहा था जैसे चक्की घूमती है।

अमीरूल मोमिनीन ने सोचा जब तक ऊँट मैदान में खड़ा है जंग कर ख़ात्मा नहीं हो सकता। क्योंकि अहले बसरह किसी को ऊँट के पास फ़टकने नहीं देते थे। चुनांचे हज़रत ने उसे मैदान से हटानें का तहय्या किया और क़बीलए नख़अ और हमदान के जवां मर्दों को लेकर आगे बढ़े। जुल्फ़िक़ार चमकीं, परे टूटे और आप अपने हमराहियों समेत ऊँट के पास पहुंच गये। फिर एक शख़्स (बज़ीर इब्ने दलजए नजई) को हुक्म दिया कि ऊँट की कोंचें काट दो। उसने ऊँट की पिछली टांगों पर तलवार लगायी। एक मुहीब आवाज़ फ़ज़ा में गूंजी और ऊँट पहलू के बल ज़मीन पर ढेर हो गया। ऊँट का गिरना था कि मेहार कशों के सारे हौसले ख़ाक़ में मिल गये। एक आम भगदड़ मच गयी और आयशा के सिपाही इस तरह भागे जैसे तेज आंधी में टिड्डियां भाग लीं हैं। किसी को किसी का होश न था। लाशों और कराहते हुए जख़मियों को कुचलते रौंदते लोग जिधर समझ में आ रहा था मुंह उठाये भाग रहे थे। मुख़्तसर ये कि सारा मैदान खाली हो गया।

फ़िर शाहे लाफ़्ता के हुक्म पर मोहम्मद बिन अबीबकर और अम्मारे यासिर ने ऊँट के तसमें काटे और हौदज को जमीन पर उतार कर रख दिया। उसे बाद आपने फरमाया कि इस ऊँट को मारकर जला दिया जाये और इसकी राख हवा में मुनतशिर कर दी जाये। चुनांचे वो ऊँट मारकर जलाया गया और उसकी राख हवा में उड़ा दी गयी तो आपने फरमाया :–

"इस चौपये पर खुदा की लानत ये बनी इस्राईल के गोसाले से कितना मुशाबह है।"[1]

अमीरूल मोमिनीन (अ) का रहमो करम

फिर अमीरूल मोमिनीन ने मोहम्मद इब्ने अबीबकर से कहा कि आयशा के लिए एक ख़ेमानस्ब करो और उनसे उनकी ख़ैरियत मालूम करो कि उन्हें कोई गज़न्द तो नहीं पहुंचा। मोहम्मद ने ख़ेमा नस्ब किया फ़िर हौदज़ के पास आंये और पर्दे में मुह डाला। आयशा ने कहा तुम कौन हो? मोहम्मद ने कहा, आपका सबसे ज़्यादा नापसन्दीदह रिश्तेदार। आयशा ने पूछा, ख़ुसअमिया के फ़रजन्द? कहा हाँ। आयशा ने कहा कि उस मअबूद का शुक्र है जिसने तुम्हें महफ़ूज़ रखा।

मसऊदी ने मुरव्वेजुज़ ज़हब में तहरीर किया है कि मोहम्मद ने कहा आपका सबसे ज्यादा नापसन्दीदह रिशतेदार और आपका नापसंदीदह भाई हूं। अमीरूल मोमिनीन ने पूछा है आपको कोई गज़न्द तो नहीं पहुंचा?

आयशा ने कहा सिर्फ़ एक तीर लगा था और कोई तक़लीफ़ नहीं है।"

1. शरह इबने आबिल :-- ज. 1 स. 89

फ़िर अमीरूल मोमिनीन खुद तशरीफ़ लाये आपने लकड़ी से हौदज को एक टहोका दिया और फरमाया :–

क्यों हुमैरा! क्या रसूलल्लाह (स) ने तुम्हें यही हुक्म दिया था? क्या तुम्हें इस अम्र की ताकीद नहीं की गयी थी कि घर में बैठी रहना? खुदा की क़सम उन लोगों ने तुम्हारे साथ इन्साफ़ नहीं किया जिन्हों ने आपनी बीवियों की तो हिफाज़त की और तुम्हें मैदान में ले आये।

हज़रत आयशा ने कहा :– अब आप फ़त्हेयाब हो चुके हैं मुझ पर रहम फ़रमाइये।[1]

लड़ाई ख़त्म हो जाने के बाद अम्मारे यासिर ने हज़रत आयशा से कहा, उम्मुल मोमिनीन! आपका तर्ज़े अमल पैग़म्बर (स) के तर्ज़ेअमल से कितना अलग है। आयशा ने कहा, बखुदा मैं हमेशा तुम्हें हक़गो समझती रही। उस पर अम्मार ने कहा, खुदा का शुक्र है जिसने आपकी ज़बान से ये बात कह ला दी।[2]

तारीख़े कामिल जि० नं. 5 स० 130 पर ये रवायत भी है कि अम्मारे यासिर ने हज़रत आयशा को जब उम्मुल मोमिनीन कहकर मुख़ातिब किया तो आपने फ़रमाया मैं तुम्हारी माँ नहीं हूं। उस पर अय्यार ने कहा, आप माँ तो हैं, ख्वाह मानें या न मानें।

आम मआफ़ी

जंग के ख़ात्में के बाद हज़रत अली अलैहिस्सलाम के मुनादी ने एलान किया कि किसी ज़ख़्मी को न मारा जाये, किसी भागते हुए का पीछा न किया जाये, जो हथियार डाल दे वो अमान में है और जो घर का दरवाज़ा बन्द कर ले उसे भी अमान हासिल है।

कन्जुल आमाल में इसके बाद ये इज़ाफ़ा मिलता है कि अमीरूल मोमिनीन ने फरमया :–

---

1. तबरी :– ज. 5 स. 204
2. अक़दुल फरीद :– ज. 4 स. 328 , तारीखे याकूबी वग़ैरह

कोई शर्मगाह हलाल न समझी जायें, कोई माल मुबाह न तसव्वुर किया जाये। मैदाने जंग में जो ज़ुरूफ़ हाथ लगें उन पर क़ब्ज़ा कर लो बाक़ी सब कुछ मक़्तूलीन के वोरसा का है। जो गुलाम लशकर से निकल गया हो उसे तलाश न करो। जितने हथियार हाथ आएं वो सब तुम्हारे हैं उम्मे वलद पर तुम्हारा कोई दसतरस नहीं है। मीरास उसी तरह तक़सीम होगी जिस तरह ख़ुदा का हुक्म है जिस औरत का शौहर इस जंग में मारा गया है उसे लाज़िम है कि चार माह दस दिन इद्दह में रहें।

इस मौक़े पर कुछ इन्तिहा पसन्दों ने नुक़्ताचीनी की और कहाः—

आप उन्हें क़त्ल करना हमारे लिए जाइज़ क़रार देते हैं लेकिन उनकी औरतों को हमारे ऊपर मुबाह क्यों नहीं करते? अमीरूल मोमिनीन ने फ़रमाया, अहले क़िब्ला के साथ ऐसा ही बरताव किया जाना चाहिए।

अमीरूल मोमिनीन के इस जवाब पर कुछ लोग नाराज़ हो गये और हंगामा आराई पर उतर आये तो आपने फ़रमाया :—

अच्छा अगर तुम नहीं मानते तो सबसे पहले आयशा के लिए कुंर्आ—अंदाजी करो क्यों कि इस झगड़े की बुनियाद और जड़ वही है। जिसके नाम कुंर्आ निकले आयशा को उसके हवाले कर दों

ये सुनना था कि सबके होश उड़ गये। सबने माज़रत की और कहा हम ख़ुदा से तौबा और इस्तिग़फ़ार करते हैं।[1]

हज़रत आयशा की वापसी

अमीरूल मोमिनीन हज़रत अली अलैहिस्सलाम ने इब्ने अब्बास को इस अम्र पर मामूर फ़रमाया कि वो हज़रत आयशा से कहें कि अब उनका यहां न कोई काम है और न मदीने से ज़्यादा अर्से तक बाहर रहना मुनासिब है लिहाज़ा वो वापस जाने की तैय्यारियां मुकम्मल करें।

---

1. कन्जुल आमाल :— ज. 8 स. 215-217

अब्दुल्लाह इब्ने अब्बास का बयान है कि मैं हज़रज अली का पैग़ाम लेकर आयशा के पास गया, मुलाकात की इजाज़त चाही उन्होंने इनकार किया तो मैं घर के अन्दर घुस गया और एक बोरिये का टुकड़ा लेकर उस पर बैठ गया। इस पर आयशा ने कहा तुम कैसे आदमी हो कि बग़ैर इजाज़त अन्दर चले आए और बग़ैर पूछे बैठ गये। एक रवायत में है कि आयशा ने कहा :–

तुमने सुन्नते रसूल (स) की दोहरी मुख़ालिफ़त की, अव्वल ये कि बग़ैर इजाज़त हमारे घर में दाख़िल हुए और दूसरे ये कि बग़ैर इजाज़त हमारे फ़र्श पर बैठ गये।

इब्ने अब्बास ने कहा खुदा की कस्म ये सुन्नत की तालीम हमने आपको दी हैं ये आपका घर हर्गिज़ नहीं है, आपका घर तो वो है जिसमें अल्लाह और रसूल ने आपको बैठे रहने का हुक्म दिया है। मगर आपने हुक्म की कोई पाबन्दी नहीं की। इस वक़्त मैं अमीरूल मोमिनीन का पैग़ाम लेकर आया हूं कि आप मदीने जाने की तैय्यारियां कीजिए।

आयशा ने कहा, खुदा रहम करे अमीरूल मोमिनीन पर वो उमर इब्ने ख़त्ताब थे। उस पर इबने अब्बास ने कहा होंगे! ये अमीरूल मोमिनीन, हज़रत अली इबने अबी तालिब हैं।

आयशा ने कहा, मैं नहीं मानती।

इब्ने अब्बास ने कहा, कब तक नहीं मानेंगी, आपका हाल तो ये है कि आप न कोई हुक्म देती हैं न मना करतीं हैं। "न लेती हैं न देती हैं।" इस पर आयशा रोने लगीं और बोली मैं ख़ुद ही बहुत जल्द ये शहर छोड़ना चाहती हूं जिस शहर में तुम लोग रहो उससे ज्यादा क़ाबिले नफ़रत कोई शहर मेरे लिए नहीं है।

अल्लाम इब्ने अबदर्बा का कहना है कि आयशा की वापसी पर हज़रत अली (अ) ने बड़ा एहतिमाम किया, तमाम ज़रूरियात की चीज़ें उनके साथ कीं और चालीस या सत्तर औरतें भी उनके साथ कीं जो मदीने तक उनके साथ गयीं।

तबरी लिखते हैं कि हज़रत अली ने उन्हें जब मदीने रवाना किया

तो तमाम ज़रूरियात के साथ औरतों की एक जमाअत भी साथ और बारह हज़ार दिरहम भी बैतुलमाल से मरहमत फ़रमाये।

मसऊदी का बयान है कि हज़रत अली ने आयशा के भाई अब्दुर रहमान बिन अबीबक्र और बीस औरतों व उन्तीस मर्दो को आयशा के साथ मदीने रवाना किया जो क़बीलए अब्दुल क़ैस और क़बीलए हमदान से थे।

जंगे जमल के नताइज

जंगे जमल माहे जमादी उस्सानिया 36 हिजरी नवम्बर 656 ईस्वी में वाक़े हुई। मुवर्रेख़ीन ने इस जंग के हौलनाक व इबरतनाक नताइज पर भी रौशनी डाली हैं मक़तूलीन के बारे में मुख़तलिफ़ रवायते हैं। याकूबी का बयान है कि मजमूई तौर पर इस जंग में तीस हज़ार से ज़्यादा अफ़राद क़त्ल हुए।[1]

अल्लामा इब्ने अबदरबान ने अक़दुल फ़रीद में तहरीर फ़रमाया है कि हज़रत आयशा के बीस हज़ार और हज़रत अली की तरफ़ से पांच सौ अफ़राद क़त्ल हुए।[2]

इब्ने आसम का कहना है कि हज़रत अली की फ़ौज के एक हज़ार सात सौ और आयशा की फ़ौज के नौ हज़ार आदमी मक़तूल हुए और तबरी की बाज रवायतों से से ये तादाद छः हजार मालूम होती है। मगर मुख़तलिफ़ मुसददिक़ा रवायत का खुलासा ये है कि उम्मुल मोमिनीन आयशा के तीस हजार के लशकर में से बीस हजार और हज़रत अली की फ़ौज में एक हज़ार सत्तर अफ़राद मक़तूल हुए।

तबरी वग़ैरह ने असहाबे जमल से रवायत की कि उनका कहना है :–

जंग के हम लोगो ने दौरान तीर चलाये और जब वो ख़त्म हो गये

---

1. तारीखे याकूबी हालाते जमल
2. अक़दुल फरीद :– ज. 4 स. 226

तो नैज़ा बाजी की यहां तक कि वो हमारे और अलवी लशकरियों के सीनों में इस तरह गुथ गये कि उन नौजों पर से लशकर गुजर सकता था।[1]

अबदरबा ने बाज़ लोगों का बयान नक़्ल किया है कि जब मैं धोबियों के मोहल्ले से गुजरा और कपड़ों को तख़्तों पर पटखने की आवाज़ सुनी तो मुझे जंगे जमल की वो तलवारें याद आ गयीं जो लोगों के सरों पर पड़ रहीं थी।[2]

इस जंग में कितने हाथ कटे, कितनी आंखें फूटीं इसका तसव्वुर नहीं किया जा सकता।

बहरहाल इस जंग का ज़ाहिरी सिलसिला आयशा की शिकस्त और हज़रत अली की फ़त्ह पर ख़त्म हुआ लेकिन अगर ग़ौरो फ़िक्र की निगाहों से देखा जाय तो ये जंगी तसलसुल मुद्दतों कायम रहा और इस जंग से जंगे सिफ्फ़ीन और जंगे सिफ्फ़ीन से जंगे नहरवान ने जन्म लिया और नहरवान के बाद क़त्लों ग़ारतगरी का यही सिलसिला "बनी अब्बास" के दौर तक कायम रहा।

अगर उम्मुल मोमिनीन आयशा और तल्हा व ज़ुबैर मैदाने जमल में न उतरते तो मुआविया हज़रत अली के मुक़ाबले में फ़ौजकशी की जसारत न करता। उसे ये बहाना मिल गया कि वो भी "इन्तिक़ामे ख़ूने उस्मान" पर अपनी ख़िलाफ़त को मूरूसी बनाने के लिए हज़रत अली से जंग छेड़ दे जिसका रास्ता हज़रत आयशा की निस्वानी और नाक़िस हिकमते अमली ने हमवार किया था। मुआविया का ये ख़्याल था कि उम्मुलमोमिनीन क़बीलए बनी तैम की फ़र्द होकर क़िसासे ख़ूने उस्मान के लिए हज़रत अली के मुक़ाबले में खड़ी हो सकती है तो वो क्यों नहीं खड़े हो सकते। जब्कि वो उस्मान के हमक़बीला और अज़ीज़ भी हैं। यही वो मजबूत सियासी हीला था जिसे मुआविया ने जंग के जवाज़ में पेश किया। और क़िसासे ख़ूने उस्मान के नाम पर लोगों को भड़काकर

---

1. तबरी :– ज. 5 स. 218
2. अक़्दुल फरीद :– ज. 4 स. 320

जंगे सिफ्फ़ीन बरपा की। उन्होंने पहले अपने अलाक़ाई इक़तिदार का तहफ्फुज़ किया फिर ख़लीफ़तुल मुस्लिमीन बन बैठे।

जंगे जमल और जंगे सिफ्फ़ान ही के नतीजे में "ख़वारिज फ़िर्क़े" का वुजूद अमल में आया जिसने नहरवान में हज़रत अली परख़ुरूज किया और आगे चलकर यही ख़वारिज जुम्ला सलातीने मुम्लिकत के लिए दर्दे सर बने। हर हुकूमत से बरसरे पैकार हुए। क़त्लो ग़ारतगरी उनका शेवह था, राहजनी और डकैती को वाजिब समझते थे और जाबजा छापे मारकर अम्नो अमान को दरहमो बरहम किया करते थें

ख़वारिज अपने अलावा तमाम मुसलमानों को क़ाफिर समझते थे। उनका नज़रिया था कि हज़रत आयशा, तल्हा और ज़ुबैर हज़रत अली से लड़ने के बाद काफ़िर हो गये, अली उस दिन हक़ पर थे लेकिन तहकीम के बाद (मआजल्लाह) वो भी हक़ पर नहीं रहे।[1]

इन जंगों का फ़ितरी और लाज़मी नतीजा ये भी होना था कि मुसलमान मुख़तलिफ फ़िक्रो में तक़सीम हो जायें। चुनांचे यही हुआ कि कुछ अलवी हो गये, कुछ उस्मानी और कुछ खवारिज नीज़ इसी किस्म के और फ़िर्क़े जो एक दूसरे के दुशमन हो गये और एतिकादी जंग शुरू हो गयी।

जंगे जमल की रौशनी में हज़रत अली का मिसाली किरदार

इस जंग में हज़रत अली अलैहिस्सलाम ने शुरू से आख़िर तक जिस किरदार का मुज़ाहिरा किया वो अम्न पसन्दी, सुल्ह जूई, और करीमुन नफ़सी की जिन्दा मिसाल है। हालांकि आपको आयशा के

---

1. मुल्लो नहल शहरिस्वानी :– ज. 1 स. 158

मोहलिक और ख़तरनाक फितने को दबाने के लिए एक खूंरेज जंग का उस वक्त सामना करना पड़ा जब हालात आपके लिए कतई साज़गार नहीं थे इसके बावजूद आपने उस वक़्त तक हाथ नहीं उठाया और नहीं अपने हमनवाओं में से किसी को उठाने दिया तब तक कि फ़रीक़े मुख़ालिफ़ की तरफ़ से बाक़ाएदा जंग की इबतिदा नहीं हो गयी।

अमीरूल मोमिनीन के वारिदे बसरा होने से क़ब्ल ही मुख़ालिफ़ीन आपके सैंकड़ों दोस्तों और हमनावाओं को क़त्ल कर दिया था। वहां के गवर्नर उस्मान बिन हुनैफ़ पर जब खून मारकर अहदशिकनी के मुर्तकिब हो चुके थे। बैतुलमाल पर क़ब्ज़ा करलिया था और क़त्लो ग़ारतग़री व दहशतगर्दी के ज़रिये हर तरफ़ ख़ौफ़ो हिरास पैदा कर दिया था। इन नारवा बातोंसे हज़रत अली के लिए जंग का जवाज़ पैदा हो चुका था मगर इसके बावजूद आपकी कोशिश यही रही कि जंग के शोले भड़कने न पाये। और बाहमी गुफ़्तुगू के ज़रिए आयशा की इस ग़लतफ़हमी की इसलाह हो जाए। चुनांचे आपने आयशा, तल्हा और जुबैर को इन्तिहाई नर्म लहजे में समझाया और उन्हें जंग के हौलनाक नताइज से आगाह किया। मुस्लिम मजाशेई के हाथों कुर्आन भेज कर उन्हें कुर्आनी अहकाम पर अमल पैरा होने की तरग़ीब दी। और जब ये तमाम चीज़े बेअसर और तमाम कोशिशें राइगा हो गयीं और जवाब तीरों सेनान की सूरत में दिया जाने लगा तो बहुत ही मजबूर होकर आपने जंग की इजाज़त दी और सफों के मुक़ाबले में सफ़ें जमा कर इस तरह लड़े कि दुनिया पर साबित कर दिया कि जंग से बचने की ये तमाम कोशिशें बुज़दिली, कामचोरी और ख़ौफ़ोहिरास की बिना पर नहीं था बल्कि इन्तिहाइ, यकजहती और अम्न को बरक़रार रखने नीज़ सुल्हो आशती की फ़जा पैदा करने के लिए थी।

अमीरूल मोमिनीन ने अपने फ़ौजियों को जिन बातों पर कारबन्द रहने का हुकम दिया था वो हस्बे जैल हैं।

(1) जंग में पहल न की जाए (2) किसी जख़्मी पर हाथ न उठाया जाए, और किसी ने क़दम नहीं बढ़या। और जब मैदान में ख़ून की मूसलाधार बारिश होने लगी तो किसी ज़ख़्मी पर हाथ नहीं डाला

और फ़ौजे मुख़ालिफ शिकस्त खाकर भाग खड़ी हुई तो किसी ने किसी का ताक्कुब नहीं किया। और न ही उसके छोड़े हुए मालों अस्बाब पर नज़र देखा। दीनवरी का कहना है कि :–

मैदाने जंग में सोना चांदी और दीगर साज़ो सामान पड़ा हुआ देखते थे मगर उन्हें छूने वाला कोई नहीं था, अलावा फ़रीके मुख़ालिफ़ के हथियारों और सवारों के जिन्हें वो जंग के मौक़े पर काम में ला सकते थे।[1]

दुनिया की जंगों का दस्तूर है कि जंग का फ़ातेह फ़त्हेयाबी व कामरानी के नशे मेंसरशार होकर हरीफ़ अफ़सरों को बगावात के जुर्म में गिरफ़्तार कर लेता था मौत के घाट उतार देता है। मगर अमीरूल मोमिनीन ने इन्तिक़ामी कार्रवाई से बालातर होकर अहले बसरह में से जिन्होंने उस जंग में नुमाया किरदार अदा किया था किसी से कोई बाज़ पुर्स नहीं यहां तक कि अब्दुल्लाह बिन आमिर जैसे ग़ारतगराने अम्न को माफ़ कर दिया और आयशा को जिन्होंने आपकी मुख़ालिफ़त में कोई दक़ीका उठा नहीं रखा था उनके शायानेशान हिफ़ाज़ती इन्तिज़ामात के साथ मदीना भेजा। बैतुलमाल को मरकज़ में मुन्तिक़ल करने के बजाय अपने तशकरियों पर तक़सीम करके ये साबित कर दिया जंग का मक़सद मालों दौलत की फ़राहमी नहीं है।

जंगे जमल की रौशनी में हज़रत आयशा

हज़रत आयशा जो आम मुसलमानों के नज़दीक एक आलिमा और मुहद्दिसा का दर्जा रखती हैं, इस अम्र से बख़ूबी वाक़िफ़ थीं कि ख़ूने उस्मान के क़िसास का उन्हें काई हक़ नहीं है दर हक़ीक़त ये हक़ हुकूमते वक़्त का है या फ़िर मक़तूल के वारिसों को ये हक़ हासिल है।

---

1. अख़्बारूत तौल :– स. 151

हज़रत आयशा जो न मुसलमानों के इक़तिदार की मालिक थीं न उस्मान के वारिसों में शामिल थीं, इसके बावजूद हुकूमते वक़्त से टकराने के लिए मैदान में उतर आईं और उन्होंने मुसलमानों की एक अज़ीम जमीअत को मौत के मुंह में झोंक दिया हालांकि परवर दिगारे आलम ने उन्हें अपने घर की चहारदीवारी में रहने का हुकम दिया था जैसा कि कुर्आन में है :–

"ऐ रसूल की बीवियों! अपने घरों में बैठी रहो, जमानाए जाहिलियत की तरह बन ठन के न निकलो।"

चुनांचे उम्मुल मोमिनीन ज़ैनब बिन्ते हजश और उम्मुल मोमिनीन सौदह ने इस कुर्आनी हुक्म के एहितराम में मदीने से बाहर निकलना गवाहर न किया और ज़िन्दगी भर घर की चहारदीवारी में कैद रहीं। और ये औरतों का शेवह भी नहीं है कि वो घर का गोशा छोड़कर मैदाने कारज़ार में फांद पड़ें और क़त्लों ग़ारतगरी का बाज़ार गर्म करें। खुद आयशा का बयान है कि मैंने पैग़म्बर से जिहाद की इजाज़त चाही तो उन्होंने फ़रमाया कि औरतों का जिहाद हज है।[1]

और आयशा का यही क़ौल भी है कि औरतों के हाथ में चरखा उस नेज़े से कहीं बेहतर है जो राहे खुदा में लड़ने वाले मुजाहिद के हाथ में होती है।[2]

लेकिन लुत्फ़ की बात तो ये है कि इन तमाम बातों से मुत्तिलाअ होने के बावजूद उम्मुल मोमिनीन आयशा मुसलमानों की एक बड़ी जमीअत के साथ मक्के से वारिदे बसरह हुईं और लशकर की क़ियादत करते हुए मैदाने जंग में कूद पड़ीं। उन्होंने ये भी न सोचा कि इस इक़दाम के नतीजे में हज़ारों औरतों का सुहाग उजड़ जाएगा और हजारों बच्चे यतीमी की गोद में चले जाएंगें। उन्होंने नताइज की परवाह किये बग़ैर मुसलमानों को मुसलमानों की तलवारों के सामने लाकर खड़ा कर दिया।

---

1. बुख़ारी :– ज. 2 स. 101
2. अक़दुल फरीद :– ज. 2 स. 6

इस जंग में अतलाफ़े जान, क़त्लो ग़ारतगरी और तबाही व बरबादी की पूरी–पूरी ज़िम्मेदारी हज़रत आयशा पर आइद होती है, और उनके दौर में भी लोगों के दर्मियान यही तास्सुर था। चुनांचे एक मरतबा एक शख़्स ने (जिसके क़बीले के सैकड़ों आदमी इस जंग में मारे गए थे) हज़रत आयशा से पूछा कि ऐ उम्मुल मोमिनीन! आप उस औरत के बारे में क्या फ़रमाती हैं जिसने अपने बच्चे को मार डाला हो? कहा वो औरत दोज़ख में जाएगी। उस शख़्स ने फिर पूछा कि उस औरत के बारे में आपका का क्या ख़्याल है जिसने अपने तीस हज़ार जवांसाल बेटों को एक ही मक़ाम पर क़त्ल कर दिया हो?

ये सुनकर उम्मुल मोमिनीन भड़क उठीं और फरमाने लगीं कि ऐ खुदा उस दुशमन औरत को दोज़ख़ में न जाने देना।[1]

बहरहाल जमल का मारका हज़रत आयशा का कोई क़ाबिले क़द्र कारनामा नहीं था। उसे खुद उनके खानदान के अफ़राद भी बाइसे नांगवार समझते थे जैसा कि इस रवायत से ज़ाहिर है :–

हज़रत आयशा ने एक मौक़ै पर अपने भतीजे इब्ने अबी अक़ीक से किसी जरूरत के तहत खच्चर मांगा तो उन्होंने जवाब में क़ासिद से कहा कि उम्मुल मोमिनीन से कहना कि अभी तक तो हम "यौमेजमल" का धब्बा नहीं धो सके अब क्या "यौमेबग़ल" बरपा करने का इरादा है।"[2]

इब्ने अबी अक़ीक़ ने तंज़न ये बात कही थी मगर यौमेजमल के बाद "यौमेबग़ल" भी दुनिया वालों ने देख लिया, उस वक्त, जब इमामे हसन अलैहिस्सलाम का जसदे मुबाकरक दफ़्न की ग़रज़ से हुजरए रसूल (स) में लाया गया। और मरवान बिन हकम अपने हमराहियों के साथ दफ़्न में माने हुआ तो उस मौक़े पर आयशा भी ख़च्चर पर सवार होकर उसके साथ थीं जैसा कि मोतज़ेली का बयान है कि "हज़रत आयशा उस दिन खच्चर पर सवार हुईं जो मरवान और उसके साथियों

---

1. अक़दुल फरीद :– ज. 3 स. 108
2. अल अनसाबुल अशरफ :– ज. 1 स. 428

को उभार रहीं थीं।[1]

और मोहतरमा ने यहां तक उभारा कि सत्तर वीर इमाम के जनाजे में पेवस्त हो गये।

हज़रत आयशा क़िसासे ख़ूने उस्मान के नाम पर हज़रत अली के ख़िलाफ़ एक अज़ीम लशकर फ़रहाम करने पर इस वज्ह से क़ादिर हो गयीं कि लोगों के दिलों में उनका बड़ा एहतिराम था, बड़ी इज़्ज़तों तौक़ीर थी और लोग उनके मुतीओ फ़रमा बरदार थे।

हज़रत आयशा को सियासत में महारत और तक़रीर पर उबूर हासिल था। वो इन्तिहाई फ़सीहो बलीग़ गुफ़्तुगू फ़रमाती थीं जिसका नमूना वो जवाब है जो उन्होंने उम्मे सलमा को दिया था, जब उम्मे सलमा ने उन्हें हज़रत अली के ख़िलाफ़ खुरूज पर लानत मलामत की थी तो उन्होंने फ़रमाया था कि मैं बरसेर पैकार दो जमाअतों में सुल्ह कराने जा रहीं हूं। इसी तरह उनका वो फ़िक़रा जो उन्होंने बसरह में मुरीद के मक़ाम पर जब तल्हा व ज़ुबैर की तक़रीर के बाद लोगों में इख़्तिलाफ़ के मौक़े पर कहा था कि तुमने उसमान को उनकी तौबा करने के बाद मार डाला।

उम्मुल मोमिनीन से ये कौन पूछता कि आप तल्हा और ज़ुबैर के अलावा क़त्ले उस्मान का जिम्मेदार और कौन है? अगर आपने मुसलमानों को बरग़लाया भड़काया न होता या उनके क़त्ल का फ़त्वा न दिया होता तो ये नौबत ही क्यों आती?

फ़िर आपने अपने दिल का राज़ उगलते हुए फ़रमाया था कि ऐ मुसलमानों! तुमने इब्ने अबी तालिब की बैअत बग़ैर राय मश्वरे के ज़बरदस्ती और ग़स्बी तौर पवर कर ली है, इस ख़िलाफ़त को फिर शूरा पर रखो और शूरा के मिम्बरान वो हों जिन्हें उमर ने मुनतख़ब किया था लेकिन इस शूरा में उसे शामिल न करो जिसने क़त्ले उस्मान में हिस्सा लिया हो।

---

1. शरह इब्ने आबिल हदीद :– ज. 4 स. 17

आयशा की तक़रीरी गुफ़तुगू का ये हिस्सा उनके जबरदस्त सियासी तब्बुर का पता देता है। उनका मक़सद ये था कि हज़रत अली ख़िलाफ़त से महरूम हो जायं क्योंकि उस वक़्त मिम्बराने शूरा में सिर्फ़ चार अफ़राद यानी अली (अ) तल्हा, जुबैर और सअद इब्ने अबी विक़ास बाक़ी थे और हज़रत अली पर चूंकि उन्होंने क़त्ले उस्मान की तोहमत आइद की थी लिहाज़ा वो शूरा में दोबारह शरीक न किए जाते अब रह गये सअद तो उनको भी मोहतमिम कर देना उनके लिए बहुत आसान था लिहाज़ा उन दोनों के बाद सिर्फ़ तल्हा और जुबैर बाक़ी रह जाते हैं ओर उन्हीं में से कोई एक ख़लीफा हो जाता। और अगर बिलफ़र्ज़ तल्हा और जुबैर के साथ हज़रत अली को भी शूरा में शामिल होने की इजाज़त मिल भी जाती तो भी वो तन्हा एक तरफ़ होते और तल्हा व जुबैर 'एक तरफ़ जैसा कि उमर ने बाज़ाब्ता मुअय्यन कर दिया था कि जिधर ज्यादा अफ़राद होंगे उधर ही ख़िलाफ़त रहेगी। इसी बिना पर ख़िलाफ़त तल्हा और जुबैर में ही मुनहसिर होती और हज़रत अली के ख़िलाफ़ हंगामा बरपा करने की अस्ल ग़रज़ भी यही थी।

तल्हा और जुबैर का मौक़िफ़

जंगे जमल से वाबस्ता तल्हा व जुबैर का मौक़िफ़ भी हज़रत आयशा के मौक़िफ़ से कम नहीं था। उन लोगों ने बसरह पहुंचते ही क़िसासे उस्मान के नाम से क़त्ले आम शुरू कर दिया और बग़ैर ये सोचे कि कौन मुजरिम है और कौन नहीं सबको तलवार की बाढ़ पर रख लिया। हालांकि उन लोगों को ये भी हक़ नहीं पहुंचता था कि वो अहले बसरह को क़िसासन क़त्ल करते जैसा कि हम तहरीर कर चुके हैं कि ये हक़ मक़तूल के वारिसान या हुकूमत का है। तल्हा व जुबैर न तो ख़लीफ़ए वक़्त थे और न उस्मान के कराबतदार कि बरबिनाए कराबतदारी उन्हें ये हक़ हासिल होता। फ़िर हैरत और ताअज्जुब की बात तो ये है कि यही लोग बैअत शिकनी को जाइज़ और अपने इस ज़ाहिराना इक़दाम की दुरूस्त समझते हुए हज़रत को क़त्ले उस्मान का ज़िम्मेदार क़रार देते रहे थे। हालांकि ये उन्हें अच्छी तरह मालूम था कि क़त्ले

उस्मान के सिलसिले में हज़रत अली का मौकिफ़ क्या था और खुद उनका अपना तर्जे अमल क्या था।

जैसा कि अमीरूल मोमिनीन का इरशाद है कि :–

"खुदा की क़सम तल्हा और जुबैर और आयशा अच्छी तरह जानते हैं कि वो बातिल पर हैं और मैं हक़ पर हूं।"[1]

अगर ये लोग हक़ीक़त न अमीरूल मोमिनीन को क़त्ले उस्मान का ज़िम्मेदार समझ रहे थे तो उन्हें चाहिए था कि बैअत से पहले ही आवाज़ उठाते मगर न क़त्ल के मौक़े पर और न सानेहए क़त्ल और बैअत के दर्मियानी मुद्दत में इन लोगों ने कोई आवाज़ बलन्द की, न हज़रत अली पर कोई इल्ज़ाम आइद किया और न ही क़त्ल का जिम्मेदार ठहराया जैसा कि अक़दुल फ़रीद में है कि :–

"किसी ने हज़रत अली पर क़त्ले उस्मान की तोहमत नहीं लगायी यहां तक कि उनकी बैअत हुई और जब बैअत हो चुकी तो कुछ लोगों ने उन्हें मुतहम करना शुरू कर दिया।[2]

इन मुहतम करने वालों के सरग़ना यही तल्हा और जुबैर थे और इनकी ज़बाने भी उसी वक़्त खुलीं जब उनके मफ़ादात पर ज़र्ब लगी। और अमीरूल मोमिनीन (अ) ने उन्हें और कूफ़े बसरे की हुकूमत देने से इन्कार कर दिया।

अगर इन हज़रात की क़िसास तलबी में हमदर्दी और ख़ैर ख़्वाही का कोई ज़ज़्बा था तो उसे क़त्ल के मौक़े पर ज़ाहिर होना चाहिए था और हज़रत अली के हाथ पर बैअत करने के बजाय उनसे क़िसास का मुतालबा करना चाहिए था, मगर ये लोग उस वक़्त तक ख़ामोश रहे जब तक इन्हें इदारत की उम्मीद व तवक्को रहीं और जब उधर से मायूसी हुई तो क़िसास के लिए खड़े हो गयें ताकि इस क़िसास की आड़ में अपने इक़तिदार का रास्ता हमवार कर सकें।

वाक़िआत की रौशनी में बग़ैर तरदीद ये बात कही जा सकती है

---

1. इस्तीयाब :– ज. 2 स. 214
2. अक़दुल फ़रीद :– ज. 3 स. 93

कि इस शोरिशों हंगामा का मक़सद सिर्फ हुसूले इक़तिदार था। चुनांचे इन लोगों ने बैअत तोड़ कर दूसरों को बैअत शिकनी पर उभारा और हकीम बिन जबला से खुले अल्फ़ाज़ में कहा कि जब तक उस्मान बिन हुनैफ हज़रत अली की बैअत नहीं तोड़ेंगे रिहा नहीं किए जायेंगे। और खुद हज़रत अली के सामने भी इस अम्र का इज़हार किया कि वो उन्हें ख़िलाफ़त का अहल नहीं समझते। और सईद बिन आस से ये भी वाज़ह कर दिया कि हम उस्मान के बेटों में से किसी को ख़लीफ़ा नहीं बनाएगें बल्कि हम दोनों तल्हा व जुबैर में से जिसे लोग मुनतख़ब करेंगे वही ख़लीफ़ा होगा और यही वजह थी कि इन लोगों ने पहले क़त्ले उस्मान का बन्दोबस्त किया और उनके क़त्ल के बाद उम्मुल मोमिनीन हज़रत आयशा की ताईद के सहारे अमीरूल मोमिनीन से मुक़ाबले पर उतर आए।

बहरहाल वो उम्मुल मोमिन आयशा हों या तल्हा और जुबैर उनके इस इक़दाम का न कोई शरई जवाज़ है और न अख़लाक़ी। इनकी शख्सियतें कितनी ही हम सही मगर जुर्म बहरहाल जुर्म होता है ख़्वाह उसका मुर्तकिब कोई भी हो। इन लोगों ने एक ऐसा खूंरेज़ इक़दाम किया जिससे न तो इनकार की कोई गुंजाइश है और नहीं कुश्तो ख़ून की ज़िम्मेदारी से इन्हें बरी किया जा सकता है।

अब्दुल्लाह इब्ने जुबैर

अब्दुल्लाह, हज़रत आयशा की हक़ीकी बहन अस्मा बिन्ते अबूबकर के बेटे थे। आयशा इन्हें बेहद चाहती थीं। उनके दिल में अब्दुल्लाह की मोहब्बत ऐसे थी जैसे किसी माँ के दिल में इकलौते बेटे की होती है। इन्हीं अब्दुल्लाह के नाम पर आपकी कुन्नियत "उम्मे अब्दुल्लाह" पड़ी। हिशाम बिन उर्वा का बयान है कि मैंने आयशा को जैसी दुआ इब्ने जुबैर के हक़ में करते सुनी वैसी किसी दूसरी मख़लूक़ के लिए नहीं सुनी।

एक बार आयशा बीमार हुईं तो अब्दुल्लाह उन्हें देखने आए और डाढ़ें मार मार कर रोने लगे। आयशा ने उन्हें सर उठा के देखा तो बदहवास हो गयीं और खुद भी रोने लगीं और फ़रमाया कि ऐ अब्दुल्लाह

तुमसे बढ़कर दुनिया में मुझे काई भी अज़ीज़ नहीं।[1]

जंगे जमल में जब मालिके अशतर ने इन्हें "अधमुआ" करके डाल दिया और ये शदीद ज़ख़्मी हुए तो आयशा उस वक़्त तक के बेक़रारी के बिस्तर पर करवटें बदलती रहीं जब तक उन्हें अब्दुल्लाह के ज़िन्दा बच जाने की ख़बर नहीं लि गयी। तारीख़ों से पता चलता है कि हज़रत आयशा ने उस शख़्स के दस हज़ार दिरहम दिये जिसने उनके बच जाने की खुशखबरी सुनाई थीं।[2]

आयशा ने इन्हीं अब्दुल्लाह को अपने हुजरे में दफ़न करने की वसीयत भी की थी ये वही हुजरा था जिसमें फरजन्दे रसूल हज़रत इमामे हसन अलैहिस्सलाम को उन्होंने दफ़न न होने दिया था।[3]

अब्दुल्लाह की परवरिश और नशनुमा बचपन से ही अदावत और नफ़रत की आग़ोश में हुई। ये बनीहाशिम ख़ुसूसन आले मोहम्मद सल्लल्लाहो अलैहे व आलेही वसल्लम के सख़्त तरीन दुश्मन थे। इन्हीं का कारनामा था कि अपने बाप जुबैर को भी इन्होंने हज़रत अली का दुश्मन बना दिया।

अमीरूल मोमिनीन का इरशाद है :–

"जुबैर उस वक़्त तकहम अहलेबैत के बहीख़्वाह रहे जब तक कि उनका मनहूस बेटा अब्दुल्लाह जवान नहीं हुआ।"[4]

अब्दुल्लाह की आले मोहम्मद से अदावत इस इन्तिहा को पहुंची हुई थी कि उन्होंने अपने ज़मानए ख़िलाफ़त में चालीस जुम्अ (नमाज़ के मौक़े पर) पैग़म्बरे इस्लाम (स) पर दुरूद नहीं भोजा। उनका कहना था कि इससे रसूल (स) के घराने की नाक ऊंची होती है। एक दूसरी रवायत में है कि उन्होंने जुम्अ में दूरूद न भेजने की वज्ह ये बयान की

1,2.3. तहज़ीब इब्ने असाकर :– ज. 4 स. 400-402, शरह नहजुल बलागा :– ज 4 स. 442-443

4. मोरव्वेजुज़ ज़हब मसूऊदी बरहाशिया तारीखे कामिल :– स. 163, 164 ज. 5, याकूबी ज. 3 स. 807

कि रसूल के घर वाले दुरूद में अपना नाम सुनकर अपना सर बलन्द करेंगे।[1]

"इब्ने अब्बास से एक मरतबा अब्दुल्लाह इब्ने जुबैर ने कहा कि मैं चालीस बरस से अहलेबैत की अदावत अपने दिल में छिपाए हुए हूं। इन्हें हज़रत अली से ख़ुसूसी और पैदाइशी अदावत थी और ये अमीरूल मोमिनीन को बुरा भला कहा करते थे।"[2]

यही अब्दुल्लाह इब्ने जुबैर थे जिन्होंने इब्ने अब्बास, मोहम्मदे हनफ़िया और सत्तरह बनी हाशिम के अफ़राद को मक्के में महसूसर करके पुख़ता इरादा कर लिया था कि इन सभों को ज़िन्दा जला दें और इस मक़सद की तक़मील के लिए उनहोंने लकड़ियां भी इकट्ठा कर ली थी। जनाबे मुख़तार को जब ये मालूम हुआ तो उन्होंने चार हजार सिपाहियों का एक दस्ता रवाना किया जो इन्तिहाई तेजी से मन्ज़िले तय करता हुआ मक्के आया और उसने उन लोगों की जान बचायी।[3]

मगर अब्दुल्लाह इब्ने जुबैर के दिल में ख़ानवादए बनी हाशिम से दुश्मनी की जो आग भड़क रही थी वो बदस्तूर भड़कती रही, उन्होंने एक और कोशिश की कि मोहम्मदे हनफ़िया और उनके साथ तमाम बनी हाशिम को इकट्ठा करके उन्हें क़ैद कर दिया और क़ैदखाने में लकड़ियां भरवा दीं और उनमें आग लगा दी। इस मरतबा अबू अब्दुल्लाहे जदली ऐन वक़्त पर अपने हमराहियों के साथ मौक़े पर पहुंच गये और बड़ी कोशिश के बाद आग पर क़ाबू हासिल करके उन लोगों को रिहा कराया।[4]

यही अब्दुल्लाह इब्ने जुबैर थे जिन्होंने अपने बाप के ख़यालात को तबदील कराके उन्हें हज़रत अली का दुशमन बनाया और तल्हा वग़ैरह के साथ मिलकर आयशा को मजबूर किया कि वो अली से जंग

---

1. मोरव्वेजुज़ ज़हब मसूऊदी बरहाशिया तारीखे कामिल :– स. 163, 164 ज. 5, याकूबी ज. 3 स. 807
2. मोरव्वेजुज़ ज़हब :– ज. 5, स. 163-164, तारीखे याकूबी :– ज. 3 स. 877
3. तहज़ीब :– ज. 7, स. 8-9, मुरव्वेजुज. ज़हब :– ज. 5 स. 158
4. आग़ानी :– ज. 9, स. 16

करें। आयशा के दिल में अली की तरफ़ से अदावतों कुदूरत पहले ही से थी, इब्ने जुबैर की तहरीक को तरग़ीब ने उन्हें पूरी तरह अमादए क़िताल कर दिया।

मोवर्रेख़ीन का कहना है कि जब "हौअब" पर आयशा ने कुत्तों के भौंकने की आवाज़ सुनीं तो उन्हें पैग़म्बर की हदीस याद आ गयी और उन्होंने चाहा कि यहीं से लौट जाएं। इब्ने जुबैर ने उन्हें यक़ीन व इतमिनान दिलाया कि जिसने इस मक़ाम को "हौअब" बताया है वो झूठा है, और "हौअब" नहीं है और इस क़दर बजिद हुए कि आयशा से अपने झूठ को मनवा कर उन्हें पेशक़दमी के लिए मजबूर कर दिया।

इन तमाम हक़ाइक और शवाहिद की रौशनी में हम ये कह सकते हैं कि जंगे जमल के बानियान में अब्दुल्लाह इब्ने जुबैर को नज़र अन्दाज़न नहीं किया जा सकता।

हज़रत आयशा की निदामत

अल्लामा इब्ने असीर का बयान है कि एक दिन उम्मुल मोमिनीन हज़रत आयशा के सामने यौमे जमल का तज़किरह छिड़ा तो आयशा ने पूछा कि क्या इस दिन को लोग "यौमे जमल" के नाम से याद करते हैं? लोगों ने कहा "जी हां", उस पर आयशा ने कहा "काश उस रोज़ मैं भी पैग़म्बर की दूसरी बीवियों की तरह घर में बैठी रहती..... फ़िर फ़रमाया कि अगर रसूलल्लाह (स) के सुल्ब से अब्दुल्लाह इब्ने जुबैर अब्दुर रहमान बिन हारिस जैसे दस बेटे मेरे पैदा हो जाते तो मुझे इतनी ख़ुशी न होती जितनी घर में बैठकर होती।[1]

मसरूक से रवायत है कि आयशा जब क़ुर्आने मजीद की वो आयात पढ़ती जिसमें कहा गया है कि ऐ अज़्वाज़े पैग़म्बर (स) अपने घरों में बैठी रहना, तो इतना रोतीं कि उनकी चादर आसुंओं से तर हो जाती।[2]

---

1. असदुल ग़ाबा :– ज. 4, स. 284, तबक़ात इबने सअद :– ज. 5 स. 11
2. तबक़ात इबने सअद :– ज. 8, स. 56

"बलागातुन निसां" में है कि वाक़ेयए जमल के बाद आयशा हर वक़्त मुज़तरिबो परेशान रहने लगीं थी। लोगों ने पूछा कि आप तो उम्मुल मोमिनीन हैं, आप पर इस क़दर इज़तेराबी कैफ़ियत क्यों तारी रहती है? फ़रमाया "यौमेजमल" मेरे गले में अटका हुआ है। काश उस दिन से पहले ही मैं मर गयी होती या फिर उस दिन के लिए पैदा ही न हुई होती।[1]

हज़रत आयशा ने (अपनी किसा बीमारी के मौके पर) बतौरे वसीयत लोगों से कहा था कि रसूलल्लाह (स) के बाद मैंने "नये नये काम" किये हैं लिहाज़ा अगर मैं मर जाऊं तो मुझे रसूलल्लाह के पासदफ़न करना।

जहबी का कहना है कि "नये कामों" से आयशा की मुराद जंगे जमल में उनकी शिरकत है।[2]

अहदे मुआविया और आयशा

मुआविया इब्ने अबी सुफ़ियान और हज़रत आयशा के किर्दारो अमल में हैरत अंगेज़ हद तक हम आहंगी यकसानियत और मुशाबेहत नज़र आती है। जिस तरह मुआविया, अमलीरूल मोमिनीन हज़रत अली इबने अबी तालिब अलैहिस्सलाम के अज़ली व जानी दुश्मन थे उसी तरह आयशा हज़रत अली की अज़ली मुख़ालिफ़ और जानी दुश्मन थी।

जिस तरह अमीरूल मोमिनीन से मुआविया उम्र भर बरसरे पैकार रहे उसी तरह आयशा भी अली (अ) से लड़ती रहीं। जिस तरह मुआविया के दिल में अबू तुराब (अ) के ख़िलाफ़ अतिशे बुगज़ो इनाद भड़कती रही, उसी तरह आयशा के दिल में भी हमेशा अदावतों नफ़रत का ज्वालमुखी भड़कता रहा। जिस तरह शहादते अमीरूल मोमिनीन के बाद मुआविया ने हज़रत अली पर मिम्बर से तबर्रा और सबोशित्म

---

1. बलाखतुन निसा :– स. 8, तज़किरए ख्वासुल उम्मा
2. अलनबला :– ज. 2, स. 134, मुतराक हाकिम :– ज. 4 स. 6

कराके अपने दिल की भड़ास निकाली, उसी तरह आयशा ने हज़रत अली की ख़बर शहादत सुनकर शुक्र का सजदह किया और तरबिया अशआर पढ़े और ख़ुशी के गीत गाकर अपना दिल ठंडा किया।

ये वो मुशतरक ख़ुसूसियात थीं जिन्होंने मुआविया और आयशा के दर्मियानी क़ुरबतों में ऐसी हम अहंगी और नज़दीकी पैदा कर दी कि मुआविया और उसके हुक्काम व उम्माल की नज़र में आयशा की क़द्रो मन्ज़िलत अपनी मुअय्याना हुदूद को उबूर कर गयी। चुनांचे उसके अहद में जब तक आयशा का एहतिरामों इक़बाल बरक़रार रहा, हुकूमत की तरफ़ से उन पर ख़ुसूसी इनायत नवाजिशात और मराआत की बारिश होती रहती है। उर्वा बिन ज़ुबैर से रवायत है कि मुआविया हज़रत आयशा का बड़ा ख़्याल रखते थे। उन्होंने एक मौक़े पर इन्हें एक लाख दिरहम दिये।[1]

इब्ने कसीर ने अता से रवातय की है कि जब आयशा मक्के में थीं तो मुआविया ने उनके पास एक हंसली भेजी जिसकी कीमत एक लाख दिरहम थी।[2]

इब्ने सअद का बयान है कि आयशा ने एक शख़्स जिसका नाम "मुनक़दर बिन अब्दुल्लाह" था, से फरमाया कि अगर मेरे पास होते तो मैं तुम्हें दस हजार दिरहम दे देती। ये बात मुआविया को मालूम हुई तो उन्होंने उसी दिन शाम से पहले आयशा के पास एक बड़ी रक़म भेजी दी और आपने मुनक़दर को दस हजार दिरहम दिए जिससे उनहोंने एक कनीज़ खरीदी।[3]

इब्ने कसीर ने सअद बिन अज़ीज़ से रवायत की है कि मुआविया ने आयशा का अट्ठारह हज़ार अशरफ़ियों का क़र्ज़ा अदा किया।

इसी तरह बनी उमय्या के तमाम दौलतमन्द और सरमाया दार

---

1. इब्ने कसीर :– ज. 7, स. 36, मुसतदरक :– ज. 4 स. 13, हलीयतुल औलिया अबू नईम :– ज. 2, स. 47

2. इब्ने कसीर :– ज. 7, स. 127,

3. तबक़ात इब्ने सअद :– ज. 5, स. 18

हज़रत आयशा का ख़ास खयाल रखते थे और दिरहमो दीनार के साथ मुख़तलिफ़ क़िस्म के तहाएफ़ उनकी ख़िदमत में पेश किया करते थे।[1]

लेकिन ये सिलसिला ज्यादा दिनों तक क़ायम न रह सका। मुआविया और आयशा के दर्मियान इख़तिलाफ़ ने सर उठाया और इनायतों मराआत के वो आरज़ी बादल जो करीमाना अन्दाज़ में आयशा के सर पर बरसा करते थे मुख़ालिफ़त की हवा में चलते फ़िरते नज़र आए।

मुख़ालिफ़त की वज्ह ये बताई जाती है कि मुआविया ने जब ख़िलाफ़त को ख़ानदानी मीरास बनाने की जिद्दो जहद की तो उन्हें मुसलमानों की तरफ़ से शदीद मुख़ालिफ़त का सामना करना पड़ा यहां तक कि उनके खुसूसी असहाब और पास बैठने वाले भी ख़िलाफ़ हो गये।

चुनांचे आयशा ने भी मुख़ालिफ़ीन की मुकम्मल ताईद न हमनवाई की जिसके नतीजे में ताल्लुक़ात खराब हो गये। मगर तबरी का बयान है कि दोनों के दर्मियान पहली तलरवी सहाबीए रसूल (स) हजर के क़त्ल से पैदा हुई। लिखते हैं :–

हज़रत आयशाने हजर और उनके असहाब की सिफ़ारिश के साथ अब्दुर रहमान बिन हर्स बिन हिशाम को मुआविया के पास भेजा। अब्दुर रहमान उस वक़्त पहुंचे जब मुआविया हजर और उनके साथियों को मौत के घार उतार चुके थे। हज़रत आयशा इस हादसे पर बरहम, रंजीदह और मुलूल हुई। चुनांचे वो अक्सर कहा करती थी कि काश ऐसा न होता। अब हम किसी चीज़ को बदलना चाहते हैं तो पहले से ज़्यादा मुश्किलों में पड़ जाते हैं। खुदा की क़सम हम हजर के क़त्ल को ज़रूर मुतग़य्यर कर देते। जहां तक मैं समझती हूं हजर एक पक्के मुसलमान और हज व उमरह के बजा लाने वाले थे।"[2]

हज़रत आयशा का ये जुमला "जब हम किसी चीज़ को बदलना

---

1. मसनद अहमद :– ज. 6, स. 77, 459
2. तरबी :– ज. 6, स. 156

चाहते हैं तो पहले से ज़्यादा मुश्किल में पड़ जाते हैं" इन्तिहाई मानी खेज और ग़ौरतलब है इसका मतलब ये है कि आयशा ने उस्मानी हुकूमत का तख़्ता उलटना चाहा जिसके नतीजे में उस्मान क़त्ल हो गये। और उनके बाद मुसलमानों ने बिलइत्तिफ़ाक़ हज़रत अली को ख़लीफ़ा मुनतखब कर लिया। जिनकी ख़िलाफ़त आयशा के लिए सख़्त तरीन.... मुसीबत थी। फिर आपने हज़रत अली की ख़िलाफ़त को उलटना चाहा तो जंगे जमल में तल्हा मारे गये जिन्हें वो ख़लीफ़ा के रूप में देखना चाहती थीं, जुबैर क़त्ल हुए जो आपके हक़ीकी बहनोई थे। अब धड़का ये था कि मुआविया की हुकूमत का तख़्ता उलटने की कोशिश करू तो इसका नतीजा इससे कहीं ज्यादा बुरा निकलेगा। इसलिए उन्होंने अपने ग़मो गुस्से को ज़ब्त किया और ख़ामोश रहीं।

जब मुआविया यज़ीद (ल) की वैअत के सिलसिले में वारिदे मदीना हुए और उम्मुल मोमिनीन आयशा से उन्होंने मुलाक़ात की तो सबसे पहले जो गुफ़्तुगू मुआविया और आयशा के दर्मियान हुई वो हजर के क़त्ल के बारे में थी। इस गुफ़्तुगू ने तलख़ी के साथ यहां तक तूल खींचा कि मुआविया को कहना पड़ा कि :–

"मेरे और हजर के मामले को छोड़ दीजिए यहां तक कि रोज़े क़यामत हम दोनों अपने रब से मिलें।"[1]

ये गुफ़्तुगू तलख़ी और तरद्दुद की फ़ज़ा में तमाम हुई और यहीं से इख़्तिलाफ़ की ख़लीज़ और भी वसीअ से वसीअतर होती चली गयीं। फिर हज़रत आयशा के हक़ीकी भाई अब्दुर रहमान इब्ने अबीबकर का वाक़ेया पेश आया जिन्होंने यज़ीद (ल) की बैअत की मुख़ालिफ़त की और उसके फौरन बाद नागहानी तौर पर खत्म कर दिये गये। बुख़ारी का कहना है कि जब अब्दुर रहमान ने यजीद की बैअत की मुख़ालिफ़त की और मुआविया और यजीद को बुरा भला कहा तो मरवान ने उन्हें गिरफ़्तार करना चाहा मगर वो भाग कर आयशा के घर में घुस गये।[2]

कुछ मोवर्रेख़ीन का कहना है कि जब लोगों को यज़ीद की बैअत

---

1. इस्तेयाब :– ज. 1, स. 134, असदुल ग़ाबा :– ज. 1 स. 386
2. बुखारी :– ज. 3, स. 126

पर अमादह करने के लिए मरवान तक़रीर कर रहे थे तो अब्दुर रहमान बिन अबीबक्र उठा खड़े हुए और उन्होंने कहा कि तू भी झूठा है और मुआविया भी तुम लोग ख़िलाफ़त को हरकली हुकूमत बनाना चाहते हो कि एक हरकल मरने के बाद दूसरा हरकल उसका जानशीन हो जाय।[1]

ये वो इख़तिलाफ़ी मारका था जिसके नतीजे में हज़रत आयशा को अपने हक़ीकी भाई से हाथ धोना पड़ा और इख़तिलाक़ात के शोले कोहे आतिश फ़िशां बन गये। लेकिन चूंकि उम्मुल मोमिनीन में इतनी सकत और ताक़त नहीं रह गयी थी कि वो बनी उमय्या से जंग के लिए जंगलों और बियाबानों की ख़ाक छानती। लिहाज़ा उन्होंने ज़बानी जंग का सहारा लिया और बद्दुआओं के राकिटों से बनी उमय्या पर हमला आवर हो गयीं। अनजाम ये हुआ कि मुआविया की सफ़्फ़ाकी ने उन्हें मौत के मुंह में झोंक दिया।

हज़रत आयशा का इबरतनाक अंजाम

मुआविया की मुख़ालिफ़त हज़रत आयशा को रास न आ सकी और उन्हें इन्तिहाई इबरतनाक व अलमनाक अंजाम से दो चार होना पड़ा। साहिबे हबीबुस सैर तारीख़े हाफ़िज़े अबरू, रबीउल अबरार और कामिलुस सफ़ीना के मोतबर हवालों से रक़म तराज़ है कि जब मुआविया इब्ने अबी सुफियान अपने फ़ासिको फ़ाजिर बेटे की बैअत के लिए मदीने आया और हज़रत आयशा से मिला तो उन्होंने ख़ूब खरी–खरी सुनाई और उसके इस इक़दाम पर लानत मलामत की जिस पर मुआविया ने उम्मुल मोमिनीन का क़िस्सा ही तमाम करने का मनसूबा तैय्यार किया और अपनी क़याम गाह के सहन में एक गहरा कुंआ खुदवाया और उसके दहाने को ख़सो ख़ाशाक से मंढ़कर उस पर

1. तारीखे कामिल :– ज. 3 स. 199, इब्ने कसीर :– ज. 4 स. 236, और ज. 8 स. 89, इस्तेयाब व असदुल गाबा, असाबा हालाते हकम बिन आस

आबनूस की एक खूबसूरत कुर्सी रखवा दी। जब से सब कुछ हो चुका तो दूसरे दिन उसने उम्मुल मोमिनीन को निहायत अदबो एहतिराम से दावत पर मदऊ किया।

उम्मुल मोमिनीन तशरीफ़ लाई तो उनसे मुआविया ने अली कुर्सी पर बैठने की दरख़्वास्त की जो मोअज़्ज़मा के लिए मख़सूस की गयी थी। आयशा ने जैसे ही कदम बढ़ाया वैसे ही कुंए के अन्दर चली गयीं उम्मुल मोमिनीन के गिरते ही मुआविया ने उसमें चूना भरवा दिया। जब उम्मुल मोमिनीन ख़ाक़ हो गयीं तो उस कुंए को बन्द करा दिया गया और मक्के की तरफ़ रवाना हो गया।[1]

बाज़ मोवर्रेख़ीन ने ये भी लिखा है कि उम्मुल मोमिनीन आयशा का इन्तिक़ाल अलालत की वज्ह से हुआ और वो बक़ीअ में दफ़्न हुई। इस इख़्तिलाफ़ की वज्ह ये समझ में आती है कि बाद में मुआविया को इस संगीन जुर्म से बरी करने के लिए ये रवायत गढ़ी गयी है।

हज़रत आयशा के मुताल्लिक़ मुसलमानों के मुख़तलिफ़ नज़रियात

हज़रत आयशा के बारे में मुसलमानों के मुख़तलिफ़ फ़िर्क़ों के जो अक़ाइदों नज़रियात हैं उनकी हल्की से झलक गुज़शता सफ़हात में पेश की जा चुकी है। किसी ने उन्हें मासूम समझा, किसी ने उन्हें इमामे वक़्त के खिलाफ़ ख़ुरूज करने पर ख़ताकार, गुनाहगार और काफ़िर क़रार दिया। एक गिरोह आज तक कशमश में मुबतिला है जो उनके बारे में लबकुशाई ही नहीं करना चाहता और एक फ़िर्क़ा कहता है जो कुछ उम्मुल मोमिनीन ने किया वो भी दुरूस्त और जो कुछ अमीरूल मोमिनीन ने किया वे भी दुरूस्त, ये भी राहे सवाब पर वो भी रोह सवाब पर।

---

1. तारीखे हबीबुस सैर हालाते अज़वाजे रसूल :– ज. 1 जुज़. 3 स. 147, मतबुआ तेहरान 1271 हिजरी

इन मुख़तलिफ़ अक़ाइदों नज़रियात में जो तज़ाद और अफ़रातफ़री है उसे मामूली अक़्ल वाला इन्सान भी समझ सकता है। अगर इन तमाम अक़ाइदों नज़रियात की रौशनी में मुनसिफ़ाना नज़र से देखा जाय तो जितना आदिलाना नज़रिया शिआ फ़िर्के का है उतना किसी भी फ़िर्के का नहीं। शिओं ने आयशा के बारे में मियाना रवी इख़्तियार की है और उनका कहना है कि हज़रत आयशा मासूम न थीं। जिस तरह सहाबाए किराम में कुछ लोग ख़ाती और मुनाफ़िक़ थे और उनसे तारीख़ी गल्तियां सरज़द हुई उसी तरह उम्मुल मोमिनीन आयशा ने उस्मान के ख़िलाफ़ लोगों को उनके क़त्ल पर आमादह और बरअंगेख़्ता किया और जब वो क़त्ल हो गये तो इन्तिक़ाम के बहाने से हज़रत अली पर खुरूज करके बहुत बड़ी ख़ता की। परवर दिगारे आलम गुनाहों और ख़ताओं का बख़्शने वाला है अगर उम्मुल मोमिनीन ने सिदक़े दिल से तौबा की होगी तो उनका मामला अदालत से तय होगा। कमोबेश यही नज़रिया खुश अक़ीदा मुहक्केक़ीने अहले सुन्नत का भी है। वो तस्लीम करते हैं कि उम्मुल मोमिनीन से ख़ता सरज़द हो गयी। मगर वो इस ख़ता को ख़ताए इज़तिदादी से ताबीर करते हैं। ख़ताए इजतिहादी के बारे में उलमाए अहले सुन्नत के मफ़रूजात ये हैं कि कितनी ही बड़ी ख़ता क्यों न हो ख़ताए इजतिहादी के सबब से अजरो सवाब की हामिल है।

शिओं का नज़रिया ये है कि बुराइयों और दानिस्ता ख़ताओं में इजतिदाह की कोई गुंनजाइश नहीं है। हज़रत अली इमामे वक़्त और वाजिबुल अताअत थे। मुत्तफ़क़ा तौर पर उनकी बैअत हो चुकी थी और तमाम मुसलमानों ने उन्हें पेशवा तस्लीम कर लिया था। ऐसी सूरत में उनके ख़िलाफ़ खुरूज को बगावत तो कहा जा सकता है इजतिहाद, हर्गिज़ नहीं।

जहां तक आयशा के उम्मुल मोमिनीन होने का सवाल है उससे कोई शिआ इनकार नहीं करता। बेशक वो मुसलमानों की माँ हैं और मुसलमानों की माँ होने की हैसियत से उनका जो एहतिराह होना चाहिए उसमें शिआ फ़िर्क़ा दीगर मुसलमानों से पीछे नहीं है।

शिआ फ़िर्क़े का अक़ीदह है कि नबी की ज़ौजा क़ाफ़िर तो हो सकती है, बदचलन और बदकार नहीं। जैसा कि हज़रत नूह और लूत की बीवियां थी। इसलिए शिआ उम्मुल मोमिनीन को वो दर्जा नहीं देते जो हक़ीक़त से बेख़बर मुसलमान देते हैं।

अज़्वाजे नबी के बारे में किसी भी खुसूसी फ़ज़ीलतों मन्ज़िलत का तज़किरह क़ुर्आने मजीद में नहीं है अलावा इसके कि पैग़म्बर (स) की बीवियां तुम्हारी मांयें हैं।

इस आयत की शाने नुज़ूल के बारे में तमाम मुफ़स्सेरीन का मुत्तफ़क़ा फैसला है कि तल्हा इब्ने उबैदउल्लाह ने जो अबूबकर के क़रीबी और खानदानी रिश्तेदार थे अपनी इस राय का इज़हार किया था कि पैग़म्बर (स) रेहलत के बाद आयशा से निकाह कर लेंगे। ख़ुदा को तल्हा की ये जसारत नागवार हुई उसने आयत "उज़्वाजुहू उम्महातुम" के ज़रिये तल्हा और उनके जैसे दीगर अफ़राद की उमंगों को हमेशा के लिए ख़त्म कर दिया।

ज़ाहिर है कि इस आयत के ज़रिये अज़्वाजे रसूल की फ़ज़ीलत का इज़हार मक़सूद न था बल्कि कुछ लोगों की नफ़सानी ख़्वाहिशात को ख़ाक में मिलना था। इसकी ताईद उम्मुल मोमिनीन के उस जुमले से होती है कि जब किसी औरत ने उन्हें मां कहकर पुकारा तो उन्होंने कहा कि हम मर्दो की माँ हैं औरतों की नहीं। और इस दलील से इस बात की भी ताईद होती है कि अज़्वाजे पैग़म्बर मुसलमानों की मायें होने के बावजूद उनसे उसी तरह पर्दा करती थीं जिस तरह ना महरमों से किया जाता है। यही पर्दा ये बताता है कि वो हक़ीक़तन मुसलमानों की मायें नहीं थीं बल्कि उन्हें इसलिए माँ करार दिया गया था कि कोई शख़्स उनसे निकाह न कर सके।

बहराहाल इस आयात का मक़सद अज़्वाजे रसूल से निकाह की मुमानिअत के दाएरे में महदूद हैं इसके अलावा कोई फज़ीलत इस आयत से ज़ाहिर नहीं होती।

ख़ुदावन्दे आलम ने जाबजा क़ुर्आने मजीद में नबी की बीवियों का मुतनब्बे भी किया है। मसलन नूह और लूत की बीवियों को मिसाल पेश करते हुए परवर दिगार ने फ़रमाया कि ये दोनों हमारे दो नेक बन्दों की ज़ौजियत और तसर्रूफ़ में थीं और दोनों ने ख़यानत की तो उनके शौहर जो नबी थे ख़ुदा के हुक्म के सामने उनके कुछ काम न आए और उन्हें हुक्म दिया गया कि जहन्नम में दाखिल होने वाली औरतों के साथ तुम भी दाख़िल हो जाओ।

एक मक़ाम पर इरशाद हुआ कि ऐ नबी की बीवियों! तुममें जो नेक और अच्छे अमल करने वाली है उनके लिए ख़ुदा ने बहुत बड़ा अज्र मुक़र्रर किया है। और ऐ नबी की बीवियों अगर तुममें से किसी ने कोई नाजेबा हरकत की तो उसके लिए दुगना अज़ाब मुक़र्रर किया जाएगा।

ये तमाम आयतें सरीही तौर पर ये बताती हैं कि अज़्वाज मासूम न थीं उनसे ख़ताओं और ग़ल्तियों का हर वक्त इमकान था और ख़ताओं पर उनसे उसी तरह मुआख़िज़ा होगा जिस तरह आम औरतों और मर्दों से बल्कि इरशादें इलाही के मुताबिक़ वो और ज़्यादा क़ाबिले मुआख़िज़ह होगी।

और यही शिआ फ़िर्के का नज़रिया है।

एतिराफ़ाते आयशा

जादू वही है जो सर चढ़के बोले, इसमें शक नहीं कि हज़रत आयशा अमीरूल मोमिनीन से बुग्ज़ोहसद और अदावत रखती थी और अगर उनका बस चलता तो वो अबू तालिब के बेटे को अपने हाथों से ज़हर दे देतीं। इस अदावतो दुश्मनी के बावजूद उम्मुल मोमिनीन की ज़बान से अमीरूल मोमिनीन के जो फ़ज़ाइल बयान हुए वो यक़ीनन मोजिज़ाती हैं, और मुनासिब यही है कि वो कारेई के ईमानी और रूहानी ज़ौक़ की आसूदगी के लिए पेश कर दिये जायं।

(1) जाबिर से रवायत हे कि मैं एक दिन आयशा के पास गया और उनसे पूछा कि आप हज़रत अली के बारे में क्या फ़रमाती है? ये सुनकर वो कुछ देर के लिए सर झुकाए सोचती रही फिर एक शेर पढ़ा जिसका मतलब ये था कि जब सोना कसौटी पर कसा जाता है तो खरे खोटे को पहचान हो जाती है। जंगे जमल के बाद मुझे भी ख़रे खोटे का फ़र्क़ मालूम हो गया। अली हमारे दर्मियान यूं हैं जैसे कसौटी होती है।

(कन्जुल मदफून सियूती :– स. 236, इसतेयाबः– ज. 3 स. 328)

(2) हज़रत आयशा फ़रमाती हैं कि रसूलल्लाह (स) ने एक मरतबा फ़रमाया कि जो अली पर ख़ुरूज करेगा वो जहन्नमी होगा। ये सुनकर किसी ने आयशा से सवाल किया कि वो फिर आपने ख़ुरूज क्यों किया? आपने कहा, मैं इस हदीस को भूल गयी थी और अब तैबाव इस्तिग़फार करती हूं।

(यनाबीउल मोवद्दत : ज. 2 स. 71, बेरूत)

(3) हज़रत आयशा कहती हैं कि रसूलल्लाह (स) ने फ़रमाया कि सबक़त कुन्निदह सिर्फ़ तीन हैं। यूशा बिन नून जिन्होंने मूसा (अ) की तरफ़ सबक़त की। साहिबे यासीन जिसने ईसा (अ) की तरफ़ सबक़त की और अली इब्ने अबी तालिब जिन्होंने मेरी तरफ़ सबक़त की।

(सवाइके मुहर्रिका :– स. 123)

(4) किसी ने आयशा से पूछा कि रसूलल्लाह (स) सबसे ज़्यादा किसको दोस्त रखते थे? तो उन्होंने फ़रमाया कि अली को जी बड़े (रोज़ादार परहेज़गार थे और नमाज़ी)

(सहीह तिर्मिजी :– न. 2 स. 475 रियाज़ुन नज़रह :– जं. 2 स. 213)

(5) जमीअ इब्ने उमैर से रवायत हे कि मैं एक मरतबा अपनी मां के साथ आयशा के पास गया तो उनहोंने आयशा से हज़रत अली के

बारे में सवाल किया तो उम्मुल मोमिनीन ने जवाबदिया कि ख़ुदा की क़सम मैं किसी ऐसे मर्द को नहीं जानती जो पैग़म्बर (स) को अली से ज्यादा महबूब हो और न रूए ज़मीन न पर किसी औरत को जो फ़ात्मा (स) से ज्यादा पैग़म्बर को अज़ीज़ हो।

(मुसतदरक :– ज. 3 स. 154)

(6) हज़रत आयशा ने अमीरूल मोमिनीन हज़रत अली के बारे में फ़रमाया कि वो तमाम ख़लाइक में सबसे ज़्यादा सुन्नते नबी के जानने वाले हैं।

(ज़ख़ाइरूल उक़बा : स. 78)

(7) आयशा फ़रमाती हैं कि अली का जिक्र इबादत है।

(मुसतदरक :– ज. 2 स. 152)

(8) आयशा फ़रमाती है कि या अली आपके लिए ये बात काफ़ी है कि आपके चाहने वालों के लिए न मौत के वक़्त हसरत होगी, न क़ब्र में वहशत होगी, न क़यामत में दहशत होगी।

(यानबीउल मुवद्दत :– ज.2 स. 81)

(9) आयशा फ़रमाती हैं कि मैंने अबूबकर को देखा कि अली के चेहरे की तरफ़ बहुत देखा करते हैं तो मैंने उनसे पूछा कि ऐ बाबा जान आप अली के चेहरे को बहुत देखा करते हैं। उन्होंने जवाब दिया कि मैंने रसूलल्लाह (स) से फ़रमाते सुना कि अली के चेहरे पर नज़र करना इबादत है।

(रियाजुन नज़रह :– ज. 2 स. 291)

(10) उम्मुल मोमिनीन आयशा फ़रमाती हैं कि मैं एक दिन ख़िदमते सरूल में हाज़िर थी कि इतने में अली इब्ने अबी तालिब दाखिल हुए। उन्हें देखकर आं हज़रत ने फ़रमाया कि ये "सय्यदुल अरब" है।

(सवाइक़े मुहर्रिक़ा :– स० 20 क़ाहिरह, कनजुल आमल :– ज. 6 स.15 यनाबीउल मुवद्दत :– स. 248 हज्जुल मतालिब :– स. 20)

(11) अता से मरवी है कि मैंने हज़रत आयशा से पूछा कि अली के मुताल्लिक़ आपका क्या ख़्याल है? फ़रमाया वो ख़ैरूल बशर है और तमाम इन्सानों से बेहतरो अफ़ज़ल है जो इसमें शक करे वो काफ़िर है।

(यनाबीउल मुवददत 9 स. 246)

(12) हज़रत आयशा फ़रमाती है कि ख़ुदा ने कोई मख़लूक़ ऐसी पैदा नहीं की जो रसूल की नज़र में अली इब्ने अबा तालिब से ज़्यादा महबूब हो।

(किफ़ायतुत तालिब :– स. 184)

मज़कूरह अक़वाले आयशा, अकीदतमनदाने उम्मुल मोमिनीन के लिए लम्हए फ़िकरियां हैं।

अलफ़ाज़–मआनी

अ

अफ़शाए राज़–राज़ खुल जाना
अख़फ़ाए जुर्म–जुर्म का पोशीदा रखना
असरो रूसूख़–अहमियत और पहुंच
अतलाफ़–नुक़सान
अधमुआ–आधा मरा हुआ
अहद शिकनी–वादा तोड़ना

आ

आमुल हुज़्न–ग़म का साल
आऊज़ो बिल्लाहे मिन हाज़ल खुराफ़ात–इन खुराफ़ात से अल्लाह की पनाह चाहता हूं
आमादए पैकार–लड़ाई पर तैयार करना
आतिश फ़ेंशा–आग बरसाने वाला
आबनूस–एक पेड़ का नाम
आसूदगी–तसल्ली

इ

इब्ने अम–चचा का बेटा
इशकाल–शक की जमा
इर्तिकाई जिद्दो ज़हद–तरक्क़ी की राह में कोशिश
इशवह तराज़ी–नख़रे उठाना
इस्तेहज़ा–हंसी उड़ाना
इख़तिराअ–अपनी तबीअत से नई बात पैदा करना
इत्तिहाम–ऐब लगाना
इस्तेराहत–आराम
इश्तेबाह–गलतफहमी
इफ़तराक़ बैनल मुस्लिमीन – मुसलमानों में जुदाई पैदा करना
इश्तेआल–ग़ुस्सा
इस्तिग़फ़ार–तौबा करना
इस्तिफ़सार–पूछना
इबरतनाक–खौफ दिलाने वाले

ई

ईज़ारसानी–तकलीफ़ पहुंचाना

उ

उम्मे अबीबा–बाप की मां
उधेड़ बुन–सोचना विचारना

ए

एआनत–मदद
एतिराफ़ात–क़बूल करना

क

क़रीने क़यास–अन्दाज़े के मुताबिक़
कशकोले नेअमत–नेअमत क़ा प्याला
क़ेस्स–क़िस्से
क़बीदा ख़ातिर–रंजीदा दिल
करीमुन्नफ़सी–नेकदिली

ख

खुरूज–चढ़ाई
ख़ब्त–दीवानगी
ख़राबा–गोशा
ख़ैरूलबशर–इन्सानों के लिए सरापा नेकी
खुर्दसाली–बचपना

ग

गोसफ़न्द–भेड़, बकरी वग़ैरह
ग़िना–गाना बजाना
ग़ैर मुस्लिह–बग़ैर हथियार के

त

तलव्वुन–रंग बदलना
तौबतुन्नुसूह–ऐसी तौबा जिसके बाद गुनाह न हो
तख़फ़ीफ़–कमी
तसर्रूफ़–इस्तेमाल
तीनत–फ़ितरत
तख़ल्लुफ़–अलाहिदा होना
तरबीया अशआर–खुशी के शेअर
तरका–मरने वाले का छोड़ा हुआ माल

मसालेह–मसलिहत
मुश्तहरी–मशहूर
मुराआत–रिआयतें
महरूमुलइर्स–विरासत से महरूम
मुसतज़ाद–ज़्यादह
मुताज़ाद–मुख़तलिफ़
मुआफ़िक़त–तरफ़दारी
मुताहारिब–जंग करने वाला
मुबाह–जाइज़ (हलाल)
मुआनिदाना–दुशमनों की तरह
मुसहफ़–आसमानी किताब
मैमना–दायं बाज़ू की फ़ौज
मैसरह–बायं बाज़ू की फ़ौज
मेहारकश–ऊंट की रस्सी पकड़कर चलने वाला
मुहीब–भयानक
मूरूसी–विरासत में मिली हुई
मौक़िफ़–मक़सद
मज़कूरह–ज़िक्र किया हुआ
मशग़िला–आदतें
मुज़ख़रफ़–अपनी तरफ से ईजाद की हुई
मतऊन–बदनाम
महवे तकल्लुम–गुफ़तुगू में मसरूफ़
मबऊसब रिसालत–रिसालत के मनसब पर फ़ाइज़ होना
मुबाशरत–इन्टर कोर्स (ज़ौजा से ताअल्लुक़ क़ायम करना)
मुतनब्बह–मना करना
माज़ूली–बरतर्फ़ी
मरहूने मिन्नत–शुक्र गुज़ार
मसावी–बराबर
मदारिज–दर्जे
मुत्तसिल–मिले हुए

ज

ज़फ़ाफ–इन्टर कोर्स
जहरूस्सूरत–बदसूरत
जौलानी–तबीअत की रवानी
जमीअत–मजमा
ज़ुरूफ़–बरतन
ज़ियाफ़त–दावत
ज़ूद पशीमां–जल्द पशीमां होने वाला
ज़ुल अशीरा–वो वाक़िआ जिसमें रसूलुल्लाह (स) ने क़ुरैश को इस्लाम की दावत दी और अपने रसूल होनेका एलान किया
ज़दो कोब–मारना पीटना

ह

हरबा–चाल
हमनवा–आवाज़ से आवाज़ मिलाने वाला
हौदज़–ऊँट की पीठ पर बैठने का तख़ता
हरीफ़–दुशमन
हंसली–गले में पहनने का ज़ेवर
हुजरह–कमरा
हालते सौम–रोज़े की हालत में
हिसार–घेरा

र

राए आम्मा–अवाम की राय
रज़्मगाह–जंग का मौदान
रख़ना अंदाज़ी–ख़ल्ल डालना
रस्सा कशी–खींचा तानी

ल

लालाज़ार–बाग़
लग़्वियात–बेहूदा बातें

व

वस्फ़–सिफ़त

श

शवाहिद–गवाह
शोहरए आफ़ाक़–दुनिया भर में मशहूर
शोअबदा बाज़ी–जादूगरी
शोरिश अंगेज़ी–फ़साद करना
शारेहीन–वज़ाहत करने वाले
शहवानी–जिन्सी

तमसख़ुर–खिल्ली उड़ाना
तख़ातुब–गुफ़्तुगू का रूख़
तशहीर–मशहूर
तदफ़ीन–दफ़्न करना
तवस्सुल–वसीला
तख़रीबकारी–बरबाद करना
तसफ़िया–सुल्ह, सफ़ाई
तज़बज़ुब–कशमकश
तरदीद–रद करना
तुर्श–कड़वा

द

दामे फ़रेब–फ़रेब का जाल
दरीदह दहनी–बदज़बानी
दस्तावीज़–सुबूत
देरीना–क़दीम
दाएमुलमरीज़–हमेशा का बीमार
दफ़उल् वक़्ती–मौक़े पर टाल देना
दस्त पैमाई–हाथा पाई

न

नेज़ाअ–झगड़ा फ़साद
नुसूस–नस की जमा (यअनी क़ुर्आन से किया गया इस्तिदलाल)
नंगोआर–बदनामी
नअलैन–जूतियां
नाक़िस–खोटी
नागुफ़्ताबह–शर्मनाक

प

पुर आलाम–रंजो ग़म से भरा हुआ
पिन्हां–पोशीदा (छिपा हुआ)

फ़

फ़हमों इदराक–सोचने समझने की सलाहियत
फ़ासिक़–गुनहगार

स

सरिश्त–फ़ितरत
सई–कोशिश
सहाह सित्ता–अहले सुन्नत की मोतबर किताबे
सैय्यदते निसाईल आलमीन–दुनिया की तमाम औरतों की सरदार
सालिस–तीसरा
सुरअत–तेज़ी
सैक़ल–धार (सफ़ाई)
सरमाया–पूंजी
सरासीमा–हैरान
सदा–ब–सहरा–बेकार, बेसूद
सुल्ह जूई–अम्न पसन्दी
सानिहा–हादसा
सब्बोशितम–बुरा भला
सरगुज़श्त–हालात

ब

बाकरह–कुवांरी
बिल एलान–बलन्द आवाज़ से
बिल उमूम–आम तौर पर
बाक़ियातो आसार–मरने वाले का छोड़ा हुआ मालो असबाब
बैतुल माल–सरकारी ख़ाज़ाना
बरग़शता–मुंह मोड़ लेना
बसीरत–अक़लमन्दी
बेज़ाब्ता–तरीके से हटा हुआ
बैअत–शिकनी–बैअत तोड़ना
बरअंगेख़्ता–जोश दिलाना
बोहतान–ग़लत बात मनसूब करना
बसरोचश्म–सर आंखों पर

म

मजाज़ी–डुप्लीकेट
मुतलक़ा–तलाक़ पाई हुई
मकारमे अख़लाक़–ख़ूबियां (अच्छी आदतें)
मरक़ूम–लिखा हुआ
मबज़ूल–मुतवज्जे
मफ़रूज़ा–फ़र्ज़ी
मुतहक़िक़–साबित
मजहूल–न मालूम

किताबे हाज़ा के माखज़

कुर्आने मजीद
अहयाउल उलूम गेज़ाली
इज़ालतुल ख़िफ़ा
अलइसतेयाब
असदुल ग़ाबा
इजाबा
असाबा
अलमुआल्लिम तरजमा सहीह मुस्लिम
अनसाबुल अशराफ़
अख़बरारूत तवाल
अलख़ुलफ़ा हिस्सा दोम "मुअल्लिफ़"
अम्बला
उम्महातुल उम्मा
तफ़सीरे दुरे मन्सूर
तारीख़े इब्ने कसीर
तफ़सीरे कबीर
तारीख़े ख़मीस
तारीख़े तबरी
तारीख़े इस्लाम "ज़ाकिर हुसैन"
तज़किराए ख़वासुल उम्मा
तारीख़े अबुल फ़िदा
तहज़ीबुत तहज़ीब इबने असाकर
तलख़ीसुस सहाह
तरजमा बुख़ारी मिर्ज़ा हैरत
तारीख़े याकूबी
तारीख़े कामिल
तारीख़े इस्लाम ज़हबी
तहजीबुल अहकाम
तारीख़े उरूजो ज़वाल सल्तनते रूम
तफ़सीरे करबला "मुअल्लिफ़"
रियाज़ुन नज़रह
हसन–उल–मुहाज़रह
रफ़उल अजाजा तरजमा इब्ने माजा
जज़्बुल कुलूब
सहीह बुख़ारी
सहीह मुस्लिम
सहीह तिर्मिज़ी
मिश्कातुल मुसाबीह
मआलिमुल तनज़ील
मसनद इमाम अहमद बिन हम्बल
शरह इब्ने अबिल हदीद
सुन्न इब्ने माजा
कन्ज़ुल आमाल
मुसदरक हाकिम
मकातिलुत तालिबीन
मज़ाहिरे हक़
मवाहिब
मदारिजुन नुबुव्वत
आयशा (अब्बास महमूद उक़ाद)
आयशा बाद अज़ पैग़म्बर (कोर्ट फ्रेशलर आलमानी)
कशफ़ुल ग़म्मा
कौकेबे दुर्री
किताबुल आदब अबू दाऊद
तबक़ात इब्ने सअद
दुरे मन्सूर सियूती
ज़ख़ाइरूल उक़बा
सुन्ने निसई
सीरते हलबिया
उमदतुल क़ारी फ़ी शरह बुख़ारी
फ़तहुल बारी
सवाइक़े मुहर्रिक़ा